एक किरन

(भजन एवं गीत संग्रह)

पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल'

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस

डी-18, गली नं. 9, जगतपुरी विस्तार,
शाहदरा, दिल्ली-110093
मो.: 9839977133, 7007185134

मूल्य : 300.00

ISBN : 978-93-87932-00-0

प्रथम संस्करण : 2019

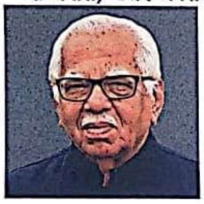
अक्षरान्वयन : कुमार कम्प्यूटर्स, अयोध्या #9839977133

मुद्रक : आशीष प्रिंटर्स, दिल्ली-110067.

समर्पण

मानस सुता किरन को
जो मेरे वर्त्म की
रश्मि ही नहीं
सादृश्य कृष्ण!

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



राज भवन
लखनऊ - 226 027

17 मई, 2019

सन्देश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि श्री पुरूषोत्तम मिश्र 'संकुल' द्वारा काव्य संग्रह 'एक किरन' का प्रकाशन किया जा रहा है।

कविताएं केवल साधन के रूप में नहीं बल्कि एक ऊर्जा के रूप में स्वीकार की जाती हैं। मुझे आशा है कि श्री मिश्र का यह काव्य संग्रह सुधी पाठकों के लिए मूल्यवान उपहार होगा। मेरी कामना है कि आप स्वस्थ रहें और निरन्तर सर्जनारत रहें।

मैं काव्य संग्रह 'एक किरन' के सफल प्रकाशन के लिये अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(राम नाईक)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ-226007

डॉ० (श्रीमती) प्रेम सुमन शर्मा
प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष

पत्रांक..........

दिनांक 24/01/2019



मंगलाशा

'एक किरन' श्री पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल' द्वारा रचित एक ऐसा भजन एवं गीत संग्रह है जिसमें रचनाकार ने कुल 213 छन्दों के रूप में अपनी भक्तिभावना को अभिव्यंजित किया है। भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में सनातन धर्म के प्रति आस्थावाद रखने वाले लेखक ने अपनी इस कृति में विभिन्न देवी-देवताओं के माहात्म्य का वर्णन करते हुए अपने हृदयस्थ उद्गारों को वाणी प्रदान की है। भक्तिमय गीतों और भजनों की शृंखला में रचनाकार ने नवधा भक्ति की एक महत्त्वपूर्ण पद्धति 'नामस्मरण' को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया है। संकलन का आरम्भ रचयिता द्वारा गायत्री वन्दना से किया गया है, तत्पश्चात् 'माँ शारदा का आह्वान' तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण, हनुमान, भवानी आदि का स्तुतिगान किया गया है। अपने आराध्य का अर्चन-वन्दन करते हुए सुधी रचनाकार द्वारा अनेक पर्यायवाची शब्दों का व्यवहार किया गया है, यथा— श्रीराम के लिए रामचन्द्र, रमापति, रघुनन्दन, रघुपति, रघुराई, रघुवर, रघुनन्दन, मायापति आदि। इसी प्रकार श्रीकृष्ण के लिए मुरारि, श्याम, घनश्याम, बिहारी, मुरलीधर, गोविन्द, गोपाल, नटवरनागर, देवकीनन्दन, मनमोहन, गिरधारी, हरि आदि तथा शिवजी के लिए शिवशंकर, आशुतोष, भोलेनाथ, गंगाधर, नीलकण्ठ, कैलाशपति, नंदीश्वर, गिरिजापति आदि। भजन संग्रह के मध्य उपर्युक्त प्रकार का सार्थक शब्दचयन रचयिता के शब्दज्ञान एवं प्रस्तुतिकौशल का परिचायक है। इसके साथ ही साथ विभिन्न छन्दों में जहाँ एक ओर तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है, वहीं दूसरी ओर मुकाम, गुलाम, इम्तहान, बेकरार, दिवाना, परवाना, मेहरबान जैसे हिन्दीतर शब्दों के संयोजन द्वारा प्रतिपाद्य विषय में सहजता का समावेश हो गया है।

'एक किरन' में रचनाकार द्वारा कतिपय स्थलों पर लीलागायन शैली का आश्रय ग्रहण किया गया है। प्रत्येक छन्द की अन्तिम पंक्ति में रचयिता ने अपने उपनाम 'संकुल' का प्रयोग करते हुए अपने अराध्य के प्रति श्रद्धा, विनम्रता तथा समर्पण का भाव प्रदर्शित करने के साथ ही उनसे अपने कल्याण की भी कामना की है। अपने समग्र रूप में यह संकलन मिश्र जी का एक स्तुत्य प्रयास है। भक्तिभाव से आपूरित यह कृति निस्संदेह अध्येताओं को भक्तिरस का आस्वादन कराने के साथ ही उनके लिए प्रेरणादायी भी सिद्ध होगी। इसी मंगलाशा के साथ मैं श्री पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल' को उनकी इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि उनकी लेखनी सर्वथा एक सुविचारित दिशा में अनवरत गतिशील बनी रहेगी।

शुभकामनाओं सहित

गणेश चतुर्थी, दिनांक 24 जनवरी, 2019

प्रेमसुमन 24/01/2019

(प्रो० प्रेम सुमन शर्मा)

'सुमनांजलि', 474A/229, ब्रह्मनगर, सीतापुर रोड, निकट-डालीगंज रेलवे क्रॉसिंग, लखनऊ-226020 (उ०प्र०)
मोबाइल : 9415001784 फोन : 0522-2743933 (आवास) ईमेल : premsumansharma@yahoo.in

डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय-अयोध्या

डॉ0 प्रभाकर मिश्र
समन्वयक
हिन्दी भाषा / साहित्य

सम्पर्क-
'साहित्य कुटीर'
बभनान-गोण्डा (उ0प्र0) 271313
दूर वाणी-9454091820

पत्राङ्क : प्रेमो/19

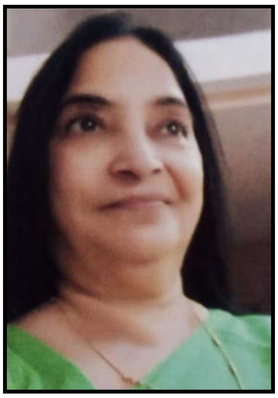
दिनाङ्क : 29/3/19

अभिमत

श्री पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल' एक सहृदय भाव-प्रवण कवि और अच्छे-भले मनुष्य हैं। इनमें त्याग और समर्पण का भाव भरा है। हिन्दी साहित्य में गीत और भजन की प्राचीन परम्परा बहुत समृद्ध है।

श्री संकुल इस शृंखला के एक समर्पित कवि-गीतकार हैं। इनके गीत और भजन में प्रेम और भक्ति का मणिकांचन योग है। अपने को अशेष भाव से उलीचकर ही जीवन चरितार्थ होता है। ये मान, बड़ाई, यश-धन-लोलुपता से परे एकान्त साधक हैं। इनका कवि-कर्म सराहनीय है। इसकी भाषा सहज-संवेद्य है।

हमें विश्वास है कि हिन्दी जगत आपकी इस भावपूर्ण रचना का समादर कर अपनी चेतना का संस्कार कर सकेगा। मैं श्री संकुल की काव्य-साधना को हार्दिक शुभाशंसाएँ देकर प्रीत हूँ।



शुभाकांक्षा

सहृदय व्यक्ति अपने परिवेश के प्रति सजग होकर जब चिन्तन-मनन करता है तो प्रतिक्रिया स्वरूप उसके विह्वल मन से निःसृत होने वाले उद्‌गार ही कविता के रूप में व्यक्त होते हैं। कविता कवि के अन्तर्मन का दर्पण होती है जिसमें उसके निर्मल भाव उजागर होते हैं। राग-विराग, दुःख-पीड़ा, संवेदना, प्रेम-सौन्दर्य आदि भाव-रूपों को वह अपनी कविताओं में व्यक्त करता है। उसकी रचना उन भावों के आत्ममंथन का परिणाम होती है जिसे उसने स्वयं देखा-भोगा-जिया होता है। अनुभव की चरमसीमा पर पहुँचकर वह अभिव्यक्ति के लिए छटपटाता है। उसकी यही आकुलता और छटपटाहट ही उसे औरों से अलग करती है। यही उसकी रचनात्मकता का वैशिष्ट्य है और उसके व्यक्तित्व की सार्थक पहचान भी। ऐसे उन्नत भाव-विचार शृंखला को वह रसात्मक-कलात्मक रूपाकार देकर शब्दार्थ एवं कला के विविध उपादानों द्वारा प्रभावी काव्यमयी अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

श्री पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल' जी अत्यन्त संवेदनशील जागरूक कवि हैं। कविता उनकी रगों में रची-बसी है। आपके अनेक श्रेष्ठ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। बहुत कुछ लिखकर समाज को उल्लसित मन से समर्पित करने की ललक उनमें स्पष्ट दिखाई देती है। इनके द्वारा रचित 'एक किरन' भजन एवं गीत-संग्रह है। कवि ने अपने गीत-संग्रह में जिस रचनाक्षमता, विचार सम्पन्नता और संवेदनशीलता का परिचय दिया है वह निःसन्देह प्रशंसनीय है। काव्य का आरम्भ गणपति वन्दना से हुआ है, जिसमें भावविह्वल भक्त के रूप में उन्होंने वाणीशक्ति, सद्‌भाव की भावपूर्ण याचना की है। भक्तिपरक गीतों-पदों में श्रीराम, श्रीकृष्ण, हनुमानजी, माता लक्ष्मी, श्रीराधा, देवी-सरस्वती, माँ दुर्गा आदि विविध देवी-देवताओं की स्तुति करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' भाव द्वारा सर्वत्र दुःखहरण की प्रार्थना की है।

अज्ञात प्रिय को समर्पित प्रणयगीतों में अपेक्षित परिपक्वता है। कहीं अकुलाहट है तो कहीं उदासी है, कहीं प्रिय से न मिल पाने की लाचारी है, विवशता है। इनमें प्रेम है, वियोग है, मिलन की कातर अभिलाषा है, टूटन है, बिखराव है और मीठी

कसक भी समायी है। लौकिक-प्रेम के माध्यम से ईश्वरत्व प्रेम-प्राप्ति का पावन मार्ग भी है। कवि के मानस-पटल पर उभरे प्रेम रंगों ने उनके गीतों में इन्द्रधनुषी सतरंगी आभा भर दी है। इतना ही नहीं उम्मीद की एक ऐसी किरण भी है जो जीवन-पथ के अन्धकार को मेटने के लिए आतुर है, रोशनी की एक चाह है जो सर्वत्र प्रकाश बनकर फैल जाना चाहती है। इन कविताओं की भाषा में प्रवाह है, लय है। गीतों में माधुर्य और शिल्प सौन्दर्य है, चिन्तन और विचारों में गम्भीरता के साथ सहजता है, अतः काव्य-प्रेमियों के लिए सहज-सरल है। कुल मिलाकर यह एक भाव- प्रधान, संवेदनशील श्रेष्ठ गीत-संग्रह है।

रचना-प्रकाशन के अवसर पर आपको बहुत-बहुत बधाई। आपको सफलता का नया आकाश मिले। ईश अनुग्रह और लोक सम्मान आप पाते रहें। आपकी लेखनी मंगलभाव के साथ अनवरत साहित्यसृजन में तत्पर रहे। आपका प्रत्येक स्वप्न पूर्ण हो। इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ–

डॉ. मधु खन्ना
एसो. प्रोफेसर
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजा मोहन गर्ल्स पी.जी. कॉलेज,
फैजाबाद, (उ.प्र.)

विषयानुक्रम

1.	पधारो हे गणपति महाराज	17
2.	हे अम्ब विमल बुद्धि कर दें	17
3.	माँ शारदे मति निर्मल कर दें	18
4.	बंदउँ चरन कमल शंकर के	18
5.	जय कमलापति शरण तुम्हारी	19
6.	बंदउँ रामचन्द्र पद पंकज	19
7.	जयति जयति जय रघुकुल नायक	20
8.	मैं सेवक तुम नाथ हमारे	20
9.	राम तुम्हीं हो नाथ हमारे	21
10.	रघुपति देव भक्ति वरदान	21
11.	दया दृष्टि कीजे रघुराई	22
12.	तुम्हारा सदा कृतज्ञ मैं राम	22
13.	दया करो मुझ पर रघुराई	23
14.	विचलित न हो प्रभु मेरा मन	23
15.	राम रखो जग मेरी आन	24
16.	करो रघुबर मेरा उद्धार	24
17.	रघुवर हरें अज्ञान हमारा	25
18.	मोह ने मुझको बहुत सताया	25
19.	बढ़े नित रघुबर पद अनुराग	26
20.	हे रघुनन्दन तुम्हें प्रणाम	26
21.	रघुवर अब मैं शरण तुम्हारी	27
22.	हे राम दया मुझ पर कीजे	27
23.	दीजिए रघुबर मुझको ज्ञान	28
24.	भुला देना मत मुझको राम	28
25.	रामकथा मंगल दुःखहारी	29
26.	रघुनन्दन अब होउ सहाई	29
27.	मेरा बल केवल राम का नाम	30
28.	समा लो अपने में मुझे राम	30
29.	राम से बढ़कर राम का नाम	31
30.	राघव सदा रखा मेरा मान	31
31.	राम भज राम भज पूर्ण हो जाओगे	32
32.	मिलेंगे राम न बिन अनुराग	32
33.	जय रघुनन्दन जय घनश्याम	33
34.	प्रेम में होती शक्ति अपार	33

35.	प्रेम में बंध जाते भगवान	34
36.	प्रेम का होता पावन रूप	34
37.	प्रेम की मुश्किल है अभिव्यक्ति	35
38.	प्रेम पर करें सदा विश्वास	35
39.	प्रेम की दिखती नहीं डगर	36
40.	प्रेम में छिपा हुआ संतोष	36
41.	प्रेम का होता एक ही रंग	37
42.	प्रेम है आत्मा का झंकार	37
43.	प्रेम का होता न व्यापार	38
44.	किया मैं तुमसे बौद्धिक नेह	38
45.	बाट जोह रही कृष्ण तुम्हारी	39
46.	नटखट श्याम दरश मोहि दीजे	39
47.	सब तजि कृष्ण चरन चित्त दीजे	40
48.	अब केवल आसरा तुम्हारा	40
49.	जय जय जय जय कृष्ण मुरारी	41
50.	नचाओ मत मुझको यूं श्याम	41
51.	श्याम अब पकड़ो मेरा हाथ	42
52.	मम मन विहरो कुंज विहारी	42
53.	मेरी लाज बचा लो मुरलीधर	43
54.	कृष्ण शरण में अपनी लीजे	43
55.	बना दो बिगड़े मेरे काम	44
56.	गोविन्द अपने चरणों की धूल मुझको दे दो	44
57.	लाज रखो मेरी गोपाल	45
58.	मेरा कोई अपना तो गोपाल	45
59.	बचा लो पत मेरा गोपीनाथ	46
60.	गोविन्द सुमिर ले मेरे मन	46
61.	गोविन्द तुम्हें अर्पित जीवन	47
62.	गोविन्द का सहारा गोविन्द का सहारा	47
63.	बना दो बिगड़ी मेरी श्याम	48
64.	हे कृष्णा हे मुरारी मुझ पर कृपा तुम्हारी	48
65.	कृष्ण के रंग में रंग गया मन	49
66.	गोविन्द तुम्ही हो मेरे बल	49
67.	चंचल चित्त प्रभु थिर कर दीजे	50
68.	सताओ न मुझको अब श्याम	50
69.	वश में मेरे न मेरा मन	51
70.	परीक्षा मत लेना गोपाल	51

71.	गोविन्द तुम्हें अर्पण जीवन	52
72.	कभी तो समझोगे गोपाल	52
73.	कृष्ण तुम्हीं प्रेरणा हमारी	53
74.	मनमोहन बाँकी छवि तुम्हार	53
75.	द्रवउगे कब मुझ पर गोपाल	54
76.	प्राणनाथ मनमोहन प्यारे	54
77.	कभी तो पिघलोगे घनश्याम	55
78.	ठाँव चरणों में दो घनश्याम	55
79.	कृष्ण बिन सूना वृन्दावन	56
80.	गोविन्द के कर सोहे मुरली	56
81.	तुम्हारा सदा ऋणी मैं श्याम	57
82.	दीजिए प्रभु मुझको वरदान	57
83.	गोविन्द मुक्त बंधन कर दो	58
84.	भक्त वत्सल प्रभु कृपानिधान	58
85.	सुनेंगे निश्चित कृष्ण पुकार	59
86.	भूलना कभी न मुझको श्याम	59
87.	तुम्हारे दरस को व्याकुल नयन	60
88.	तुम समान नहीं कोऊ हितकारी	60
89.	बना लो अपना मुझे गुलाम	61
90.	पूर्ण करें इच्छा कृपानिधान	61
91.	हरि हरिये अब कष्ट हमारा	62
92.	भज मन जगत् पिता शिवशंकर	62
93.	जय-जय शंकर कैलाशपति	63
94.	शिव सा उदार न कोई दानी	63
95.	बम भोले जय अवडर दानी	64
96.	जपो रे मन जय-जय भोलेनाथ	64
97.	शिवशंकर अब शरण तुम्हारी	65
99.	करो शिवशंकर मेरा कल्यान	65
99.	कपि को तुम समान उपकारी	66
100.	संकट हरो हे मरुत नंदन	66
101.	हरि हरिये अज्ञान हमारा	67
402.	हरो हरि तन मन की मम पीर	67
103.	लाज रखो मेरी कृपानिधान	68
104.	हार कर आया शरण तेरी	68
105.	प्रीति की बाँधी तुम से डोर	69
106.	भजन से मिलती मन को शान्ति	69

107.	मातृ सब जानत हिय की बात	70
108.	प्रभु बिन मेरा कौन सहाई	70
109.	कैसे करूँ तुम्हारी पूजा	71
110.	तुम में करुणा ममता बसती	71
111.	देवि मैं आया शरण तुम्हारे	72
112.	जब-जब होता हृदय आहत	72
113.	जय-जय-जय-जय गिरिराज सुता	73
114.	बंदउँ चरन जनक तनया के	73
115.	गोविन्द की तुम राधे शक्ति	74
116.	सत्य की होती हार नहीं	74
117.	मनवा करि ले हरि का सुमिरन	75
118.	आज आया पिय का संदेश	75
119.	कब आयेगी मिलन की बेला	76
120.	हृदय से आती जो पुकार	76
121.	तुम से होता जग में प्रकाश	77
122.	जीवन जैसे जेठ दुपहरिया	77
123.	आचरण भक्ति का आधार	78
124.	आज खुशी के आँसू आये	78
125.	तुम ही हो चित्तचोर हमारे	79
126.	तुम मेरे लिए सरस्वती हो	79
127.	तुम्हीं को समझा मैं गोपाल	80
128.	तुम्हें कृष्ण कहूँ या राम	80
129.	तुम मेरे लिए हो गंगाजल	81
130.	तुम से सम्बन्ध अटूट मेरा	81
131.	तुम किरन हो मेरे जीवन की	82
132.	तुम जो करती हो वही सही	82
133.	तुम मेरे मानस में बसती	83
134.	ओ अबोध चिर मीत हमारे	83
135.	बचा ली प्रभु ने मेरी लाज	84
136.	रवि की प्रथम किरन जब आई	84
137.	तुम से फैला जग में प्रकाश	85
138.	ऋतु वसंत तुम बिन दुःखदाई	85
139.	विरह की पीड़ा अकथनीय है	86
140.	तुम रवि हो मैं हूँ एक किरन	86
141.	प्रियतम को सद्‌बुद्धि आये	87
142.	आज दुखे फिर घाव हमारे	87

143. सुनो विनती मेरी चित्त चोर 88
144. अक्षुण्ण कर दें प्रभु मेरा प्रेम 88
145. दूर न अब चरणों से कीजे 89
146. नहिं भूलत तेरी मोहनी सूरत 89
147. रोशनी तुम मेरे जीवन की 90
148. तुम्हारा जीवन पर उपकार 90
149. तुम्हारी चरन धूल चंदन 91
150. दिया मेरे प्यार का जो उपहार 91
151. तुम सदा मेरे लिए वंदनीय 92
152. तुम सुनती नहीं व्यथा हमारी 92
153. तुम जो कहती वह बात सही 93
154. तुम से सुन्दर तस्वीर तेरी 93
155. तुम्हें भूल मैं कैसे जाऊँ 94
156. बनकर एक किरन तुम आई 94
157. जब-जब थक जाता मेरा मन 95
158. जगत् में तुम सा प्रिय नहीं और 95
159. जगत् में स्वारथ का व्यवहार 96
160. जगत् में व्यर्थ खोजना प्यार 96
161. आज मन हो गया बहुत उदास 97
162. प्रीति में होती हार न जीत 97
163. तुम्हीं हो सच्चे मेरे मीत 98
164. तुम से न शिकायत हो सकती 98
165. चाहे तुम जितना तड़पाओ 99
166. लगती तुम प्राणों से प्यारी 99
167. प्राणों से प्रिय मेरे प्रियतम 100
168. मेरे जीवन के पतवार हो तुम 100
169. कोशिश विफल हुई मेरी सारी 101
170. तुम पृथक न मुझसे हो सकती 101
171. आज आँख मेरी भर आयी 102
172. तुम इस प्रकार चित्त पर छाये 102
173. तुम याद मुझे आते हरदम 103
174. तुमसे सुन्दर कुछ और नहीं 103
175. तेरे लिए हृदय है बेकरार 104
176. तुम्हारा सदा करूँगा ध्यान 104
177. माँ जैसी है तेरी ममता 105
178. मैं मुक्त न तुमसे हो सकता 105

179. जब से तुम जीवन में आये 106
180. मत इतने निर्मम हो जाओ 106
181. भूल गया मान और अपमान 107
182. चुरा लिया तुमसे मैं तुमको 107
183. लगी जेठ की तुम पुरवाई 108
184. आज मेरे सपनों में आई 108
185. आज रात भर नींद न आई 109
186. आज स्वप्न में पड़ी दिखाई 109
187. प्रीति की परिणति है दुःखदाई 110
188. तुम्हारा करता मैं इंतजार 110
189. निकल नहीं हृदय से पाते 111
190. तुम प्राणों से भी हो प्यारे 111
191. देखा न कोई तुम सा सुन्दर 112
192. मुस्कान तेरी मेरा दर्शन 112
193. तुम्हारे सबसे सुन्दर बोल 113
194. तुमसे प्रिय मुझको नहीं प्रान 113
195. मिला तुमसे मुझको यह ज्ञान 114
196. वर्षा की आई ज्यों फुहार 114
197. तुम्हारी कभी न दूँगा दोष 115
198. मेरे जीवन की तुम ऋतुरानी 115
199. बिन हलचल के चित्र न बनता 116
200. अब तक न तुमको पहिचाना 116
201. बिन बरसे फिर उड़ गये बादल 117
202. हँसोगी सुन मेरा अज्ञान 117
203. देना तो पड़ेगा ही उत्तर 118
204. तेरा नाम लेकर गुजारा करेंगे 118
205. अब पीछे न कदम हटेंगे 119
206. चिंतन के केन्द्र बिन्दु हो तुम 119
207. तुम्हारा अति सुन्दर आचार 120
208. तेरी याद में जीवन जीता हूँ 120
209. हृदय में है तेरा निवास 121
210. तुम लगी मुझे इतनी सुन्दर 121
211. भाव संवेग से ऊपर प्यार 122
212. मेरे हृदय में वास तुम्हारा 122
213. इतना प्यार किया है तुमको 123

***

(1)

पधारो हे गणपति महाराज।
स्वीकार करिये प्रथम आमन्त्रण, पूर्ण करें मम काज॥
विघ्न हरण हे मंगल-मूरत, पार्वती के लाल।
शक्ति दीजिए मेरी वाणी को, कहे जो केवल साँच॥ पधारो......
मिला जगत् सम्मान उसे, जिस पर हुई कृपा तुम्हारी।
शब्दों को मेरे अर्थ दीजिये, ज्ञानियों के सरताज॥ पधारो.....
देवों में तुम वंदनीय हो, महिमा अमित तुम्हारी।
जिस पर रखा हाथ मिल गया,उसे ज्ञान का राज॥ पधारो.....
हे महेश के सुवन कृपा कर, एक किरन दे दीजे।
बिना कहे ही हे गणनायक लें हृदय की बाँच॥ पधारो....
सदा पवित्र भाव रहे मेरा सत् चिन्तर कर पाऊँ।
संकुल को कामना मुक्त करें रखें जग में लाज॥ पधारो.....

(2)

हे अम्ब विमल बुद्धि कर दें।
दे करके अपनी एक किरन जीवन मेरा निर्मल कर दें॥
माँ हंसवाहिनी गुण गाऊँ, मेरी वाणी का सामर्थ नहीं।
कर कृपा हमारी वाणी को, माता जग में अक्षुण्ण कर दें॥ हे.............
राग-द्वेष से ऊपर उठ करके मेरा चिन्तन सत् तक जाये।
संसार को कुछ देकर जाऊँ माता मुझको यह वर दे दें॥ हे.............
संसार की दें आसक्ति मिटा केवल कर्त्तव्य का बोध रहे।
स्वार्थी माया की नगरी में माँ लड़ने की शक्ति दे दें॥ हे............
जो घृणा करे मैं प्यार करूँ मन के विकार सब मिट जायें।
संकुल कविता बहे सुरसरि सी माँ भक्ति भाव वह उर भर दें॥ हे............

(3)

माँ शारदे मति निर्मल कर दें।
मन में जो घोर अन्धेरा है दे करके किरन जगमग कर दें॥
मद मोह क्रोध से भरी हुई सुलगती हमारी छाती है।
मैं महामूर्ख आज्ञानी हूँ हे देवि दया मुझ पर कर दें॥ माँ............
झंकार तुम्हारी वीणा से मेरे हृदय का तार बजे।
माँ दया दृष्टि मुझ पर करके वाणी को अर्थ युक्त कर दें॥ माँ............
वासना को छोंड़ नहीं पाया संसार में भटक रहा है मन।
नहीं ध्यान लगा पाया तुममें माँ क्षमा मेरे अवगुण कर दें॥ माँ............
संसार से हो करके निराश अब शरण आपके आया हूँ।
संकुल की लाज जग में रखें कर कृपा अम्ब मुझे यह वर दें॥ माँ............

(4)

बंदउँ चरन कमल शंकर के।
दे अद्वैत वेदान्त जगत् को आदि गुरु बन गये विश्व के॥
ऊँच नीच का भेद मिटा कर मानवता का पाठ पढ़ाया।
ब्रह्म जीव में भेद नहीं है वासी हम न कभी धरती के॥ बंदउँ.........
मान दिया जग में माता को नारी शक्ति को शीश झुकाया।
मान न रखा अभिमानी का बने प्रकाश आप दर्शन के॥ बंदउँ.........
तोड़े कई मिथक जीवन में चांडाल को गले लगाया।
ब्रह्म को देखा हर प्राणी में हैं शृंगार आप वसुधा के॥ बंदउँ.........
करहि कृपा मुझ पर भी स्वामी मिट जाये मन का अंधियारा।
संकुल के आदर्श गुरु हो दें आशीष चाह पूर्ण हो मन के॥ बंदउँ.........

(5)

जय कमलापति शरण तुम्हारी।
मंत्रों का मुझे ज्ञान नहीं है कैसे स्तुति करों तिहारी॥
हे लक्ष्मीपति जग प्रतिपालक कृपा सिन्धु भक्तन सुखदायक।
शंख चक्र गदा पद्म विराजे करते नाथ हो गरुण सवारी॥ जय...........
शेष क्षीर सागर में शैया दबा रही पद लक्ष्मी मैया।
नाभि से कमल-कमल पर ब्रह्मा करिये मुझ पर दया खरारी॥ जय...........
ॐ नमो जय जगत् नियंता गावत यश सुर नर मुनि संता।
काम क्रोध मद मोह छुड़ा दें दीजे नाथ मिटा अंधियारी॥ जय...........
जय अखलेश अनादि अगोचर तुममें लय होता सचराचर।
संकुल विनय जगत् के स्वामी काटें भव की त्रास हमारी॥ जय...........

(6)

बंदउँ रामचन्द्र पद पंकज।
राजीव नयन धरे धनु सायक नमत जिन्हें सुर मुनि शंकर अज॥
राम सरसि नहीं कोऊ जग माहीं छवि विलोक रवि काम लजाहीं।
जो यह छवि सपनेऊ विलोक ले तासु हृदय आवे आलोक पुंज॥ बंदउँ..........
बाल रूप राघव की झाँकी मन भावन अतिशय सुखकारी।
जेहि बीथी विचरहिं रघुराई निरखत छवि मुनि ध्यान ज्ञान तज॥ बंदउँ..........
अति उदार दीनन पर दाया दुष्ट निकंदन श्रुति पथ पालक।
इष्टदेव मम रघुकुल नायक करहिं कृपा उर में भर दें सच॥ बंदउँ..........
पितु भक्ति भ्रातृत्व नेह अरु जग सम्बन्धों की सच्चाई।
संकुल नियम धर्म से ऊपर राम नाम संशय भ्रम तजि भज॥ बंदउँ..........

(7)

जयति जयति जय रघुकुल नायक।
सिर धरि चरन कमल करों वन्दन दया करो मुझ पर रघुनायक॥
राम रमापति जय रघुनन्दन नाम सकल कलि कलुष निकन्दन।
त्रिविध ताप भव रोग नसावन जय रघुनन्दन जग प्रतिपालक॥ जयति........
सियाराम घट-घट के वासी अज अखंड अविगत अविनाशी।
कृपा बनी रहे सदा तुम्हारी हे अखलेश अमंगल नाशक॥ जयति........
श्याम गात छवि बरनि न जाई मुनि मन मधुप बसहि यहि माहीं।
दया करो मुझ पर रघुनन्दन त्राहि माम जय जय सुर नायक॥ जयति.........
रघुनन्दन अब शरण में लीजे दुःख दरिद्र दूर मम कीजे।
संकुल दास के तुम्हीं हो स्वामी तात मातृ गुरु सखा सहायक॥ जयति........

(8)

मैं सेवक तुम नाथ हमारे।
दया करो मुझ पर रघुनन्दन शरण में आया नाथ तुम्हारे॥
भक्त नहीं बन सका तुम्हारा माया वश है बुद्धि हमारी।
ज्ञान ध्यान न करी साधना अवगुण नाथ चित्त नहीं धारे॥ मैं सेवक....
भूल हुई है मुझसे स्वामी महामूर्ख मैं खल रत कामी।
विषय वस्य मेरी बुद्धि शुद्ध करें जीवन जीता तेरे सहारे॥ मैं सेवक....
तन मन व्यथित बहत हैं आँसू टूट गई दुनिया से आशा।
राघवेन्द्र अब शरण तिहारी भव सागर ने नाथ उबारे॥ मैं सेवक....
जो भी शरण तुम्हारी आया नहीं अहित उसका हो पाया।
संकुल पर अब कृपा कीजिए कष्ट मिटें तन मन के सारे॥ मैं सेवक ....

(9)

राम तुम्हीं हो नाथ हमारे।
जगह दीजिए अब चरणों में अवगुण प्रभु चित्त नहीं धारे॥
मातृ-पिता गुरु बन्धु तुम्हीं हो, जहँ तक जग में प्रीति सगाई।
मेरे एक तुम्हीं हो स्वामी जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे॥ राम..........
शूकर सम भर रहा उदर हूँ विषय वस्य है बुद्धि हमारी।
दया करो मुझ पर रघुनन्दन जग के हो गये व्यर्थ सहारे॥ राम ....
नहीं चुका सकता जीवन में सीतापति उपकार तुम्हारा।
केवल धन्यवाद कहता हूँ प्रभु मुझको न कभी बिसारे॥ राम ....
पतित पावन है नाम तुम्हारा संत शास्त्र मुनियों ने गाया।
संकुल राम जगत् के स्वामी भव सागर से मुझे उबारे॥ राम ....

(10)

रघुपति देव भक्ति वरदान।
मुक्त कामनाओं से कर दें भक्त वत्सल भगवान॥
हे रघुनायक जनसुखदायक विनती बारम्बार।
सुनकर आया कीर्ति तुम्हारी करें मेरा कल्यान॥ रघुपति...
सीता लखन सहित रघुनायक मम हिय करें निवास।
अस्त व्यस्त हो रही जिन्दगी हरि हर लो अज्ञान॥ रघुपति....
श्याम गात धरे धुन सायक श्री अरू लखन समेत।
भार उतार दिया भूतल का राम सा प्रभु नहीं आन॥ रघुपति......
अति उदार जो शरण में आया तापर कृपा करी।
संकुल आया द्वार तिहारे रखो जग में मान॥ रघुपति ....

(11)

दया दृष्टि कीजे रघुराई।
असहनीय हो गयी है पीड़ा करुणाकर अब सहा न जाई॥
पतित पावन है नाम तुम्हारा दे दो प्रभु अब मुझे सहारा।
तन घायल मन भी व्याकुल है करुणाकर अब होऊ सहाई॥ दया..........
जो भी आया द्वार तुम्हारे काम बन गये उसके सारे।
अब राघव दो मुझे अवलम्बन लीजे जग में लाज बचाई॥ दया ....
विषय वस्य है बुद्धि हमारी आया हूँ अब शरण तिहारी।
क्षमा करें अपराध हमारे प्रभु कर दें तन मन की सफाई॥ दया ....
संत शास्त्र ऋषि मुनि यश गावा राम नाम कर अमित प्रभावा।
संकुल टूटे जगत् सहारे हरि दीजे मुझे राह दिखाई॥ दया ......

(12)

तुम्हारा सदा कृतज्ञ मैं राम।
संशय शोक सभी भ्रम मिट गये मिला उर को विश्राम॥
बनी रही यूँ कृपा तुम्हारी विचलित न हो बुद्धि हमारी।
मेरे हृदय में सदा बसो तुम कभी न बिसरे नाम॥ तुम्हारा ...
रघुनन्दन मुझको दो शक्ति सदा करूँ मैं आपकी भक्ति।
दृढ़ विश्वास कभी न टूटे विनय सुनो सुख धाम॥ तुम्हारा ...
चाह हुई मेरी सब पूरी राघव मिटा दो बीच की दूरी।
मुक्त कामनाओं से करके कर दो मुझे निष्काम॥ तुम्हारा ...
बिन सेवा करते हो दया तुम समान नहीं कोऊ रघुराया।
संकुल शरण तुम्हारी रघुवर करता सतत प्रणाम॥ तुम्हारा ...

(13)

दया करो मुझ पर रघुराई।
व्यर्थ हो गये जगत् के नाते राघव लीजे लाज बचाई॥
नहीं जगत् में कुछ भी ऐसा जो अंतस् की प्यास मिटाये।
हार गया जीवन की बाजी रघुनन्दन अब होऊ सहाई॥ दया ....
चाह प्रेम की हुई न पूरी बना न कोई मीत हमारा।
मनु की है संतान स्वार्थी बात समझ में देर से आई॥ दया ....
जहँ तक जग में प्रीति सगाई मेरे एक तुम्हीं रघुराई।
जगह दीजिए निज चरणों में रघुपति लो अब दास बनाई॥ दया ....
प्रभु सर्वज्ञ छिपा क्या तुमसे फिर भी है प्रार्थना हमारी।
संकुल को रघुपति दो भक्ति जीवन से करो दूर बुराई॥ दया ....

(14)

विचलित न हो प्रभु मेरा मन।
हे इष्टदेव मुझे शक्ति वह दो अज्ञान का टूट जाय बंधन॥
हे राम रमापति दया करें इस दग्ध हृदय को शान्त करें।
अज्ञान में भटक रहे जन को प्रभु दे दें अपना अवलम्बन॥ विचलित....
व्यापी न कभी उसको माया रघुनायक जिसको अपनाया।
मुझ पतित का भी उद्धार करें मैं शरण तुम्हारी रघुनन्दन॥ विचलित....
शबरी गीध अजामिल तारा, मुक्त हुआ जो राम पुकारा।
कृपा करें मुझ पर रघुराई दे दें भक्ति कौसल्यानन्दन॥ विचलित....
नहीं जानता करना पूजा प्रभु तजि मेरा और नहीं दूजा।
संकुल नाथ आपका सेवक दें वह ज्ञान मिटे अपनापन॥ विचलित....

(15)

राम रखो जग मेरी आन।
धैर्य दीजिए दग्ध हृदय को जल बिन मीन ज्यों प्रान॥
मेरे मोह में शुचिता आये बने मुक्ति आधार।
तुमको ही देखूँ कण-कण में प्रभु दे मुझको ज्ञान॥ राम.........
बिना विचारे उतर गया मैं सागर के जल धार।
यदि रघुबीर दिशा नहीं दोगे मिलेगा जग अपमान॥ राम ....
बना लिया जो मन से रिश्ता करें उसे प्रभु पावन।
दाग लगे न मेरे जीवन में विनती कृपानिधान॥ राम..........
लिया सहारा जिसने हरि का हुआ उसका उद्धार।
राम शरण में संकुल अब है दो मुझको पहचान॥ राम ....

(16)

करो रघुबर मेरा उद्धार।
तात मातृ गुरु बन्धु भ्रात सब तुम्हीं प्राण आधार॥
ज्ञान भक्ति वैराग्य नहीं मन ममता रत खल कामी।
विषय वस्य भटकत शूकर सम अब लो मुझे उबार॥ करो.........
दीनबन्धु भक्तन हित कारण लिये चौबीस अवतार।
राम नाम लिया जिसने सहारा हो गया भव से पार॥ करो ......
बहुत देर भई चलते-चलते कोई न मीत मिला।
स्वारथ की सारी दुनिया है यहाँ नहीं है प्यार॥ करो.......
अब रघुपति तुम होऊ सहाई मिटा दो हिय का शूल।
संकुल भव की त्रास मिटा दो विनती बारम्बार॥ करो ....

(17)

रघुवर हरें अज्ञान हमारा।
कोई तत्व नहीं धरती पर अंतस् को दे सका सहारा॥
नहीं पकड़ में आती छाया चाहे कितना जोर लगाओ।
अस्तु व्यर्थ है इस दुनिया में अपना कोई बनाना प्यारा॥ रघुवर........
सुत वनिता तनया जग नाते केवल अपना स्वारथ साधे।
प्रेम की आश किया मैं जिससे उसने ही कर लिया किनारा॥ रघुवर.........
मोह न छूटा जग ने लूटा कोई नहीं कहें जिसे अपना।
अब हरि कृपा कीजिए मुझ पर मिट जाये मेरा भ्रम सारा॥ रघुवर.........
राम तुम्हीं हो कृष्ण तुम्हीं हो हे रघुनन्दन प्राण पियारे।
इष्टदेव अब शरण में संकुल दे भक्ति काटे दुःख सारा॥ रघुवर ......

(18)

मोह ने मुझको बहुत सताया।
हे रघुनन्दन दया करें अब दास शरण में आया॥
मायापति अब दया दृष्टि कर रोक ले अपनी माया।
कंकड़ पत्थर हाथ में लेकर अब तक अश्रु बहाया॥ मोह ने....
विषय के सुख से उलझे मनको राघव कीजे बाहर।
कैसे अपनी बात बताऊँ जग ने बहुत रुलाया॥ मोह ने......
मति भ्रम हुई मगर फिर भी हम लिया आपका नाम।
है मन को सन्तोष करेंगे प्रभु निश्चित दाया॥ मोह ने....
ठोकर खाकर अक्ल न आई अब जब हुआ लाचार।
संकुल द्वार तुम्हारे राघव कुछ भी नहीं लाया॥ मोह ने .....

(19)

बढ़े नित रघुबर पद अनुराग।
हे रघुनन्दन शरण तुम्हारी रहा भक्ति वर माँग॥
शक्ति दें मेरे मन को स्वामी महामूर्ख मैं खलरत कामी।
अपना हित चिन्तन कर पाऊँ दिखे जीवन का पराग॥ बढ़े नित...
जिसने सुमिरा नाम तुम्हारा उसका हो गया वारा न्यारा।
दुष्ट जनों को भी उद्धारा प्राणी अब तो जाग॥ बढ़े नित...
काम जगत् के करते जाऊँ पर मन रमा आप में पाऊँ।
कभी न बिसरे जानकी वल्लभ लगे न उर में दाग॥ बढ़े नित...
कण-कण में प्रभु रमने वाले जीवन मेरा तेरे हवाले।
संकुल की कामना मिटा दे, दे दें उर वैराग॥ बढ़े नित ...

(20)

हे रघुनन्दन तुम्हें प्रणाम।
दया करें मुझ पर जग पालक शरण तुम्हारी आया राम॥
नहीं उदार तुम सा जग कोई दया करे जो दीनों पर।
मुक्त उसे भी कर देते हो लेता है जो उल्टा नाम॥ हे रघुनन्दन...
किया सदा संतों की रक्षा मानवता के हे सिरमौर।
तुम सा कोई नहीं दूसरा अपने आप अकेले राम॥ हे रघुनन्दन...
आदर्शों पर चलने वाले न्याय नियम के प्रतिपालक।
कभी नहीं कर्तव्य को छोड़ा जीवन भर-सहे कष्ट तमाम॥ हे रघुनन्दन...
हे अखलेश्वर मानव बनकर दिया मानवता को संदेश।
संकुल करें आचरण परिष्कृत अन्त में आयेगा यही काम॥ हे रघुनन्दन...

(21)

रघुवर अब मैं शरण तुम्हारी।
टूट गयी दुनिया से आशा करिये प्रभु अब मदद हमारी॥
केवल मन को दुःख देते हैं दुनिया में ये रिश्ते नाते।
मगन सभी अपने सुख में हैं कौन सुनेगा बात हमारी॥ रघुवर ......
घायल किया निरन्तर मुझको जिनको मैंने समझा अपना।
आज हुआ इतना मन आहत भार हुआ जीवन का भारी॥ रघुवर ....
जाने कितने लगे हैं ठोकर फिर भी अक्ल न मुझको आई।
अब प्रभु शरण तुम्हारी आया जब घिर गई मुसीबत भारी॥ रघुवर ....
रक्षा करें मेरी रघुनन्दन मेरे अवगुण चित्त न धारे।
दया करें संकुल पर राघव छंट जाये मन की अंधियारी॥ रघुवर.......

(22)

हे राम दया मुझ पर कीजे।
सह जाता मुझसे दर्द नहीं अब मुक्त हमें जग से कीजे॥
कोई भी नहीं समझ सकता मेरे हृदय की पीड़ा को।
हो गया जख्म नासूर मेरा अब दवा हमारी कर दीजे॥ हे राम.......
पापों को मेरे क्षमा करे अब शरण तुम्हारी आया हूँ।
कोई भी नहीं हमारा है अपना अब मुझे बना लीजे॥ हे राम ....
कांटों से चुभे जग के रिश्ते घुट रही अब साँस हमारी है।
इस स्थित में डिग रहा धैर्य श्रीराम अब अवलम्बन दीजे॥ हे राम.......
जिस दिन से होश संभाला हूँ कोई भी नहीं मिला अपना।
संकुल अब आश तुम्हारी है चरणों में जगह मुझको दीजे॥ हे राम ......

(23)

दीजिए रघुबर मुझको ज्ञान।
व्यापे नहीं जगत् की माया रहे सत्य का भान॥
अंधकार में भटक रहा मन नहीं सूझत है पंथ।
दया करो मुझ पर रघुराई लूं अपने को जान॥ दीजिए......
बिना ज्ञान के बहुत कठिन है जग में सौदा करना।
काम अंत में क्या आयेगा हो कैसे पहचान॥ दीजिए.......
मैं मेरा यह यह कैसे छूटे दो उपाय बतलाय।
जब तक कृपा न आपकी होगी मिटेगा न अज्ञान॥ दीजिए.......
मैं मूरख पहचान न पाया अपना सहज स्वरूप।
दया करें मुझ पर रघुनन्दन राम कह निकले प्रान॥ दीजिए.......

(24)

भुला देना मत मुझको राम।
मेरा रिश्ता सिर्फ आपसे दुनिया से क्या काम॥
मैं अज्ञानी मोह में पड़कर लगा पकड़ने छाया।
मूल्य न देखा कभी वस्तु का सिर्फ चुकाया दाम॥ भुला देना....
रिश्ते नाते प्यार वफा का होता यहाँ व्यापार।
कोई रिश्ता नहीं जगत् में सत्य को सकता थाम॥ भुला देना....
हार कर आया शरण तुम्हारी मुझ पर दया करो।
मोह मिटा दो मेरे मन का दो उर को विश्राम॥ भुला देना...
अब तक मिला न कोई जग में बोले प्रेम से बोल।
संकुल राघव विनय हमारी बुला लो अपने धाम॥ भुला देना...

(25)

रामकथा मंगल दुःखहारी।
छोड़ जगत् की आश राम भज होगी पूर्ण कामना सारी॥
सुत वनिता जगत् के नाते सब ही अपना स्वारथ साधे।
यहाँ न कोई मीत किसी का संतों ने यह बात पुकारी॥ रामकथा.....
तज मद मोह शरण जो आया कृपा राम की उसने पाया।
दीनबन्धु करुणा सुखसागर जासु नाम हिये जपत पुरारी॥ रामकथा ....
जीवन का क्या छिपा रहस्य है रामचरित में छिपा मर्म है।
नर नारी के सब रिश्तों में मर्यादा सबसे है प्यारी॥ रामकथा ...
जीवन मूल्यों के रखवारे शबरी गीध अहल्या तारे।
नहीं बात कभी कहा दूबारा अस जग में न कोऊ तनधारी॥ रामकथा....
हे रघुनन्दन जन-सुखदायक प्रभु हमरो अब होऊ सहाई।
दया दृष्टि संकुल पर कीजे सुन लीजे प्रभु विनय हमारी॥ रामकथा.....

(26)

रघुनन्दन अब होउ सहाई।
मेरे प्रेम की लाज बचाओ दो उसके उर ज्योति जलाई॥
यद्यपि फंसा हुआ माया में पर मुझ पर है कृपा तुम्हारी।
इसीलिए तो प्रेम किया है जग करना न मेरी हंसाई॥ रघुनन्दन....
चुपके-चुपके मेरे उर में डाल दिया है जिसने डेरा।
उसके उर को करो आलोकित अपनी गलती पड़े दिखाई॥ रघुनन्दन.....
प्यार किया है मैंने उससे पर केवल बौद्धिक सुख चाहा।
शक्ति हृदय में ऐसी दे दो दूँ उसका अज्ञान मिटाई॥ रघुनन्दन.....
रोम-रोम में रमने वाले है अन्तिम आसरा तुम्हारा।
संकुल को एक किरन दीजिए जग पत रखो हे रघुराई॥ रघुनन्दन.....

(27)

मेरा बल केवल राम का नाम।
निर्बल के बल सिर्फ राम हैं औरन से क्या काम॥
जब-जब अन्धकार ने घेरा विकल हुए मम प्राण।
तब-तब राम शरण में आया मिला उर को विश्राम॥ मेरा.........
कैसे स्तुति करो तुम्हारी नहीं समर्थ मेरी वाणी।
क्षमा करें अपराध हमारे विनय सुनो सुखधाम॥ मेरा........
जो भी शरण राम के आया छोड़ कपट जंजाल।
उसका भाल किया जग ऊपर ऐसे प्रभु श्रीराम॥ मेरा ....
संशय शोक त्याग भ्रम भजिये जग प्रतिपालक राम।
संकुल अवश्य सुनेंगे राघव बनेंगे बिगड़े काम॥ मेरा..........

(28)

समा लो अपने में मुझे राम।
मिटा दीजिए मेरी वांछा सता न पाये काम॥
जाने कब से भटक रहा हूँ नहीं मंजिल का ज्ञान।
इसको छोड़ा उसको पकड़ा यही किया है काम॥ समा लो.....
अब तक मिटी न आशा तृष्णा पग-पग पर लगी घात।
कीचड़ से कीचड़ धोने में लगी उतरने शाम॥ समा लो.....
प्रतिपल बदल रही छाया से जीवन भर किया प्रेम।
प्रेम का मूल्य नहीं जग जाने सबको प्रिय है दाम॥ समा लो.....
मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ तुम मेरे आधार।
संकुल का पथ करो प्रकाशित स्वीकार करो प्रणाम॥ समा लो.....

(29)

राम से बढ़कर राम का नाम।
जब-जब मन अधीर हुआ है आया यही है काम॥
राम कृष्ण कह रामकृष्ण कह प्राणी कर प्रभु ध्यान।
हर कष्टों से बच जायेगा मिलेगा प्रभु का धाम॥ राम से.......
नारद की वीणा से निकला संत वाणी का सार।
सब शास्त्रों का अभिमत है यह छोड़ कपट भज राम॥ राम से.......
राम नाम ने किया जगत् में अगणित जन उद्धार।
सियाराम हृदय में जप कर करें जगत् में काम॥ राम से.......
संकुल जो चित्त में बस जाये वहीं पर देखो राम।
कण-कण में वह बसने वाला करेगा पूरण काम॥ राम से ......

(30)

राघव सदा रखा मेरा मान।
कोटि-कोटि धन्यवाद तुम्हारा दीनबन्धु भगवान॥
किया मेरी इच्छा सब पूरी अब प्रभु मिटा दो बीच की दूरी।
दर्शन दे दो अब नयनों को तृप्त हो जायें प्रान॥ राघव.........
राम का जिसने लिया सहारा जीवन में वह कभी न हारा।
जिस पर होगी कृपा तुम्हारी होगा जग मेहरबान॥ राघव......
दीनदयाल दया यूँ करिये पार भवसागर से मुझे करिये।
जीवन भार तुम्हारे ऊपर हरि अब हरो अज्ञान॥ राघव........
व्रत पूजा नहीं करी साधना नहीं हृदय से गयी कामना।
संकुल पर यूँ कृपा तुम्हारी को तुम सम दयावान॥ राघव.........

(31)

राम भज राम भज पूर्ण हो जाओगे।
मन में धीरज धरो आगे बढ़ते रहो लक्ष्य एक दिन सहज अपना पा जाओगे॥
शर्त प्रभु ने कभी भी लगाया नहीं आया जो पास उसको भगाया नहीं।
मन को निर्मल करो ध्यान प्रभु का धरो शान्ति का वास हृदय में पा जाओगे॥ राम.
अपने ऊपर भरोसा सदा कीजिए मान से यदि मिले तो जहर पीजिए।
दिल कभी भी किसी का नहीं तोड़िये राम कृपा सहज में ही पा जाओगे॥ राम...
सत्य के बल पर आगे बढ़ाये कदम आये तूफान भी तो न विचलित हो हम।
हार जीवन में होगी कभी भी नहीं क्योंकि रघुनाथ को साथ में पाओगे॥ राम...
जिन्दगी में करें सिर्फ सत्कर्म को इससे आगे बढ़े तो करें प्रेम को।
प्रेम संकुल अगर दे उर डेरा जमा राम के धाम में तब चले जाओगे॥ राम...

(32)

मिलेंगे राम न बिन अनुराग।
जप तप नियम ज्ञान से ऊपर होता प्रेम का मार्ग॥
नहीं तपस्या की केवट ने न किया व्रत उपवास।
प्रेम से बांधा नारायण को दिया कामना त्याग॥ मिलेंगे.......
ज्ञान ध्यान किया था शबरी में विवश हो गये राम।
प्रेम डोर ही यहाँ बंधी थी प्रभु न सकते भाग॥ मिलेंगे......
पक्षी कुल में जन्मा जटायू नहीं किया जप तप योग।
राघव की गोदी में आकर किया प्राण का त्याग॥ मिलेंगे....
जो भी बहता प्रेम धार में अपनापन मिट जाता।
संकुल बिना स्वयं को खोये प्रेम न सकता जाग॥ मिलेंगे........

(33)

जय रघुनन्दन जय घनश्याम।
भक्त वत्सल करुणा के सागर तुम्हीं कृष्ण हो तुम्हीं हो राम॥
दीनबन्धु संतन सुखदायक सीता लखन सहित रघुनायक।
जो भी आया शरण कपट तज पूर्ण भये सब काम॥ जय.........
राधा कृष्ण नाम अति सुन्दर जो सुमिरे यह मन के अंदर।
प्रेम हृदय में ऐसा उपजे भूल जाय निज नाम॥ जय.......
राम कृष्ण भज रामकृष्ण भज संशय शोक मोह भ्रम को तज।
निश्चित जीवन स्थिर होगा मिलेगा उर विश्राम॥ जय.......
राम का जिसने लिया सहारा एक बार भी कृष्ण पुकारा।
संकुल शास्त्र साक्ष्य है इसका दौड़ कर आये श्याम॥ जय..........

(34)

प्रेम में होती शक्ति अपार।
जीवन का यह केन्द्र बिन्दु है कर मत सोच विचार॥
प्रेम का बन्धन तोड़ न पाये पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्ण।
स्वयं यशोदा के लिए बंध गये धन्य हो गया प्यार॥ प्रेम..........
बलि के प्रेम नियम में बंधकर बने विष्णु द्वारपाल।
स्वयं लक्ष्मी बांध कर राखी किया हरि का उद्धार॥ प्रेम ....
गोपा का भी प्रेम का धागा सके बुद्ध न तोड़।
आना पड़ा तथागत को भी यशोधरा के द्वार॥ प्रेम.........
व्रजबाला के प्रेम में बंधकर हरि बने माखन चोर।
संकुल प्रेम करें पर सच्चा हो जायेगा निस्तार॥ प्रेम में.......

(35)

प्रेम में बंध जाते भगवान।
नहीं टूटता प्रेम का बंधन कहता निज अनुमान॥
जप तप जोग ज्ञान को तजकर पकड़े प्रेम की राह।
नहीं कामना मन में रखें करें प्रभु का ध्यान॥ प्रेम में.......
प्रेम का मोल-तोल नहीं होता यह वैभव अनमोल।
बन कर शलभ स्वयं हो अर्पित छोड़ मान अपमान॥ प्रेम में.......
प्रेम की धारा में बह करके निर्मल मन हो जाता।
हित उनका ही विशुद्ध साधना मिलता निर्मल ज्ञान॥ प्रेम में......
छल अरु कपट छोड़ कर चलिये प्रेम के पथ पर राही।
संकुल अवसि सुनेगें मोहन कहते संत पुरान॥ प्रेम में.......

(36)

प्रेम का होता पावन रूप।
कभी नहीं धीरज खोता है सर्दी हो या धूप॥
जीवन में सर्वोच्च मूल्य का करता है विस्तार।
प्रेम से बढ़कर नहीं धरा पर जो इसके अनुरूप॥ प्रेम का......
जिस हिय वास प्रेम का होता अन्धकार नहीं आता।
सहृदय प्राणी हो जाता दिखता सहज स्वरूप॥ प्रेम का.......
प्रेम स्वयं में ही प्रकाश है अस्तु कभी न छिपता।
प्रेम किया उसने ही जाना प्रभु का साकार रूप॥ प्रेम का.....
आश्रय जिसने लिया प्रेम का कभी नहीं गिर सकता।
संकुल प्रेम मुक्त कर देता रंक हो या हों भूप॥ प्रेम का......

(37)

प्रेम की मुश्किल है अभिव्यक्ति।
जिस उर में निवास यह करता कभी न होता रिक्त॥
निश्चित एक दिशा मिल जाती दूर तिमिर हो जाता।
बिना थके आगे बढ़ने की मिलती अद्‌भुत शक्ति॥ प्रेम की.....
प्रिय के लिए समर्पित जीवन अपनापन मिट जाता।
राग-द्वेष के द्वन्द्व से बुद्धि को मिल जाती मुक्ति॥ प्रेम की...
सदा बसी हृदय में रहती प्रिये की सुन्दर झांकी।
मिट जाती कामना हृदय से अभ्युदित होती भक्ति॥ प्रेम की.....
प्राण उलझ जाता प्रियतम में रहता देह न होश।
संकुल प्रेम चरम जब छूता तब मिल जाती मुक्ति॥ प्रेम की.......

(38)

प्रेम पर करें सदा विश्वास।
विचलित हों न दृश्य देखकर न हों कभी निराश॥
इस भूतल पर बहुत कठिन है किसी से करना प्रेम।
प्रेम अग्नि में जले बिना नहीं प्रिय आयेंगे पास॥ प्रेम पर.....
प्रेम धार में बहे बिना न उज्ज्वल उर हो सकता।
अस्तु प्रेम अनुभूति आत्मगत इसमें स्वयं प्रकाश॥ प्रेम पर......
सच्चा प्रेम अटल रहता है निश्चित यह सिद्धान्त।
अवश्य आत्मा झंकृत होगी हो न कभी उदास॥ प्रेम पर......
प्रेम का उत्तर अवश्य मिलेगा प्रेम ब्रह्म का रूप।
संकुल चला जो प्रेम के पथ पर प्रभु आये हैं पास॥ प्रेम पर.....

(39)

प्रेम की दिखती नहीं डगर।
ऊबड़ खाबड़ पथरीली है कभी इधर कभी उधर॥
इस पथ पर जो चलना चाहे खोले हृदय के नेत्र।
चर्म चक्षु इसे देख न पाती इन पर नहीं भरोसा कर॥ प्रेम की.....
प्रेम के पथ पर वह चल सकता रास्ता स्वयं बनाये।
कितनी भी आयें बाधायें पड़े न मगर असर॥ प्रेम की.....
छोड़ कामना दें हृदय से प्राण का तज दें मोह।
प्रियतम को सुख कैसे पहुँचे केवल ध्यान इधर॥ प्रेम की......
पाना खोना से ऊपर उठ छोड़ें मान अपमान।
संकुल प्रियतम अवश्य मिलेंगे कर संशय न तनिक भर॥ प्रेम की......

(40)

प्रेम में छिपा हुआ संतोष।
है मुझको विश्वास कभी नहीं दोगी मेरा दोष॥
भावों में बह करके तुमसे कर बैठा मैं नेह।
मान करो अपमान करो तुम नहीं करूंगा रोष॥ प्रेम में......
इस असार संसार में जब तक तेरा ऋणी रहूँगा।
तेरे नेह ने खोल दिया मेरे अन्तःकरण का कोष॥ प्रेम में.......
आगे बढ़कर पीछे मुड़ना देवि न मुझसे होगा।
हृदय चक्षु को सदा दिखोगी तुम सुन्दर निर्दोष॥ प्रेम में.......
संकुल तुमसे प्रेम किया है प्रेम सत्य का रूप।
जग में पतन न हुआ प्रेम का संतों का उद्घोष॥ प्रेम में........

(41)

प्रेम का होता एक ही रंग।
नहीं कामना कोई सताती प्राण प्रियतम के संग॥
तेरी स्मित से बड़ा दिखा न जगत् में कोई वैभव।
जिसे देखकर सूने मन में आती नई उमंग॥ प्रेम का.....
छाया मात्र मेरा जीवन है तुम इसके आधार।
दया दृष्टि अब करके मुझ पर कर दो अस्तित्व भंग॥ प्रेम का.....
तेरी खुशी ही मेरा सुख है नहीं कुछ और संसार।
तेरे ओप की किरन भर देती मन में मेरे उमंग॥ प्रेम का....
बौद्धिक सुख के लिए किया है मैंने तुमसे नेह।
संकुल कभी नहीं हो सकता जीवन में बदरंग॥ प्रेम का.....

(42)

प्रेम है आत्मा का झंकार।
साधन नहीं यह साध्य मूल्य का करता है विस्तार॥
केवल दरश मात्र से जिसकी मिट जाती है प्यास।
ऐसा अद्भुत रूप तुम्हारा है मेरे सरकार ॥ प्रेम है ....
प्रेम अग्नि में जलने की पीड़ा अकथनीय है।
पर इसमें जलकर ही दिखता क्या जीवन का सार॥ प्रेम है.......
प्रेम करेगा जो अपूर्ण है पूर्ण इसे क्या जाने।
वह जाने अथवा न जाने करते रहेंगे प्यार॥ प्रेम है.......
जिसकी सुन्दरता में खोकर याद परम प्रिय आयें।
संकुल उसका नश्वर जग से है निश्चित निस्तार॥ प्रेम है........

(43)

प्रेम का होता न व्यापार।
पाना खोना प्यार नहीं है है जीवन आधार॥
इंद्रिय आकर्षण से यद्यपि है इसकी शुरुआत।
मगर इसे जो विकसित कर ले महका दे संसार॥ प्रेम का.....
प्रेम किया तो पाने की कुछ नहीं कामना करना।
देह आवश्यकता प्रेम नहीं है अंतस् का श्रंगार॥ प्रेम का.....
जिसने प्रेम किया है जग में तपा मगर फिर निखरा।
भक्त को मूरत कभी न दिखती दिखते प्रभु साकार॥ प्रेम का......
प्रेम के पथ पर वह चल सकता झूठ कपट जो त्यागे।
संकुल कृपा करेंगे रघुबर कर देंगे उद्धार॥ प्रेम का......

(44)

किया मैं तुमसे बौद्धिक नेह।
उत्तार तुमको देना होगा इसमें न सन्देह॥
मेरे मन में बसी हुई हो निकल न एक पल पाती।
लगती जितनी वाणी सुन्दर लगी न उतनी देह॥ किया मैं...
बच्ची जैसी तुम लगती हो जब खिलखिला कर हंसती।
मानस पर आकर छा जाती ज्यों सावन का मेह॥ किया मैं...
कुछ पल के ही लिये सही पर तुम से बहुत है पाया।
बचपन फिर साकार हो गया भूल गया निज गेह॥ किया मैं....
तुममें उलझ गया मन मेरा लगी तुम इतनी प्यारी।
शुद्ध बुद्धि संकुल की हो गयी पाकर तेरा स्नेह॥ किया मैं.....

(45)

बाट जोह रही कृष्ण तुम्हारी।
आओगे बस इसी आश में टिकी हुई है साँस हमारी॥
मेरे चित्त को चुरा लिया है अब यूं मत तड़पाओ मोहन।
दया करो हे नटवर नागर डगमगात है नाव हमारी॥ बाट जोह...
अपना वचन तोड़ तुम देते फिर भी नहीं ह्दय से जाते।
कभी-कभी ऐसा लगता है शव सी है जिन्दगी हमारी॥ बाट जोह...
नींद न आवत अखियाँ बरसत देह का भार सहा न जाई।
अब कर कृपा दीजिए दर्शन खता क्षमा कीजिए हमारी॥ बाट जोह...
कृष्ण प्रेम में जो रम जाता अपनी सुध देता बिसराई।
संकुल विकल राधिका की गति समझेगा जो प्रेम पुजारी॥ बाट जोह...

(46)

नटखट श्याम दरश मोहि दीजे।
जन्म-जन्म से प्यासी अंखिइन को अब तो शीतल कर दीजे॥
योग ज्ञान अरु ध्यान न जानू जगत् फंसी है बुद्धि हमारी।
पशु से बदतर मेरा जीवन अब करि कृपा शरण में लीजे॥ नटखट.......
मेरे ह्दय में सदा बसो तुम बनो तुम्हीं प्रेरणा हमारी।
मैं क्या हूँ मुझको बतला दो ज्योतिर्मय ह्दय कर दीजे॥ नटखट.......
फंस करके तेरी माया में भी तुझसे न विलग हो पाऊँ।
साधन मेरा साध्य हो जाये विनय मेरी इतनी सुन लीजे॥ नटखट......
है जिसमें आसक्ति हमारी वह ही मेरी मुक्ति बन जाये।
संकुल पड़ा चरन में कान्हा अब चंचल चित्त को थिर कीजे॥ नटखट.......

(47)

सब तजि कृष्ण चरन चित्त दीजे।
निश्चित कृपा करेंगे मोहन मन में तनिक न संशय कीजे॥
हृदय में रख कर मोहन मूरत काम जगत् के करते रहिये।
सुख-दुःख हानि लाभ को तजकर सुयश कमा धरती पर लीजे॥ सब तजि....
झूठे हैं दुनिया के रिश्ते इन से प्रीति कभी न करिये।
सदा निभायें कर्तव्य अपना आश कभी न इनसे कीजे॥ सब तजि....
प्यास मिटाये जो आत्मा की मन से ध्यान उसी की करिये।
उसी सहारे से जीवन का मिला हुआ सारा विष पीजे॥ सब तजि....
इस शरीर में वही प्राण है फिर इस जग में किसको खोजें।
संकुल कृष्ण प्रेम में रम कर परमानन्द प्राप्त कर लीजे॥ सब तजि....

(48)

अब केवल आसरा तुम्हारा।
टूट गई दुनिया से आशा दिखता है न कहीं किनारा॥
नहीं शिकायत मुझे किसी से स्यात् मेरे कर्मों का फल है।
होश संभाला हूँ जिस दिन से गैर नहीं अपनो ने मारा॥ अब केवल...
कृष्ण तुम्हारी स्मृति करके जीवन का विष पी लेता हूँ।
सहते घात हृदय जर्जर है अब बहती न अश्रु की धारा॥ अब केवल...
अंधकार में खो जाती है कभी-कभी चेतना हमारी।
किसको अपनी व्यथा सुनायें कोई भी तो नहीं हमारा॥ अब केवल...
असहनीय पीड़ा को सहते कभी-कभी धीरज खो जाता।
चक्रवात में फंसा हुआ हूँ कांप रहा है तन मन सारा॥ अब केवल...
अब तो शरण तुम्हारे मोहन दुष्ट-जनों से मुझे उबारो।
दया करो संकुल पर कान्हा दिखा रूप दो अपना न्यारा॥ अब केवल...

(49)

जय जय जय जय कृष्ण मुरारी।
किया सदा भक्तों की रक्षा महिमा अपरंपार तुम्हारी॥
अंधकार में मन घिर जाये राह नजर अपनी न आये।
तब कर ध्यान कृष्ण पद पंकज निश्चित आयेगी उजियारी॥ जय जय.....
हृदय से जिसने कृष्ण पुकारा कष्ट मिट गया उसका सारा।
प्राणी छोड़ जगत् से आशा भज गोवर्धन धारी॥ जय जय ...
कृष्ण प्रेम में जो रम जाये जन्म सफल उसका हो जाये।
दुःख दरिद्र निकट न आये श्रुति यह बात पुकारी॥ जय जय ....
कृष्ण कृपा जो चाहे पाना सम्मुख होगा उसको आना।
अपनी कमी न कभी छिपाये करेंगे प्रभु सुखारी॥ जय जय ...
संत शास्त्र अस कहेऊ बखानी कृष्ण नाम की अमित कहानी।
संकुल पर अब कृपा कीजिए काटो कष्ट जो भारी॥ जय जय ...

(50)

नचाओ मत मुझको यूं श्याम।
शुद्धि बुद्धि कीजिए हमारी उर को दो विश्राम॥
मन मेरा तुम में खो जाये और नजर कुछ भी न आये।
मेरा अपनापन मिट जाये प्रार्थना आठों याम॥ नचाओ....
चाह आखिरी कर दो पूरी मिट जाये अब बीच की दूरी।
अपने गले लगाकर मोहन छुड़ा दो जग के काम॥ नचाओ.....
बहुत दिनों से भटक रहा हूँ विकल आत्मा प्यासी।
प्यास मिटा दो मेरे जीवन की विनय सुनो घनश्याम॥ नचाओ.....
भावो के मेरे सृजनहार हो जीवन के आधार।
अब माया से मुझे बचाओ कृष्ण और बलराम॥ नचाओ.....
कर्म हमारा ही पूजा है तुम तजि और न दूजा।
अब संकुल को मुक्त कीजिए बुला लो अपने धाम॥ नचाओ.....

(51)

श्याम अब पकड़ो मेरा हाथ।
छूट गये दुनिया के रिश्ते तुम न करो अनाथ॥
बहुत दिनों से चलते-चलते अब थक गया शरीर।
छटपटात उर चाह रहा हूँ दरस दो दीनानाथ॥ श्याम ....
जाने कितनी घात लगी पर मोह छोड़ नहीं पाया।
मोह बने न मेरा बंधन दया करें यदुनाथ॥ श्याम ....
कृष्ण तुम्हारे जैसा सुन्दर मेरा मन हो जाये।
कुछ भी हो जाये जीवन में छूटे न प्रभु साथ॥ श्याम .....
इसी आश में टिका है जीवन प्रभु निश्चित आओगे।
जन्म सफल संकुल तब होगा हो जाऊँगा सनाथ॥ श्याम ....

(52)

मम मन विहरो कुंज विहारी।
अपने रंग में ऐसे रंग लो भूल जाय यह दुनिया सारी॥
सदा बसी रहे मन में मूरत कभी न बिसरे श्यामल सूरत।
खाते पीते सोते जगते सदा दिखे तस्वीर तुम्हारी॥ मम मन.....
नहीं कामना कोई सताये मेरा मन मुझसे खो जाये।
हर साँसों में नाम तुम्हारा रसना लेती रहे हमारी॥ मम मन.....
जो छवि लखि ब्रजवनिता मोही मीरा रानी हुई दीवानी।
वह छवि मुझे दिखाकर मोहन प्यास मिटा दो मन की सारी॥ मम मन......
राधा के नेत्रों के तारे उद्धव के तुम अतिशय प्यारे।
ज्ञान ध्यान को भी तज करके बने कृष्ण तुम प्रेम पुजारी॥ मम मन.....
सदा लाज भक्तों की रखी जो भी आया शरण तुम्हारी।
संकुल का वर्त्म करो प्रकाशित हे जगपालक कृष्ण मुरारी॥ मम मन.....

(53)

मेरी लाज बचा लो मुरलीधर।
मन भटक न पाये दुनिया में वह शक्ति हमें दो करुणाकर॥
दो शक्ति हमारे शब्दों को अक्षर-अक्षर जग हो जाये।
उर में जो घोर अंधेरा है आ जाय किरन उसके अंदर॥ मेरी लाज....
कथनी करनी में भेद न हो सत्पथ का मुझको ज्ञान रहे।
हे दयासिन्धु मेरे जीवन में आचरण रहे सबसे ऊपर॥ मेरी लाज...
अनहित न किसी का हो मुझसे चेतना रहे इतनी निर्मल।
कुछ दे करके जग को जाऊँ प्रभु सेवक को दे दें यह वर॥ मेरी लाज....
विचलित न कभी हो मन मेरा चाहे जो परिस्थिति आ जाये।
संकुल न गिरे कभी जीवन में गोविन्द शीश पर रखें कर॥ मेरी लाज....

(54)

कृष्ण शरण में अपनी लीजे।
नहीं वासना मुझे सताये प्रेम मेरा अक्षुण्ण कर दीजे॥
मेरे हृदय में बसी हुई जो नहीं निकल पाती है मूरत।
उस छवि में मैं देखूं तुमको दृष्टि मेरी ऐसी कर दीजे॥ कृष्ण.........
मेरे मोह को पावन कर दें पतन पवित्र भाव नहीं करता।
अपनी एक किरन दे करके जन्म सफल मेरा कर दीजे॥ कृष्ण.........
प्रभु सर्वज्ञ जानते सब हैं दया दृष्टि मुझ पर प्रभु करिये।
जिसमें उलझे प्राण हमारे सदा सुखी उसको प्रभु कीजे॥ कृष्ण.........
प्रेम का मर्म समझने वाले प्रेम मेरा निर्मल हो जाये।
संकुल की साधना प्रेम है प्रभु स्वीकार इसे कर लीजे॥ कृष्ण.........

(55)

बना दो बिगड़े मेरे काम।
हार कर आया शरण तुम्हारी दया करो घनश्याम॥
सही गलत का ज्ञान नहीं है मैं मूरख खल कामी।
लाज जगत् में मेरी बचायें करिये पूरण काम॥ बना दो.....
घाव हुआ है मेरे हृदय में मन अतिशय है व्याकुल।
धीरज दे प्रभु मेरे हृदय को काटे कष्ट तमाम॥ बना दो......
गोविन्द तुम तो जान रहे हो मेरे उर का हाल।
उसके उर तक पहुंचा दें प्रभु मेरा भी पैगाम॥ बना दो.....
जो भी शरण कपट तज आया मन वांछित फल पाया।
संकुल को एक किरन दीजिए आये उर विश्राम॥ बना दो......

(56)

गोविन्द अपने चरणों की धूल मुझको दे दो।
युग-युग से प्यासी आत्मा को तृप्त अब तो कर दो॥
इस स्वार्थी जगत् में मेरी साँस घुट रही है।
जीना हुआ है दूभर करुणा की वर्षा कर दो॥ गोविन्द.....
कोई नहीं जगत् में समझे जो मेरी पीड़ा।
तुम जानते हो सर्वज्ञ अवगुण क्षमा मेरे कर दो॥ गोविन्द.......
मेरा मुकाम क्या है अब तक समझ न पाया।
अब नाथ करके कृपा निश्चित मुकाम कर दो॥ गोविन्द.....
मानस में छाये तम को गोविन्द अब मिटाओ।
संकुल को दिखाकर पथ उस पार नाथ कर दो॥ गोविन्द......

(57)

लाज रखो मेरी गोपाल।
दया करो हे नटवर नागर झुके न मेरा भाल॥
जो भी शरण तुम्हारी आया किया उसका कल्यान।
कण-कण में तुम रमने वाले जानत मेरा हाल॥ लाज.....
यद्यपि भूल हुई है मुझसे पर अब पार लगाओ।
अंधकार में एक किरन दे कर दो मुझे निहाल॥ लाज......
भ्रम का पर्दा नाथ हटा दो दिखा दो मुझे यथार्थ।
मेरे प्रेम को अक्षुण्ण कर दो हे प्रभु दीनदयाल॥ लाज.......
मेरे मोह को पावन कर दो ज्यों गंगा का नीर।
संकुल आर्त्त चरण पड़ा कान्हा अब लो मुझे सँभाल॥ लाज........

(58)

मेरा कोई अपना तो गोपाल।
समझ न पाये दुनिया वाले मेरे उर का हाल॥
तात मातृ अरु बन्धु भ्रात सब सखा सहोदर सारे।
जिस-जिस को भी गले लगाया सबने खींची खाल॥ मेरा.........
धन के लिए जगत् में भटका मिले अनेकों लोग।
लोभ में उलझे सब को देखा न्याय नियम के काल॥ मेरा..........
जिसको अपना समझा हितैषी पागल वही बनाया।
खाकर मेरा मेरे ऊपर जूठन दीन्हीं डाल॥ मेरा.....
दर-दर भटका ठोकर खाई हिम्मत गई जब हार।
संकुल शरण कृष्ण के आया प्रभु ने किया निहाल॥ मेरा कोई...

(59)

बचा लो पत मेरा गोपीनाथ।
टूट गये दुनिया के रिश्ते अब प्रभु करो सनाथ॥
उलझ गया दुनियादारी में दिखता नहीं किनारा।
कोई नहीं जो धैर्य बांधाये झुका चहत है माथ॥ बचा लो.....
क्षुद्र बुद्धि में समझ न पाया अपना हित अरु अनहित।
हार के आया शरण तुम्हारी जब जग किया अनाथ॥ बचा लो.....
द्रुपद सुता की लाज बचाई गज कर कष्ट हरा।
जिसने सुमिरन किया तुम्हारा तापर रखा हाथ॥ बचा लो....
किसको अपना दर्द सुनाउँ नहीं जगत् में मीत।
संकुल के अब होऊ सहाई हे प्रभु दीनानाथ॥ बचा लो.....

(60)

गोविन्द सुमिर ले मेरे मन।
नहीं काम अंत में आयेगा जिसने जोड़ा है अपनापन॥
संसार में ऐसा कुछ भी नहीं जो अंतस् को सुख दे पाये।
स्वारथ की सारी दुनिया है समय मिले तो कर इस पर चिन्तन॥ गोविन्द......
उर की रिक्तता न भर सकता जो जुटा रहा भौतिक साधन।
यदि वक्त का मूल्य नहीं समझा तो व्यर्थ हो जायेगा जीवन॥ गोविन्द.......
इंद्रियां ये धोखा देती हैं इन पर न कभी भरोसा कर।
इनकी न प्यास कभी बुझ सकती इसलिए रख इन पर नियंत्रन॥ गोविन्द......
श्रीकृष्ण को कर जीवन अर्पित कर्तव्य कर्म को करते जा।
संकुल मन कर ले दृढ़ निश्चय बिगड़ी तेरी जायेगी बन॥ गोविन्द......

(61)

गोविन्द तुम्हें अर्पित जीवन।
हे कृष्ण दया मुझ पर करिये उलझन में फंसा हुआ है मन॥
कोई भी नहीं समझ सकता मेरे हृदय की हलचल को।
अपनो ने किया ऐसे आहत अभिशाप बन गया है जीवन॥ गोविन्द......
घिर गया अंधेरा चारो तरफ दिखलाता मुझको वर्त्म नहीं।
करुणाकर मेरी मदद करो जग में न झुके मेरी गरदन॥ गोविन्द......
मैं महामूर्ख अज्ञानी हूँ प्रभु जी मेरे अवगुण चित्त न धरे।
सद्बुद्धि दे उन लोगों को जो करते न कभी सत् का चिन्तन॥ गोविन्द......
श्री कृष्ण शरण में जो आता बिगड़ी उसकी बन जाती है।
संकुल अब शरण तुम्हारी है रक्षा करिये देवकीनन्दन॥ गोविन्द.....

(62)

गोविन्द का सहारा गोविन्द का सहारा।
कोई नहीं जगत् में जिसको कहूं हमारा॥
हे नाथ इस जहाँ में मेरी साँस घुट रही है।
जीना हुआ है मुश्किल दिखता नहीं किनारा॥ गोविन्द.....
पाया समझ न कोई मेरे हृदय की पीड़ा।
जिसको गले लगाया सबने मुझे दुतकारा॥ गोविन्द.....
जीवन का भार मोहन अब सह न जा रहा है।
आया शरण तुम्हारी संसार में जब हारा॥ गोविन्द.....
हे कृष्ण अब तुम्हीं हो जीवन मेरे खेवैया।
संकुल का इस जगत् से कर दीजे वारा न्यारा॥ गोविन्द.....

(63)

बना दो बिगड़ी मेरी श्याम।
टूट गई दुनिया से आशा मन न लहत विश्राम॥
किसको अपनी व्यथा सुनाऊ कोई नहीं हमारा।
अश्रु सूख गये बहते-बहते जीवन हुआ हराम॥ बना.......
चहुँ ओर से घिरा बावंडर विकल हो रहे प्राण।
लाज हमारी बचा लीजिए विनय सुनो घनश्याम॥ बना.......
असहनीय पीड़ा होती है टूटता जब विश्वास।
कैसे समझायें फिर मन को मुश्किल होता काम॥ बना ....
कृष्ण कृपा कर एक किरन दें दिखे रास्ता साफ।
इच्छित फल संकुल पा जाये धूमिल हो न नाम॥ बना ....

(64)

हे कृष्णा हे मुरारी मुझ पर कृपा तुम्हारी।
जब-जब घिरा अंधेरा आई किरन तुम्हारी॥
टूटे जब सब सहारे लगा कोई न हमारे।
ऊहापोह में हुआ मन आई किरन तुम्हारी॥ हे कृष्ण....
माता पिता अरु भ्राता लगे व्यर्थ सारे नाता।
संसार में जब हारा आई किरन तुम्हारी॥ हे कृष्ण....
रक्त के सगे सम्बन्धी समझा मुझे सब बंदी।
जब-जब गया सताया आई किरन तुम्हारी॥ हे कृष्ण....
जीवन तुम्हें समर्पित करता हूँ सब कुछ अर्पित।
संकुल सदा यूं देखू आई किरन तुम्हारी॥ हे कृष्ण....

(65)

कृष्ण के रंग में रंग गया मन।
लगा सार जीवन का दिखने भूला अपनापन॥
रसना कृष्ण-कृष्ण को रट रही आँखें हो गयीं बन्द।
लगी छटा मोहन की दिखने मन हो गया मगन॥ कृष्ण......
खाते पीते सोते जगते नहीं भूलते श्याम।
दीवानी हो गयी श्याम की भूला अपना तन॥ कृष्ण.....
कंत तात भ्राता सुध बिसरी भूली दुनियादारी।
मान और अपमान भूल गयी मुख निकले न बैन॥ कृष्ण.......
सुख दुःख की कामना नष्ट भई केवल एक ही चाह।
संकुल वह दिन कब आयेगा दरस दोगे मोहन॥ कृष्ण......

(66)

गोविन्द तुम्ही हो मेरे बल।
दुनिया के सहारे टूट गये हो रहा नाथ अति हृदय विकल॥
हे कृष्ण दया मुझ पर करिये जीवन का विष जाता न पिया।
बन गया पहेली जीवन है हे नाथ इसे अब कर दें हल॥ गोविन्द......
जो मिला मुझे जीवन का फल आत्मा नहीं सह पाती है।
हे दयासिन्धु अब दया करें मिल जाय मुझे कोई संबल॥ गोविन्द......
मैं पामर उलझा माया में मेरी बुद्धि को नाथ शुद्ध कीजे।
हो जाय प्रेम इतना पावन कर दे जीवन बंधन का हल॥ गोविन्द......
मैं करता नहीं तुम करवाते जीवन करता तेरे हवाले।
संकुल को वर दे मनमोहन बिसरे न ध्यान प्रभु का एक पल॥ गोविन्द.......

(67)

चंचल चित्त प्रभु थिर कर दीजे।
बहुत दिनो से भटक रहा हूँ सेवा में अपनी ले लीजे॥
उदर पूर्ति के ही उ़द्यम में उलझ गया है मेरा जीवन।
नही बोध स्व का हो पाया अन्तःकरण अब निर्मल कीजे॥ चंचल........
हित अनहित का ज्ञान नहीं है नाच रहा माया के प्रेरे।
पशु से बदतर इस जीवन को निश्चित दिशा नाथ दे दीजे॥ चंचल........
मैं तो निमित्त मात्र हूँ मोहन तुम ही हो मेरे संचालक।
चाहे तुम जैसे भी रखो बस सहने की शक्ति दीजे॥ चंचल.......
जन्म सफल उसका हो जाता जिस पर होती कृपा तुम्हारी।
तुम्हें समर्पित संकुल जीवन कृष्ण मुक्त माया से कीजे॥ चंचल........

(68)

सताओ न मुझको अब श्याम।
सिमट गया है ज्ञान हमारा तुम मेरे चारो धाम॥
दर्शन चाहत नयन हमारे श्रवण सुना चाहे बैन।
जबसे तुम बस गये हृदय में बिसर गये सब काम॥ सताओ......
नहीं भूलती कभी तुम्हारी मन भावन वह सूरत।
रंग तुम्हारा छाया रहता मुझ पर आठो याम॥ सताओ.....
याद तुम्हारी जब आती तब आ जाते हैं आँसू।
व्यथित हृदय को धीरज देता ले-ले तेरा नाम॥ सताओ.....
मैं अज्ञानी नही पता होगा कैसे कल्याण।
प्रभु सर्वज्ञ दया कर संकुल को दीजे विश्राम॥ सताओ....

(69)

वश में मेरे न मेरा मन।
कोशिश करके मैं हार गया हे कृष्ण करें इसका मर्दन॥
मतवाला मन हाबी मुझ पर मर्कट की तरह नाचता है।
कर देता मेरा ज्ञान शून्य रुक जाता है सारा चिन्तन॥ वश में......
ममता माया में फँसा हुआ आया अब शरण तुम्हारी हूँ।
वह शक्ति हमें दो कृष्णचन्द्र जाये जिससे मेरी बिगड़ी बन॥ वश में........
यद्यपि सर्वज्ञ जानते हैं फिर भी प्रार्थना हमारी है।
जिसमें उलझे हैं मेरे प्राण उसका भी कर दे निर्मल मन॥ वश में.......
नैराश्य युक्त मेरे जीवन में आशा की एक किरन है वह।
संकुल रखना उसे सदा सुखी गोविन्द तुम्हें शत-शत वन्दन॥ वश में........

(70)

परीक्षा मत लेना गोपाल।
कृपा सदा सेवक पर करना विनती दीनदयाल॥
निज बुद्धि से तुम्हें समझना नही मेरे वश की बात।
अस्तु मेरे हृदय में बसकर कर दो मुझे निहाल॥ परीक्षा.....
मैं कर्ता नहीं प्रभु करवाते मुझसे हो हर काम।
ज्ञान ध्यान वैराग्य नहीं प्रभु जानत हो मेरा हाल॥ परीक्षा.....
विषय वस्य है बुद्धि हमारी मैं मूरख अज्ञानी।
दया दृष्टि मुझ पर करें स्वामी छुड़ा दे अब जंजाल॥ परीक्षा ....
जीवन में जो मिली सफलता केवल कृपा तुम्हारी।
ऐसे कृपा रहे संकुल पर कभी झुके न भाल॥ परीक्षा.....

,

(71)

गोविन्द तुम्हें अर्पण जीवन।
अंधकार से नहीं निकल पाता यदि देते न प्रभु एक किरन॥
अज्ञानी हूँ इसलिए नाथ अवगुण प्रभु मेरे चित्त न धरे।
कर कृपा दया श्रीकृष्ण करें विचलित न कभी हो मेरा मन॥ गोविन्द.......
संसार में मेरा कोई नही बस तुम ही एक हमारे हो।
कभी जुदा नहीं मुझको करना आराध्य जगह दो अपने चरन॥ गोविन्द.......
जो किया कामना हृदय से निश्चित प्रभु उसको पूर्ण किया।
हे कृपासिन्धु यूँ दया करें बन जाय मेरा जीवन चन्दन॥ गोविन्द......
जब-जब हृदय का ताप बढ़ा तब-तब प्रभु ने भेजे बादल।
संकुल पर कृपा तुम्हारी है गोविन्द तुम्हें शत-शत वंदन॥ गोविन्द......

(72)

कभी तो समझोगे गोपाल।
जब से प्रेम किया मैं तुमको भूल गया निज हाल॥
अस्त-व्यस्त हो गयी जिन्दगी इत धरु उत परे पांव।
बना दिया लोगों ने पागल आओ अब नंदलाल॥ कभी तो....
बसी हुई हृदय में रहती सूरत सदा तुम्हारी।
भान नहीं मुझको अपने का प्रभु करो मेरा ख्याल॥ कभी तो....
मातृ-पिता गुरु बन्धु तुम्हीं हो मेरे जीवन आधार।
कण-कण में तुम रमने वाले जानत सब का हाल॥ कभी तो.....
हे हरि जीवन तुम्हें समर्पित भव से पार करो।
दे वरदान भक्ति संकुल को कर दें मुझे निहाल॥ कभी तो.....

(73)

कृष्ण तुम्हीं प्रेरणा हमारी।
जो करता हूँ तेरी कृपा से तू दाता मैं सिर्फ भिखारी॥
बसी हुई मानस में रहती मुरलीधर तस्वीर तुम्हारी।
खाते-पीते सोते-जगते नहीं भूलती वह छवि न्यारी॥ कृष्ण ....
जिसने मोहा मेरे मन को वह भी तो रचना है तुम्हारी।
बने मुक्ति का मेरे साधना लगती जो प्राणों से प्यारी॥ कृष्ण ......
मेरे भाव के सृजनहार हो हे मुरलीधर हे गिरिधारी।
शबरी गीध अजामिल तारा अबकी बार हमारी बारी॥ कृष्ण ......
ज्ञान ध्यान वैराग्य नहीं मन विषय वस्य है बुद्धि हमारी।
संकुल कृष्ण दया अब करिये कहता हूँ अपनी लाचारी॥ कृष्ण ....

(74)

मनमोहन बाँकी छवि तुम्हार।
आकर बस जाती हृदय में जो एक बार लेता निहार॥
श्यामल मुखड़े पर घिरे केश अधरों की अनुपम अरुणाई।
जब स्मित अधर पर आ जाये दिखने लगता जीवन का सार॥ मनमोहन....
मकराकृत कुंडल कानों में शोभा कपोल की अतुलनीय।
नासिका मोह लेती है मन नेत्रों में आकर्षण अपार॥ मनमोहन....
ग्रीवा सुन्दर तेजमय ललाट मुख से छिटके ज्यों चन्द्रकान्ति।
मोर मुकुट मोहनी वह सूरत उर में भर देती है बहार॥ मनमोहन....
हाथों में ले करके माखन जब मार किलकारी हँसते हो।
संकुल जो मोहित हो जाता कर देते हो उसका उद्धार॥ मनमोहन....

(75)

द्रवउगे कब मुझ पर गोपाल।
उलझ गया मन है मूरत में हाल हुआ बेहाल॥
मैं अज्ञानी नहीं जानता कैसे तुम्हें रिझाऊँ।
अवगुण मेरे चित्त न धारे झुका रहा हूँ भाल॥ द्रवउगे....
फंस गये प्राण मेरे मूरत में पास न मेरे आते।
जीना दूभर हुआ हमारा दया करो नंदलाल॥ द्रवउगे....
भक्त तुम्हारा मैं बन जाऊँ करता यही प्रयास।
चाहे जिस स्थिति में रखो रहूँगा मैं खुशहाल॥ द्रवउगे....
मुझे समा लो तुम अपने में अस्तित्व मेरा मिटा दो।
थक गया संकुल चलते-चलते अब लो मुझे संभाल॥ द्रवउगे....

(76)

प्राणनाथ मनमोहन प्यारे।
तुम बिन कुछ सुहात नहीं जग में विकल हो रहे प्राण हमारे॥
याद तुम्हारी जब आती है उठती टीस हृदय में भारी।
नहीं नियंत्रण मेरा रहता नयन बहत अश्रु के धारे॥ प्राणनाथ....
मन विक्षिप्त सूनी भई दुनिया शव सी है जिन्दगी हमारी।
कभी-कभी व्याकुल मन कहता निकल जायं अब प्राण हमारे॥ प्राणनाथ....
जल बिन सरिता देह प्राण बिन रात चन्द्र बिन मीन बिन पानी।
ऐसे तड़पत निश दिन बीते धैर्य नहीं है बिना तुम्हारे॥ प्राणनाथ....
किया अनुग्रह तुमने मुझ पर अपना सुन्दर रूप दिखाकर।
संकुल के लिए नहीं है मूरत साक्षात हो कृष्ण हमारे॥ प्राणनाथ....

(77)

कभी तो पिघलोगे घनश्याम।
प्रेम किया अब व्यर्थ सोचना क्या होगा परिणाम॥
संत शास्त्र मुनि यही बताते प्रेम में शक्ति असीमित।
खाने हेतु बैर शबरी के विवश हो गये राम॥ कभी तो....
विदुरानी के प्रेम बंधकर खाये प्रेम से छिलके।
स्वाद सुदामा के तन्दुल का भुला दिया निज धाम॥ कभी तो....
भक्त प्रेम के बस पत्थर से लिया नरसिंह अवतार।
प्रेम दीवानी मीरा विष पिया लेकर गोविन्द नाम॥ कभी तो....
अन्तरयामी जान रहे हैं मेरे हृदय का हाल।
करें अनुग्रह अब संकुल पर दे दें मुझे मुकाम॥ कभी तो ..

(78)

ठाँव चरणों में दो घनश्याम।
जाने कब से भटक रहा हूँ खोज रहा विश्राम॥
मेरे हृदय में सदा बसी रहे श्यामल सूरत तुम्हारी।
दया करो मुझ पर नंदनन्दन पूरण कीजे काम॥ ठाँव चरणों में....
व्यथित हृदय को धैर्य बाँधायें आये मन संतोष।
अवगुण मेरे चित्त नहीं धरिये विनती आठो याम॥ ठाँव चरणों में......
मैं अज्ञानी नहीं जानता अपना ही कल्यान।
मुझको राह बता तो मोहन होने वाली शाम॥ ठाँव चरणों में...
जो भी शरण तुम्हारी आया किया उसका कल्यान।
संकुल शरण तुम्हारी मोहन न बिगड़े अब काम॥ ठाँव चरणों में....

(79)

कृष्ण बिन सूना वृन्दावन।
जबसे चले गये मथुरा में जल भावे ने अन्न॥
किसको अपनी व्यथा सुनाये टूटी जगत् से आश।
त्रिभुवन में कुछ नहीं दिखाता शीतल कर दे मन॥ कृष्ण बिन...
वृक्ष लता पक्षी ये गायें जहँ तक जाती दृष्टि।
बुझे-बुझे से सब लगते हैं मन बिन जैसे तन॥ कृष्ण बिन...
मोह में जिसके जड़ व्याकुल हो रोती उड़ती धूल।
कैसे धैर्य धरे वह प्राणी प्रिय जिनको मोहन॥ कृष्ण बिन..
प्राण बिना तन की सुन्दरता बिना कृष्ण ज्यों जीना।
संकुल नेत्र बन्द हो इससे पहले दो दर्शन॥ कृष्ण बिन..

(80)

गोविन्द के कर सोहे मुरली।
बजती है तो खुल जाती हैं अन्तःकरण की आँखें असली॥
सांवली मोहनी सी सूरत पीताम्बर सोहत श्याम गात।
विशाल बांह बड़री अँखिया भौंहे लगती हैं जैसे अलि॥ गोविन्द के...
घुघराले काले केशों को छूकर विभोर हो रही हवा।
रक्ताभ अधर कोमल कपोल शोभा लगती है बहुत भली॥ गोविन्द के...
सुन्दर ललाट नासिका सुघड़ श्रवण में झूल रहे कुंडल।
सुकुमार बदन से बिखर कांति एक बार अगर उर जाय चली॥ गोविन्द के..
जब कृष्ण में मन खो जाता है तब हो जाता है जन्म सफल।
संकुल अब शरण तुम्हारी है गोविन्द खोल दो मेरी गली॥ गोविन्द के..

(81)

तुम्हारा सदा ऋणी मैं श्याम।
कृपा तुम्हारी से करता हूँ जीवन के मैं काम॥
घटती बढ़ती रही मगर न मिटी आज तक प्यास।
मृगतृष्णा के इस जीवन को दो गोविन्द विराम॥ तुम्हारा....
मुझ मूरख पर सदा रही है गोविन्द कृपा तुम्हारी।
क्षुद्र बुद्धि मैं समझ न पाया क्षमा करें घनश्याम॥ तुम्हारा....
जप तप नियम नहीं कर सकता केवल तुमसे प्यार।
मेरे उर में सदा बसो हरि दुनिया से क्या काम॥ तुम्हारा....
कृष्ण पूर्ण तुम परमेश्वर हो अगणित हैं तेरे नाम।
क्षमा करें संकुल के अवगुण जगपति तुम्हें प्रणाम॥ तुम्हारा....

(82)

दीजिए प्रभु मुझको वरदान।
राम-राम करती रहे रसना श्रवण सुने नित गान॥
नेत्र देखाते रहे सदा गोविन्द तुम्हारा रूप।
इस छवि से बड़ करके जग में दिखे मुझे न आन॥ दीजिए.....
खाते-पीते सोते-जगते जपू तुम्हारा नाम।
एक पल के भी लिए न छूटे कृष्ण तुम्हारा ध्यान॥ दीजिए....
तुमको छूकर मुझ तक आये, गोविन्द सदा समीर।
व्रज माटी का लगा कर चंदन जग से करूँ पयान॥ दीजिए....
कण-कण में तुम रमने वाले मेरा द्वैत मिटा दो।
संकुल का लय हो जाये तुममें मिट जाये पहचान॥ दीजिए....

(83)

गोविन्द मुक्त बंधन कर दो।
मेरे प्रेम की जग में किरन रहे मन को मेरे निर्मल कर दो॥
संसार में रह करके भी मैं संसार ताप से दूर रहूँ।
राग द्वेष से ऊपर उठने की गोविन्द शक्ति मन को दे दो॥ गोविन्द......
मेरे प्रेम को प्रभु कर दे विशुद्ध हृदय को दे दें इतनी शक्ति।
अपमान मान से ऊपर उठ परिपूर्ण मेरा जीवन कर दो॥ गोविन्द......
आ जाय परिस्थिति कोई भी विचलित न हो प्रभु मेरा मन।
सर्वज्ञ उचित जो मुझको दें मेरी गलत चाह खारिज कर दो॥ गोविन्द.......
प्रेम की पाठशाला गये बिना गोविन्द किया है मैंने प्रेम।
संकुल की जग में लाज रहे मेरा प्रेम कृष्ण अक्षुण्ण कर दो॥ गोविन्द.......

(84)

भक्त वत्सल प्रभु कृपानिधान।
धीरज दे दें मेरे हृदय को दो अपनी पहचान॥
सामर्थ्य नहीं मेरी बुद्धि का जो ले आपको जान।
कृपा करें मुझ पर मनमोहन संकट में है प्रान॥ भक्त ......
बिना कृपा के बहुत कठिन है मन पर लगे लगाम।
दया दृष्टि मुझ पर करें मोहन दे दें वास्तविक ज्ञान॥ भक्त .....
जीवन के मेरे केन्द्र बिन्दु हो विनय सुनो घनश्याम।
अब संशय से मुझे निकाले मन अतिशय परेशान॥ भक्त .....
आत्मप्रकाश नही उर में है पड़ा हूँ तम के कूप।
संकुल आर्त्त शरण अब कान्हा करो मेरा कल्यान॥ भक्त ....

(85)

सुनेंगे निश्चित कृष्ण पुकार।
जीवन में कर्तव्य न छोड़ें करें कृष्ण से प्यार॥
टूट गये जब जगत् सहारे द्रुपद सुता अकुलाय।
कृष्ण-कृष्ण हा कृष्ण पुकारा लगा वस्त्र अंबार॥ सुनेंगे.....
उत्तरा का गर्भ जला जब कहा कृष्ण हा कृष्ण।
हरि ने किया परीक्षित रक्षा सूक्ष्म रूप को धार॥ सुनेंगे......
अहंकार जब गज टूटा कृष्ण की करी पुकार।
गरुण छोड़ हरि दौड़ कर आये किया गज का उद्धार॥ सुनेंगे........
संकुल जग की आश छोड़ भज कृष्ण गोपाल हरि।
अवश्य कृपा मोहन की होगी मिटेगा जीवन भार॥ सुनेंगे......

(86)

भूलना कभी न मुझको श्याम।
विषय वस्य है बुद्धि हमारी प्रभु दे लगा लगाम॥
जो भी हूँ अब शरण तुम्हारी कृपा करो मुझ पर गिरिधारी।
मेरे अवगुण चित्त न धारे दें उर को विश्राम॥ भूलना .....
दयासिन्धु हे करुणासागर जयति-जयति जय राधानागर।
तुम बिन मेरा कौन सहाई प्रभु करें पूरण काम॥ भूलना ....
जो भी सुमिरन करे तुम्हारा मिट जाता उसका दुःख सारा।
दीनबन्धु रखो पत मेरा चरन पड़ा सुखधाम॥ भूलना ....
हे व्रजनन्दन विनय हमारी स्तुति न कर सका तुम्हारी।
संकुल अयश न जग में पाये अमर रहे जग नाम॥ भूलना ...

(87)

तुम्हारे दरस को व्याकुल नयन।
जल बिन मीन विकल मेरा मन सुना चहत तेरे बैन॥
सुन्दर श्याम मनोहर छवि की मुझे दिखा दो झाँकी।
विकल प्राण भटकत चहुँ ओरिया आवें अपने अयन॥ तुम्हारे .....
शीतल वायु चुभत है मन को इत धरु उत परे पांव।
डगमगात जीवन की नैया कष्ट का करें शमन॥ तुम्हारे....
चहुं ओर से घिरा बावंडर डरता हूँ बुझ जाये न बत्ती।
अब केवल अवलम्ब तुम्हारा आया तेरी शरन॥ तुम्हारे....
कण-कण में हो रमने वाले जानत सब की बात।
संकुल का उर शीतल कर दें हे राधा के रमन॥ तुम्हारे.....

(88)

तुम समान नहीं कोऊ हितकारी।
दया करें हे राधानागर हार के आया शरण तुम्हारी॥
सुत बनिताद जगत् के नाते चुभत शूल सब सहि नहीं जाई।
जिसको अपनी व्यथा सुनाया किया उसने उपहास हमारी॥ तुम...........
कौड़ी-कौड़ी के जोड़न में सारा जीवन दिया गँवाई।
अब क्या करूँ समझ नहीं आवत बहत नयन अब केवल वारी॥ तुम............
टूटे जग के सभी सहारे कोऊ न अपना जिसे पुकारे।
अब केवल आसरा तुम्हारा रक्षा करें हमारी॥ तुम...........
शरण तुम्हारी जो भी आया व्यापी उसे नहीं फिर माया।
संकुल पर अब कृपा कीजिए, मिटे मोह भ्रम भारी॥ तुम..........

(89)

बना लो अपना मुझे गुलाम।
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न जिये होंगे वही करूंगा काम॥
जुदा करो मुझे मत अपने से दे दर्शन उपदेश।
जगह मुझे चरणों में दे दो विनय सुनो घनश्याम॥ बना लो....
तुम सा कोई नहीं दूसरा फिर मैं कहाँ को जाऊँ।
कृपा करो अब मुझ पर मोहन दे दो अखिल विश्राम॥ बना लो....
जो भी कहोगे वही करूंगा चरण से मत दुतकारो।
अपनी सेवा का अवसर दो गोविन्द आठों याम॥ बना लो....
ज्ञान भक्ति वैराग्य नहीं मन भ्रमित बुद्धि चहुँ ओर।
संकुल को अब गले लगाकर लगा दो पूर्ण विराम॥ बना लो....

(90)

पूर्ण करें इच्छा कृपानिधान।
जो भी शरण तुम्हारी आया किया उसका कल्यान॥
दरस तुम्हारे को व्याकुल हैं जन्म-जन्म से आँखें।
अब तो अपना रूप दिखा दो लीजे मत इम्तहान॥ पूर्ण करें...
वंशी की ध्वनि को सुनने को श्रवण हो रहे आकुल।
करके कृपा सुना तो मोहन वंशी की ध्वनि कान॥ पूर्ण करें...
चाह मिटा दो मेरी रसना की अपना जूठा देकर।
मुख से टपके हुए दही का करो दो मुझको पान॥ पूर्ण करें...
चाह रहा हूँ पग चिन्हों के रज का करना स्पर्श।
दया करो हे नटवर नागर रख लो मेरा मान॥ पूर्ण करें...
राधा के केशों में गुथा जो पाटल का फूल।
वह सुगन्ध संकुल तक आये वर दे श्री भगवान॥ पूर्ण करें...

(91)

हरि हरिये अब कष्ट हमारा।
स्वस्थ कीजिए मेरी बुद्धि को गोविन्द अब दो मुझे सहारा॥
मैं मूरख भावों में बहकर जाने क्या-क्या स्वप्न देखता।
करुणाकर अब ज्ञान दीजिए मोह से हो जाये छुटकारा॥ हरि..........
यद्यपि मुझसे भूल हुई है पर ऐसी की न पछताऊँ।
अगर पवित्र भाव है मेरा तो तुम दोगे अवश्य किनारा॥ हरि..........
मन पवित्र न मैं कर पाया करना क्षमा मुझे गिरिधारी।
मानसिक पाप न कलि में लगता शास्त्रों ने यह बात पुकारा॥ हरि...........
गज के जैसे प्राण बचाये वैसे ही अब मुझे उबारो।
दया दृष्टि संकुल पर कीजे रखिये जग में मान हमारा॥ हरि..........

(92)

भज मन जगत् पिता शिवशंकर।
मन वांछित फल सहज मिलेगा आ जा शरण शोक भ्रम तजकर॥
आशुतोष प्रभु अवडर दानी महिमा अमित निगम नहीं जानी।
जो भी शरण कपट तज आया हुआ भाल उसका जग ऊपर॥ भज मन.....
ओंकार में जगत् समाया जिसने शिव का ध्यान लगाया।
हुई कामना पूरी उसकी ऐसे भोलेनाथ गंगाधर॥ भज मन....
वर देकर खुद कष्ट उठाया नहीं भक्त वापस लौटाया।
जब-जब भार पड़ा धरती पर जग हित गरल पिया मुस्कराकर॥ भज..........
नीलकण्ठ महादेव पुरारी विनती सुन लो नाथ हमारी।
संकुल बसी हृदय जो मूरत बस वह सदा दिखे यूं सुन्दर॥ भज मन....

(93)

जय-जय शंकर कैलाशपति।
जो शरणागत हो जाता है दे देते हो उसको भक्ति॥
हे महादेव हे त्रिपुरारी सुन लो प्रभु विनती हमारी।
भटके मेरे मनको संबल दो होने पाये न कोई गलती॥ जय..........
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय जो ध्यान करे चित्त को लगाय।
उसकी बिगड़ी बन जाती है मिल जाती है उसको सद्गति॥ जय..........
तुम सा उदार न भोलेनाथ तुमने जिस पर रख दिया हाथ।
मन वांछित फल उसने पाया मृत्यु को भी ली उसने जीत॥ जय..........
बम-बम भोले अवडर दानी तुम सा न हुआ कोई ज्ञानी।
संकुल जो शिव की शरण गया कर दीनी उसकी निर्मल मति॥ जय..........

(94)

शिव सा उदार न कोई दानी।
महादेव मेरा उद्धार करें मैं महामूर्ख हूँ अज्ञानी॥
कैलाशपति हे अविनाशी शंकर तुम घट-घट में वासी।
अंतरयामी मैं हार गया रखना प्रभु जग मेरा पानी॥ शिव सा....
सिर पर गंगा कर में त्रिशूल उर पर भुजंग तन शव की भस्म।
है अशुभ भेष पर हे अखिलेश तुम सा न हुआ कोई ज्ञानी॥ शिव सा......
मनचाहा वर मिला जाता है जो शरण तुम्हारी आता है।
हे नंदीश्वर हे गिरजापति महिमा तुम्हार न हम जानी॥ शिव सा....
इच्छित फल बिन शिव को धाये कोई भी जग में न पाये।
शिवशंकर संकुल को वर दें मन कर पाये न मनमानी॥ शिव सा....

(95)

बम भोले जय अवडर दानी।
दया दृष्टि करिये शिवशंकर सुन लीजे मेरी करुण कहानी॥
जिस दिन से मैं होश संभारा मिला न जग में कोई सहारा।
रोते-रोते साँझ घिर गयी आया शरण रख लो पानी॥ बम..........
चुभे शूल सम रिश्ते नाते पग-पग पर केवल मिली घातें।
मोह न छूटा जग ने लूटा सुना न कोई मेरी वानी॥ बम..........
हार के आया शरण तुम्हारी दया करें मुझ पर त्रिपुरारी।
ज्ञान भक्ति वैराग्य नहीं मन महामूर्ख मैं हूँ अज्ञानी॥ बम..........
महिमा अमित निगम नहीं जाना आशुतोष प्रभु कृपा निधाना।
संकुल का संताप मिटा दें दया करें भोले वरदानी॥ बम ....

(96)

जपो रे मन जय-जय भोलेनाथ।
शिव की शरण जो आया प्राणी प्रभु ने किया सनाथ॥
सहज कृपा भक्तों पर करते जो मांगा वह वर दे देते।
त्रिभुवन फैली कीर्ति तुम्हारी शिवजी मुझ पर रखो हाथ॥ जपो..........
कर में जब त्रिशूल उठाते दुष्ट जनों को मार गिराते।
सत्य न्याय के हे संरक्षक तुम्हें झुकाता माथ॥ जपो......
जो निराश जग से हो जाता यदि वह शरण तुम्हारी आता।
मन वांछित फल उसको देते शिव अनाथ के नाथ॥ जपो........
सुर नर मुनि सब शीश झुकायें अभय होय जो सन्मुख आये।
संकुल की कामना पूर्ण करें अब न रहें अनाथ॥ जपो.......

(97)

शिवशंकर अब शरण तुम्हारी।
हार गया जीवन की बाजी डगमगात है नाव हमारी॥
त्याग दिया जिसको जग सारा उसको प्रभु ने दिया सहारा।
विफल प्रयास हुआ सब मेरा दया करो मुझ पर त्रिपुरारी॥ शिवशंकर...
जिसने शिव का ध्यान लगाया प्रभु ने दिया उसे जो भाया।
उर उसका आलौकित कर दें फंसी है जिसमें बुद्धि हमारी॥ शिवशंकर...
पार्वती पति हे परमेश्वर दया करें मुझ पर अखिलेश्वर।
निज बुद्धि बल भरोस नहीं स्वामी काटो कष्ट जो भारी॥ शिवशंकर....
शिवजी जीवन तुम्हें समर्पित रखना लाज मेरी गिरजापति।
संकुल के अब होऊ सहाई होय न जग में ख्वारी॥ शिवशंकर...

(98)

करो शिवशंकर मेरा कल्यान।
तुम सा कोई नहीं दूसरा जग में कृपानिधान॥
निकला जहर समुद्र मंथन से मच गया हाहाकार।
देख मुसीबत धरा के ऊपर कर लिया विष का पान॥ करो..........
दक्ष यज्ञ में सती भस्म भई आया शिव को रोष।
बीरभद्र को कोप कर भेजा रखा सत्य का मान॥ करो........
काम जारि रति को वर दीन्हा रखा सृष्टि विधान।
शिव सा न उदार कोई जग में दीनबन्धु भगवान॥ करो........
असफल अब तक सब प्रयास हैं मन अतिशय अधीर।
संकुल का संताप मिटा दो रख लो मेरी आन॥ करो.......

(99)

कपि को तुम समान उपकारी।
हे बजरंग अब होऊ सहाई घिरी मुसीबत मुझको भारी॥
तात मातृ अरु बन्धु भ्रात सब चुभे शूल सम सहि नहीं जाई।
तुम बिन और नहीं दुनिया में जो काटे यह त्रास हमारी॥ कपि को....
रामचन्द्र के अतिशय प्यारे सीता के नयनों के तारे।
अधमों का वध करने वाले रख लीजे जग लाज हमारी॥ कपि को....
जगत् में फैला सुजश तुम्हारा हनुमान जो नाम पुकारा।
मान सदा तुम उसका रखा जय हो बजरंग बली तुम्हारी॥ कपि को....
ऊहापोह में फंसा हुआ मन कंपित होता है सारा तन।
संकुल हार गया जीवन से पवन पुत्र अब शरण तुम्हारी॥ कपि को....

(100)

संकट हरो हे मरुत नंदन।
लाज जगत् में मेरी रखो आया शरण में दुष्ट निकंदन॥
राघवेन्द्र के अतिशय प्यारे जनक सुता के परम दुलारे।
शंकर सुवन मैं शरण तिहारी व्यथित शान्त कीजे मेरा मन॥ संकट.........
जगत् में फैला सुयश तुम्हारा दुष्टों को तुम गिन-गिन मारा।
तुम्हारे हृदय में राम बिराजे स्वीकार करो हमारा वंदन॥ संकट........
तुम समान नहि कोऊ उपकारी सुर नर मुनि जग कोऊ तन धारी।
राम काज हित जग में आये बन गये राम कथा में चंदन॥ संकट.........
सीता मैया का वर पाया दुष्टों का कर दिया सफाया।
संकुल राम कथा जहाँ होती पड़ते प्रथम आपके चरन॥ संकट........

(101)

हरि हरिये अज्ञान हमारा।
उलझ गया माया में मन है दिखता है नहीं कहीं किनारा॥
हरि कर कृपा किरन एक दीजे जिससे पथ अपना दिखलाये।
आज व्यथित हो गया बहुत मन छूट गया आखिरी सहारा॥ हरि...........
नहीं मिला अब तक जग कोई मेरी सुने हृदय की बातें।
प्यार खोजना व्यर्थ जगत् में यहाँ सभी का सुख है प्यारा॥ हरि..........
ज्ञान ध्यान साधना नहीं है केवल एक है नाम आधारा।
राम रमें हो तुम कण-कण में कर दो मेरा वारा न्यारा॥ हरि..........
मैं करता नहीं तुम करवाते जीवन करता तेरे हवाले।
निज बुद्धि बल भरोस नहीं संकुल हरि केवल आसरा तुम्हारा॥ हरि..........

(102)

हरो हरि तन मन की मम पीर।
गहरी हो गयी आज वेदना हृदय धरत नहीं धीर॥
किसको अपनी व्यथा सुनाऊँ जगत् में न कोई अपना।
करुणाकर अब सहा न जाता घाव में लग रही तीर॥ हरो..........
चुभे हृदय में कंटक जैसे तात मातृ अरु सगे सम्बन्धी।
जिससे भी उम्मीद लगाया दिया उसने उर चीर॥ हरो........
अपना स्वारथ सभी साधते दुनिया के सब रिश्ते नाते।
कोउ नहीं जो धैर्य बाँधाये बहत नयन अब नीर॥ हरो.........
हारि गयों यहि कारण शरण में कहत न लागत लाज।
दयासिन्धु करें कृपा संकुल पर मन हो रहा अधीर॥ हरो.........

(103)

लाज रखो मेरी कृपानिधान।
नहीं कोउ धीरज देने को चाहत चलन अब प्रान॥
अब क्या करूँ कहाँ पर जाऊँ किसको अपनी व्यथा सुनाऊँ।
अपनी धुन में मगन ही सारा दिखता मुझे जहान॥ लाज........
मेरी भूल क्षमा करें स्वामी महामूर्ख मैं खल रत कामी।
कृपासिन्धु अब दया दृष्टि कर करें मेरा कल्यान॥ लाज........
प्रभु मेरे मन को दो शक्ति करे भटकने की न गलती।
बस तुममें तन्मय हो जाये रहे न मन अभिमान॥ लाज .....
प्रभु कर कृपा मुझे यह वर दो सुख-दुःख से ऊपर मुझे कर दो।
संकुल अपनापन मिट जाये, रहे न अब पहचान॥ लाज.......

(104)

हार कर आया शरण तेरी।
अब करुणाकर लाज बचाओ घिरी संकट की घरी॥
सच्चे मन से जिसने पुकारा उसके पत को नाथ बचाया।
दया करें अब जग के स्वामी विनती सुनो हरि॥ हार........
यद्यपि भूल हुई है भारी क्षमा करें हे अन्तरयामी।
मेरी वांछा पूरी कर दे करें न अब देरी॥ हार......
कण-कण में तुम रमने वाले जानते सब की बात।
फंसी तेरी माया में बुद्धि अब भी नाथ मेरी॥ हार .....
प्रभु चित्त मेरा निर्मल करके मेरी आकांक्षा पूरी कर दें।
संकुल एक किरन आ जाये जीवन में मेरी॥ हार..........

(105)

प्रीति की बाँधी तुम से डोर।
जीवन बंधन मुक्त कीजिए शरण में मोखन चोर॥
जप तप नियम नहीं कर पाया पशु सम उदर भरा।
कृष्णचन्द्र अब दया कीजिए चित्त स्थिर हो मोर॥ प्रीति.......
स्वारथ का संसार है सारा मतलब के सब यार।
निज सुख ही साधना प्यार है लगी जगत में होर॥ प्रीति........
टूट गये दुनिया के नाते उर अति विकल भयो।
अब तो तुम्हीं उबारो मोहन फिर से आये भोर॥ प्रीति.......
जग में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसमें तुम न समाये।
संकुल देह कहीं भी हो पर ध्यान तुम्हारी ओर॥ प्रीति.......

(106)

भजन से मिलती मन को शान्ति।
राम भजन कर छोड़ कपट छल मिटेगी मन की भ्रान्ति॥
भज मन रामचन्द्र रघुनन्दन हरि गोविन्द देवकीनन्दन।
राम नाम की शक्ति विचारो में ला देगी क्रान्ति॥ भजन......
राम नाम हृदय में जपये काम जगत् के करते रहिये।
प्रभु को प्रिय सत्कर्म जो करता व्यर्थ देखना जाति॥ भजन.......
जग के झूठे रिश्ते नाते कोई नहीं अपना बन पाते।
राम नाम ही तात मातृ है जीने की है शक्ति॥ भजन......
राम का जिसने लिया सहारा जीवन में वह कभी न हारा।
संकुल जीवन मंत्र यही है राम की कर ले भक्ति॥ भजन.......

(107)

मातृ सब जानत हिय की बात।
जीवन बीतत जात कटत यह नही अमावश रात॥
इच्छाओं में फँसा हुआ हूँ स्वार्थ दलदल में धँसा हुआ हूँ।
इस अज्ञान से कैसे निकलूँ मेरी नहीं बिसात॥ मातृ......
माँ मुझ पर हो कृपा तुम्हारी मिट जाये सारी अंधियारी।
माँ आलोक पुंज उर भर दो आये विशुद्ध विभात॥ मातृ........
जीवन सरल मधुर मंगलमय पुलकित तन मन में उमंग हो।
हर रंग में भी ज्ञान सत्य का मुझे रहे सदा ज्ञात॥ मातृ........
संकुल की विनती है इतनी माँ देना मेरे शब्द को शक्ति।
माँ वह ज्ञान मेरे उर भर दो रहे न कुछ अज्ञात॥ मातृ........

(108)

प्रभु बिन मेरा कौन सहाई।
झूठे हैं दुनिया के रिश्ते व्यर्थ जगत् की सकल कमाई॥
जिसने जीवन दिया उसी को आज तलक मैं जान न पाया।
वह था अपना उसे भूल कर गैरों से दी प्रीति लगाई॥ प्रभु..........
प्रतिपल काया जर्जर हो रही मगर मोह को छोड़ न पाया।
कौड़ी-कौड़ी के जोड़न में सारा जीवन दिया गँवाई॥ प्रभु.........
मेरा ज्ञान अभी तक सीमित सत् अरु असत् समझ न पाया।
इसीलिए तो दग्ध हृदय यह नयनों से रहा अश्रु बहाई॥ प्रभु..........
प्रभु संकुल की सुन लो विनती क्षमा करें अपराध हमारे।
नाथ शरण में अपने लीजे जीवन भार न जात उठाई॥ प्रभु..........

(109)

कैसे करूँ तुम्हारी पूजा।
मंत्रों का मुझे ज्ञान नहीं है बस तुमसे प्रिये मोहि न दूजा॥
बसी रहो मेरे मानस में देवि यही तुमसे है विनती।
भेद न हो कथनी करनी में ऐसे करूँ तुम्हारी पूजा॥ कैसे.........
तेरे जैसा सुन्दर मन हो वर दें मेरा अमंगल हर लें।
मेरी वाणी को शक्ति दें गाकर करूं तुम्हारी पूजा॥ कैसे.........
तेरा ध्यान हृदय में आते भूल मेरी पीड़ा सब जाती।
गद्‌गद हृदय मेरा हो जाता इस सुख से जग और न दूजा॥ कैसे..........
आज वसंत पंचमी आई सपने में मेरी देवी आना।
संकुल का अज्ञान मिटाना कर्म हमारा ही तेरी पूजा॥ कैसे.........

(110)

तुम में करुणा ममता बसती।
हे देवि दया मुझ पर करिये स्वीकार करो मेरी विनती॥
एक बार मेरे घर में आकर देवी तुम दर्शन को दे दो।
दो प्यास मिटा मेरे जीवन की माँ क्षमा करें मेरी गलती॥ तुम में.......
युग-युग से प्यासी आत्मा को अपने स्नेह से तृप्ति दो।
हो जाय सफल जग में जीवन माता दे दें इतनी शक्ति॥ तुम में.......
प्रार्थना मेरी स्वीकार करें, मैं पड़ा हुआ हूँ तेरे चरन।
तुम आओगी इस आशा में ढो रहा जिन्दगी यह जलती॥ तुम में.......
जब-जब आकुलता मेरा मन मैं याद तुम्हारी करता हूँ।
अब देवि दया करि संकुल पर दे दें केवल अपनी भक्ति॥ तुम में.......

(111)

देवि मैं आया शरण तुम्हारे।
कोऊ नहीं जो धैर्य बाँधाये संकट में हैं प्राण हमारे॥
फंसा हुआ तेरी माया में सही गलत पहचान न पाया।
अब करि कृपा दीजिए संबल मेरे अवगुण चित्त न धारे॥ देवि..........
मेरे प्रेम को पावन करके जीवन पथ आलोकित कर दें।
एक किरन जग को दे पाऊँ अंधकार से मातृ उबारें॥ देवि.........
सच्ची चाह हुई मेरी पूरी कृपा आपकी सदा रही है।
मेरे सिर पर हाथ तुम्हारा आज मिटे जग के दुःख सारे॥ देवि..........
मैं अज्ञानी भटक रहा हूँ मातृ तुम्हीं हो शक्ति हमारी।
संकुल को जगजननी दें मुक्ति किसी उदर न पांव पसारे॥ देवि..........

(112)

जब-जब होता हृदय आहत।
माँ याद तुम्हारी तब आती मिल जाती है उर को राहत॥
संसार स्वार्थी क्या समझे होती जो हृदय की पीड़ा।
माँ दया करें मेरे ऊपर आये न अब कोई आफत॥ जब.........
जो चलता है सच्चाई पर माँ उसको सदा बचाती हैं।
भक्तों को करती सदा अभय माँ वेद पुरान संत गावत॥ जब..........
कामना पूर्ण कर देती हैं जो शरण अम्ब के आता है।
मैं कैसे अपनी बात कहूँ माँ मेरे हृदय को जानत॥ जब.........
युग-युग से अविरल प्रेम धार माता की जग में बहती है।
संकुल जो इसमें डूब गया मिल गया उसे फिर चिर राहत॥ जब..........

(113)

जय-जय-जय-जय गिरिराज सुता।
माता मैं पुत्र तुम्हारा हूँ जो हृदय में सब तुम्हें पता॥
मन वांछित फल मिल जाता है जो माँ का ध्यान लगाता है।
मैं भी अब शरन तुम्हारी हूँ माता कर दो मेरी क्षमा खता॥ जय..........
जगजननी मुझ पर कृपा करें संताप हृदय का मेरे हरें।
चित्त मोह चिन्ता में ऐसे जला खुद का ही रहा न अता-पता॥ जय..........
माँ दग्ध हृदय शीतल कर दें स्थिर जीवन गतिमय कर दें।
अज्ञान मेरा माता हर लें जीवन का दें उद्देश्य बता॥ जय..........
मैं अधम नीच अज्ञानी हूँ संसारी शोषित प्राणी हूँ।
माँ बना दो संकुल की बिगड़ी अब मोह सके न मुझे सता॥ जय...........

(114)

बंदउँ चरन जनक तनया के।
राघव के हृदय में रहती करती काम सृजन प्रलय के॥
आदि शक्ति भूमिजा भवानी देख भक्त की करुण कहानी।
सहज कृपा उस पर कर देती लिखा मेट देती हैं भाल के॥ बंदउँ..........
बिना तुम्हारे राम अधूरे काम नहीं कर सकते पूरे।
तुम सारा ब्रह्माण्ड चलाती मगर नियन्त्रण में राघव के॥ बंदउँ.........
जिस पर कृपा आपकी होती उसी को मिलती राम की भक्ति।
बिना तुम्हारे शरण में आये चक्षु खुलेंगे नहीं ज्ञान के॥ बंदउँ.........
जगत मातृ जय अम्ब भवानी महिमा अमित न जाई बखानी।
संकुल माँ हूँ शरण तुम्हारे दें वर भक्त बने राघव के॥ बंदउँ.........
,

(115)

गोविन्द की तुम राधे शक्ति।
आराध्य कृष्ण की तुम देवी तुम सहज ही दे देती मुक्ति॥
स्मरण तुम्हारा करने से जीवन में सन्तुलन आ जाता।
राधाजी मैं हूँ शरण तेरे दे दो मन को मेरे शान्ति॥ गोविन्द.....
जीवन के शाश्वत मूल्यों का देवी तुमने विस्तार किया।
डूबता प्रेम सागर में जो दे देती हो उसको मुक्ति॥ गोविन्द.....
श्रीकृष्ण न पूर्ण कभी होते यदि लेती तुम अवतार नहीं।
तुमने संदेश दिया जग को निष्काम प्रेम ही है भक्ति॥ गोविन्द......
देवी तुम जैसा और नहीं तुम प्रेम की हो अवतार पूर्ण।
संकुल को भी परिपूर्ण करो स्वीकार करो माता विनती॥ गोविन्द......

(116)

सत्य की होती हार नहीं।
जो भी चला वह मंजिल पाया महका दिया मही॥
कंटक युक्त मगर यह पथ है पावत सुख न शरीर।
कोउ नहीं जो मन की समझे मनकी मनहि रही॥ सत्य .....
जिसने मूल्य समय का जाना अपने कर्त्तव्य को पहिचाना।
दुनिया में आने का मकसद पूरा किया वही॥ सत्य......
धरती पर हर वस्तु की कीमत अंकगणित में बँधी हुई है।
फिर भी कोई बताये मुझको प्यार का मूल्य सही॥ सत्य ......
सत्य अनुभूति हृदय से होती वाणी इसे नहीं कह सकती।
मगर समझ लेंगे हरि एक दिन संकुल आश यही॥ सत्य ......

(117)

मनवा करि ले हरि का सुमिरन।
यह भी तो सोच कभी समय मिले पल-पल यह घटता है जीवन॥
क्या खोज रहा क्या पाया है क्या और चाह है अभी तलक।
खोया पाया के सिवा और कुछ सोच नहीं सकता यह मन॥ मनवा.........
दुनिया में कोई नहीं करता किसी के कहने से भी काम।
जब कभी हृदय स्वीकार उठे तब हो जाना गोविन्द शरन॥ मनवा.........
संसार में भी प्रेम से बढ़कर होता कुछ भी न मूल्यवान।
हो प्रेम तो फिर दिख जाते हैं राधा माधव दोनों एक तन॥ मनवा.........
एक दिन भाग कर थक जायेगा जर्जर शरीर हो जायेगा।
संकुल संसार तुझे त्यागे इससे पहले कर मुक्ति जतन॥ मनवा........

(118)

आज आया पिय का संदेश।
वादा करके गये थे मुझसे जाकर भूले विदेश॥
बचपन खेल-खेल में खोया यौवन में मदमत्त।
इच्छाओं में ऐसे उलझे भूल गये निज देश॥ आज ....
सही गलत का किया न चिन्तन काया का सुख चाहा।
शूकर सदृश उदर भरते रहे बांटा सदा क्लेश॥ आज ....
अपना अरु अपनों के लिए ही किया जन्म भर काम।
पर पीड़ा से द्रवित हुआ न कभी हृदय भी लेश॥ आज .....
अब पछताने से क्या होगा समय गया सब बीत।
प्राणी पाप किया जिनके लिए देख ले असली भेश॥ आज ......
जीवन में कुछ वह भी कर ले हो जिस पर अभिमान।
संकुल पिय से नजर मिले तो झुके कभी न केश॥ आज .....

(119)

कब आयेगी मिलन की बेला।
बहुत देर भई चलते-चलते सब छूटे रह गया अकेला॥
झूठे हैं दुनिया के नाते केवल उर का ताप बढ़ाते।
फिर भी मोह छोड़ न पाया है अजीब दुनिया का मेला॥ कब..........
सब को अपना सुख है प्यारा नहीं कोई बन सका हमारा।
प्यार न समझे दुनिया वाले लगा व्यर्थ अब तक जो खेला॥ कब..........
अपने-अपने ढंग से हो रही न्याय नियम की अब परिभाषा।
जीत वही जाता है बाजी आता जिसे फेंकना ढेला॥ कब.........
यद्यपि नहीं आभास सत्य का पर है दृढ़ विश्वास हमारा।
संकुल शरण आदि शंकर की बना लीजिए अपना चेला॥ कब ....

(120)

हृदय से आती जो पुकार।
जीवन सुन्दर बन सकता है मन कर ले यदि इसे स्वीकार॥
सत्य का निवास होता उर में वह सच्ची राह दिखाता है।
हानि लाभ में फंसी हुई बुद्धि जानती करना केवल व्यापार॥ हृदय..........
दो भाग मस्तिष्क के होते हैं कल्पनाशील एक तथ्यपरक।
आगे लो कदम बढ़ाता है मानव करता वैसा आचार॥ हृदय.........
मन को बिन धवल किये उर में भक्ति का होगा न प्रवेश।
जब तक न कृपा प्रभु की होगी जीवन का दिख सकता न सार॥ हृदय..........
वेगवान न कुछ मन के समान साधने का केवल एक मंत्र।
संकुल बस प्रेम करें प्रभु से धुल जायेंगे मन के विकार॥ हृदय.........

(121)

तुम से होता जग में प्रकाश।
मुझ पर भी दया दृष्टि करिये गोविन्द बना लो अपना दास॥
तर्कों से तुम्हें सिद्ध करना यद्यपि मेरे लिए असम्भव है।
दर्शन भी यहाँ बिखरता है विज्ञान भी हो जाता निराश॥ तुम से.......
उस पार छिपा क्या पर्दे के नहीं समझ बुद्धि से आता है।
निश्चित मत एक नहीं अब तक हैं पृथक-पृथक सब के प्रयास॥ तुम से.........
ईश्वर है इसका एक प्रमाण केवल अन्तःकरण देता है।
जब हार के जीवन की बाजी में एक किरन बन जाय आश॥ तुम से........
जब कर्म ज्ञान शक्ति हारी हो गयी जिन्दगी शव समान।
संकुल तब याद किया हरि को मिट गयी आज सम्पूर्ण प्यास॥ तुम से........

(122)

जीवन जैसे जेठ दुपहरिया।
जाने कब से तड़प रही हूँ दया करो अब कृष्ण कन्हैया॥
कुछ करने को मन नहीं करता हर पल आती याद तुम्हारी।
हृदय को राहत न दे पाती चलती यह ठंडी पुरवाइया॥ जीवन........
सूरज भी लगता उदास है बादल लगते ज्यों बौराये।
पक्षी चहक रहे पर मन को कुछ भी न दिखलाता बढ़िया॥ जीवन.........
कोयल कूक रही डाली पर स्यात् बुलाती है प्रियतम को।
कुछ भी बदला नहीं प्रकृति में तुम क्यों बदले वंशी बजैया॥ जीवन.........
आओगी बस इसी आश में तन में ठहरे हुए प्राण हैं।
संकुल कहे कैसे व्रजबाला हंसी करेगी सुनकर दुनिया॥ जीवन........

(123)

आचरण भक्ति का आधार।
राम भक्त की पहली सीढ़ी करें शुद्ध आचार॥
तन धोने से मन नहीं धुलता जिसमें विषय विकार।
जब तक मन नहीं निर्मल होगा सब प्रयास बेकार॥ आचरण.....
चंचल मन जब थिर हो जाये तब करें सोच-विचार।
जब विचार स्थिर हो जाये लगे दिखाने सार॥ आचरण....
हृदय प्रफुल्लित हो जाता है जब मिल जाता सार।
जीवन का उद्देश्य दिखाता तब बस केवल प्यार॥ आचरण...
प्रेम की डोरी प्रभु से बाँधे मूर्ति बना आधार।
राम कृपा से संकुल निश्चित हो जायेगा उद्धार॥ आचरण....

(124)

आज खुशी के आँसू आये।
जो अनुभूति हुई मानस को वह शब्दों से कैसे बतायें॥
अंधकार में भटक रहा था जाने कब से मेरा चिन्तन।
आज हृदय निष्कर्ष पर पहुँचा चिर प्रियतम से कुछ न छिपायें॥ आज..........
खोने पाने के चक्कर में फँसा हुआ रहता है जीवन।
जो पाकर भय न खोने का मूल्य उसका हम कैसे लगायें॥ आज..........
जो असीम है निराकार है प्रेम उसे साकार बनाये।
बाँध सका न जिसे दुर्योधन विदुरानी के छिलके खाये॥ आज.........
सदियों का भी घोर अंधेरा एक किरन पल में हर लेती।
संकुल उर तम तभी छँटेगा जब सत् पथ पर कदम बढ़ायें॥ आज..........

(125)

तुम ही हो चित्तचोर हमारे।
जगत् के सारे रिश्तों में लगे मुझे तुम सबसे प्यारे॥
सूखी जीवन की बगिया में बन कर मेघ बरसने वाले।
भूल तुम्हें मैं कैसे सकता लगे सृष्टि में सबसे न्यारे॥ तुम...........
पत्थर के तुम मूर्ति नहीं हो लगते सुन्दरता के सागर।
तुम्हें देखकर भूल मैं जाता जीवन के अपने गम सारे॥ तुम...........
मैंने तुमसे नेह किया है तुम मानों चाहे न मानों।
मुझ अपूर्ण को पूर्ण करो तुम पड़ा हुआ हूँ द्वार तुम्हारे॥ तुम...........
हार गया जीवन की बाजी अब चाहता हूँ कृपा तुम्हारी।
दया करें संकुल पर कान्हा जग बंधन से नाथ उबारे॥ तुम...........

(126)

तुम मेरे लिए सरस्वती हो।
मेरी वाणी को शब्द दिया तुम मेरे लिए वंदनीय हो॥
आतप से व्याकुल मेरे मन को आंचल का शीतल छांव दिया।
मैं भूल गया सारी दुनिया अब तुम ही मेरी साधना हो॥ तुम मेरे......
मेरे जीवन की आधार हो तुम नश्वर जग में पतवार हो तुम।
अब देवि दया मुझ पर कीजे करुणा की वर्षा करती रहो॥ तुम मेरे......
मैं तो हूँ केवल निमित्त मात्र मेरे संचालक हैं राघव।
उनकी कृपा से मिली हो तुम इसलिए मेरी आराध्या हो॥ तुम मेरे.....
तेरी वाणी को सुन करके मेरी वाणी जग जाती है।
संकुल को देती शुद्ध विचार बन गयी हमारी किरन हो॥ तुम मेरे.....

(127)

तुम्हीं को समझा मैं गोपाल।
जीवन की चेतना मेरी हो तुम बिन मन बेहाल॥
मेरे मन को उलझाया तुम मेरे लिए अलौकिक।
कण-कण में जो रमने वाला जान रहा मेरा हाल॥ तुम्हीं.......
मेरी पुकार सुनोगी निश्चित है मुझको विश्वास।
प्रेम किया पर तुमसे पावन जानत दीनदयाल॥ तुम्हीं.....
ज्ञान भक्ति वैराग्य नहीं मन मैं पामर हूँ स्वामी।
नही दमन करा सका वासना घेरे है जंजाल॥ तुम्हीं....
भाव पवित्र अगर है मेरा नहीं पतन हो सकता।
संकुल तेरे प्रेम में खोकर आये याद नन्दलाल॥ तुम्हीं.....

(128)

तुम्हें कृष्ण कहूँ या राम।
आठो याम हृदय में जपता रहता हूँ तेरा नाम॥
दुनिया के सारे रिश्तों में तुम सबसे हो पावन।
याद तुम्हारी व्यथित हृदय को दे देती विश्राम॥ तुम्हें.......
दुनिया ने मुझको भरमाया अपना नजर न कोई आया।
हार कर गिरने वाला ही था पर तुमने लिया थाम॥ तुम्हें.........
फंसा हुआ अब भी माया में भटक रहा हूँ दरदर।
केवल तेरे प्रेम के बल पर करता जग के काम॥ तुम्हें.......
कण-कण में व्यापी ईश्वर है वेद शास्त्र मुनि कहते।
संकुल के लिए कृष्ण तुल्य हो काटो कष्ट तमाम॥ तुम्हें........

(129)

तुम मेरे लिए हो गंगाजल।
कल-कल कर बहती रहती हो भावों में तुम मेरे अविरल॥
सौम्यता शील की मूरत हो तुम साँस हमारे जीवन की।
बस दरस मात्र से हर लेती जीवन का तुम मेरे हलचल॥ तुम..........
छल छद्म स्वार्थ से भरा हुआ जग लगा मुझे दुर्गन्ध युक्त।
इस स्थिति में तेरी स्मृति जीने का दे देती है बल॥ तुम..........
मैं इधर-उधर था भटक रहा बस एक अभ्र का टुकड़ा सा।
तुम्हें देख कर मंथन बहुत हुआ अन्ततः हुआ मेरा मन उज्ज्वल॥ तुम...........
जीवन का विष पीते-पीते हो गया था मैं शव के समान।
संकुल जो तुमने मुझे दिया महका दूंगा उससे भूतल॥ तुम..........

(130)

तुम से सम्बन्ध अटूट मेरा।
तुम को हृदय में रख करके मैं लगा रहा जग में फेरा॥
संसार के सारे रिश्तों में तुम लगे मुझे सबसे ऊपर।
मैं कभी भूल नहीं सकता हूँ जीवन पर जो उपकार तेरा॥ तुम...........
नहीं वक्त तोड़ कभी पायेगा तुमसे पावन सम्बन्ध मेरा।
समय के उर पर श्रीकृष्ण कृपा से सदा रहेगा उकेरा॥ तुम..........
तुम किरन हो मेरे जीवन की सत्पथ मुझको दिखाती हो।
मानस सुता पृथक न हो सकती होता उसका उर में डेरा॥ तुम..........
तुम प्राण हो मेरे जीवन के तुमसे बढ़कर कुछ और नहीं।
संकुल तुम हो गोविन्द तुल्य हर लेते हो मेरा अंधेरा॥ तुम..........

(131)

तुम किरन हो मेरे जीवन की।
तुम ठहर गई अन्तःकरण में भूलना न बुद्धि के वश की॥
कोई भी नहीं समझ सकता तुमसे सम्बन्ध हमारा क्या।
सबकी दृष्टि होती है पृथक भावना होती जैसे जिसकी॥ तुम...........
तुममें मरे फंस गये प्राण तुम लगी मुझे जैसे हो परी।
हो गया प्रेम मुझको तुमसे कहता हूँ सत्य बात मनकी॥ तुम...........
उर व्यग्र हुआ आलिंगन को पर मर्यादा का ध्यान रहा।
लड़ रहे स्वार्थ अरु मूल्यों में मुश्किल था विजय होगी किसकी॥ तुम............
अन्ततः दिया वासना दिशा तब मन में वात्सल्य भाव जगा।
संकुल तुम्हें मानस सुता बना परिपूर्ण किया इच्छा मनकी॥ तुम............

(132)

तुम जो करती हो वही सही।
मैं रोता हूँ तो रोने दो करना तुम मुझ पर दया नहीं॥
ममता के वशीभूत होकर मैं याद तुम्हारी करता हूँ।
बहु यत्न किया भूल जाने की पर चला हृदय पर जोर नहीं॥ तुम............
जब तुम चित्त पर छा जाती हो तब भावों में बह जाता है।
मैं काल तुम्हें कर देता हूँ पाता अपने को रोक नहीं॥ तुम...........
जब से तुम मानस पर छाई मैं भूल गया अपनी पीड़ा।
तुम्हें प्रेम किया पर पुत्री तुल्य बेटी इसमें मेरा दोष नहीं॥ तुम...........
वासना दमन नहीं दिशा दिया वात्सल्य युक्त मेरा तुम से नेह।
संकुल गोविन्द साक्षी है तुम से शिकवा मुझे कभी नहीं॥ तुम...........

(133)

तुम मेरे मानस में बसती।
सचमुच हो तुम मासूम बहुत तुम नहीं जानती क्या करती॥
तेरी अपनत्व भरी बातें मथ डाला था मेरे चिन्तन को।
मानस सुता बनाकर प्रेम किया बतलाओ कहाँ मेरी गलती॥ तुम............
पहली मुलाकात में पूछा था तुमने मेरे लेखन का कारण।
मैंने कहा कारण केवल दुःख सुन करके आँख गई भरती॥ तुम............
आँखें टपकी नासिका भरी समझाया मुझे मातृ जैसे।
उस पल विभोर हो गया हृदय तब से तुम हृदय में रहती॥ तुम............
मैंने कहा मानू सुता तुम्हें तुमने कहा यह सौभाग्य मेरा।
संकुल यूँ बना तुमसे रिश्ता मृत्यु भी तोड़ नहीं सकती॥ तुम...........

(134)

ओ अबोध चिर मीत हमारे।
दुनिया के सारे रिश्तों में लगे मुझे तुम अतिशय न्यारे॥
सत्य के तुम अतिशय समीप हो जाह्नवी जैसा हृदय तुम्हारा।
तुम्हें गोद ले भूल गया मैं अपने जीवन के दुःख सारे॥ ओ............
बनते और बिगड़ते रहते दुनिया के ये रिश्ते नाते।
साथ तुम्हारा कुछ पल का ही व्यर्थ कर दिया सभी सहारे॥ ओ............
अब तक समझ न कोई पाया खोज रहा मैं क्या जीवन में।
तुमने सहज मुझे वह दे दिय गद्‌गद हृदय कैसे संभारे॥ ओ............
संकुल क्या दूँ पास नहीं कुछ उम्र मेरी तुमको लग जाये।
महका दो जग निज सुगंध से ईश सत्य हो वचन हमारे॥ ओ............

(135)

बचा ली प्रभु ने मेरी लाज।
अंतस् की मेरी प्यास बुझा दी मिल्यो अखिल जगराज॥
असफल जब मेरे प्रयास भये हरि की शरण गयो।
किया पूर्ण कामना हमारी दीन बन्धु रघुराज॥ बचा........
अकथ अलौकिक प्रभु की गति है नहीं वाणी कह सकती।
छल अरु कपट छोड़ उन्हें भजिए जग के वे सरताज॥ बचा..........
बहुत दिनों से व्याकुल उर को आज मिला संतोष।
हुआ अटल विश्वास राम पर हृदय की लीन्हीं बांच॥ बचा.........
जगत् आश तजि राम भरोसे कर्म कीजिए प्राणी।
संकुल कृपा अवश्य प्रभु करिहैं पूर्ण करेंगे काज॥ बचा.......

(136)

रवि की प्रथम किरन जब आई।
स्वर्ण रचित परिधान पहन कर लेने लगी धरा अंगड़ाई॥
खग कुल उठकर लगे चहकने भूल गये अपने गम सारे।
मंद पवन का स्पर्श पाकर नव उमंग मन में भर आई॥ रवि..........
आम्र के पत्तों की आहट सुनकर लगी चहकने कोयल।
पी कहाँ पी कहाँ कहा पपीहा जाने किसकी याद सताई॥ रवि...........
टूटी तन्द्रा भी मयूर की उठकर लगा नृत्य को करने।
पाटल ने भी कोष खोल दिये भ्रमरों की आँखें ललचाई॥ रवि..........
खेत सजे पीली सरसों से लगी महकने भी अमराई।
संकुल अब प्रियतम आ जाओ विरह वेदना सहि न जाई॥ रवि..........

(137)

तुम से फैला जग में प्रकाश।
एक किरन तुम्हारी हृदय में मेरे भी तो करती निवास॥
उपकार तुम्हारा धरती पर तुम सृजनहार जग पालक हो।
संसार का तम हर लेते हो नित जीवन का करते विकास॥ तुम..........
जलते हो पर जीवन रहस्य हर किरन तुम्हारी कहती है।
धरती के सारे जीवों की तुम पर केवल है टिकी आश॥ तुम..........
तुम सूत्रधार हो सृष्टि के भगवान भास्कर तुम्हें नमन।
वह शक्ति हमें दो जगपालक मन कभी न हो मेरा निराश॥ तुम..........
हे अंधकार हरने वोले मेरे मन में आलोक भरो।
संकुल को मिल जाये मंजिल जिसकी वह करता है तलाश॥ तुम...........

(138)

ऋतु वसंत तुम बिन दुःखदाई।
वादा करके गये थे मुझसे आ जाओ अब मेरे कन्हाई॥
सजी हुई फूलों से धरती मन को न मेरे छू पाती।
तुम बिन अग्नि बढ़ा रही मनकी शीतल मंद सुरभि पुरवाई॥ ऋतु..........
कल-कल करती बहती सरिता लगता जैसे पिया-पिया कहती।
खग कुल चहक रहा है सारा तुम बिन मैं रहा अश्रु बहाई॥ ऋतु..........
नव उमंग उल्लास लिये उर गौरैया जब नीड़ में जाती।
चूं-चूं बच्चे दाना चुगते तुम समझो क्या पीर पराई॥ ऋतु.........
तुम तो पूर्ण स्वयं अपने में नहीं जरूरत तुम को मेरी।
संकुल तो अपूर्ण है तुम बिन लो अपने में मुझे समाई॥ ऋतु..........

(139)

विरह की पीड़ा अकथनीय है।
हृदय की गति को शब्द बद्ध करे हुआ न दुनिया में कोई कवि है॥
देह का भान नहीं रहता है प्रियतम में जब चित्त खो जाये।
वाणी जब स्थिर हो जाये वह जीवन पल अतुलनीय है॥ विरह.........
शब्द रूप स्पर्श गन्ध से नहीं कभी भर सकती रिक्तता।
हृदय-हृदय से जब मिल जाये, तब जीवन परिपूर्णनीय है॥ विरह.........
केवल प्रेम छोड़ कर जग में जो भी है सब कुछ नश्वर है।
प्रेम से सिर्फ प्रेम को खोजे वह जीवन ही वंदनीय है॥ विरह.........
दिशा का यद्यपि भ्रम होता है पर रवि किरनों में परछाई।
संकुल इसे हृदय में रखें प्रेम वही सम्मानीय है॥ विरह......

(140)

तुम रवि हो मैं हूँ एक किरन।
है इंतजार मुझे उस दिन का होगा तुमसे जब मेरा मिलन॥
तुम सा उदार कोई और नहीं दीनों पर करते दाया हो।
मेरे भी अब भवताप हरो गोविन्द पड़ा हूँ तेरे चरन॥ तुम..........
हो जाता उसका जन्म सफल जो करता याद तुम्हारी है।
तन के मिट जाते सभी दोष उर में होती है नहीं जलन॥ तुम..........
मैं अंश तुम्हारा होकर भी अब तक तुमको न जान सका।
अपराध क्षमा मेरे करना आया हूँ अब मैं तेरी शरन॥ तुम..........
गोविन्द तुम्हारे ही बल पर करता हूँ मैं सब जगत् काज।
संकुल पर कृपा तुम्हारी है स्वीकार करो मेरा अभिनन्दन॥ तुम..........

(141)

प्रियतम को सद्बुद्धि आये।
बना लिया जो मन से रिश्ता प्रभु जग में पावन हो जाये॥
जब वह मेरा हृदय दुखाती आँखों में आँसू आ जाते।
ज्ञान मेरा सीमित हो जाता प्रभु अब मुझे प्रकाश दिखाये॥ प्रियतम......
उसकी सुन्दर वाणी सुनकर बाँध लिया खुद को बंधन में।
दया करें प्रभु मुझ पर इतनी यह बंधन पावन हो जाये॥ प्रियतम......
हार कर नाथ शरण में आया छमा करें अपराध हमारे।
समझ सके वह सत्य बात को भाव हृदय में प्रभु उपजाये॥ प्रियतम.......
कोशिश कर निकाल न पाया ठहर गई वह मन के अन्दर।
संकुल आर्त्त मांगता प्रभु से जन्म सफल उसका हो जाये॥ प्रियतम......

(142)

आज दुखे फिर घाव हमारे।
देख तुम्हारी सुन्दर मूरत भूल गया था दुःख मैं सारे॥
याद तुम्हारी जब मुझे आती नयनों से बहता है पानी।
चिता तुल्य उर जलने लगता मुश्किल बहुत धैर्य को धारे॥ आज..........
तुमको नहीं जरूरत मेरी यद्यपि मैं इसे जान रहा हूँ।
पर मैं विवश भूल नहीं पाता मनमोहन पद कमल तुम्हारे॥ आज.........
एक रोज तो तुम समझोगे मैंने तुमसे नेह किया है।
जन्म सफल उस दिन मेरा होगा सब दुःख होंगे वारे न्यारे॥ आज..........
मैं अज्ञानी घबराहट में अक्सर तुम्हें कोसने लगता।
कृष्ण दया संकुल पर करिये अपना हस्त शीश पर धारे॥ आज.........

(143)

सुनो विनती मेरी चित्त चोर।
एक बार उर से लग जाओ जग बन्धन को तोर॥
तुम में उलझे प्राण हमारे देह का होश नहीं।
प्राण न निकसत हैं यहि कारण ध्यान तुम्हारी ओर॥ सुनो.........
जन्म-जन्म के मीत हमारे तुम आराध्य गोपाल।
अगर भूल भी हुई है मुझसे क्षमा खता करें मोर॥ सुनो........
देखि तुम्हारी मोहनी सूरत अपनी सुध न रही।
आंचल का अब छाँव दीजिए निशा घिरी है घोर॥ सुनो........
संकुल तुमसे प्रेम मगर आदर्श है तुमसे प्यारा।
संकुल दोनों के संयोग का हरि ला दो अब भोर॥ सुनो........

(144)

अक्षुण्ण कर दें प्रभु मेरा प्रेम।
अनुराग बढ़े नित चरणों में टूटे न मेरा कभी नेम॥
वह शक्ति हमें दो दीनबन्धु पीछे न कदम मेरा आये।
माया न बने बंधन मेरा वहन करना प्रभु योगक्षेम॥ अक्षुण्ण.....
मेरे हृदय में बसी रहे जो सदा चाहती खुशी मेरी।
उसके न पास कभी दुःख आये हरि हर लेना सब उसके गम॥ अक्षुण्ण.......
हर चाह हुई उसकी पूरी जिसने प्रभु से अनुराग किया।
गोविन्द समर्पित तुम्हें जीवन दे दें प्रभु मुझको सिर्फ प्रेम॥ अक्षुण्ण.......
गोविन्द तुम्हारी कृपा से हर इच्छा मेरी पूर्ण हुई।
आखिरी चाह संकुल की है प्रभु पूर्ण करें इसको सप्रेम॥ अक्षुण्ण......

(145)

दूर न अब चरणों से कीजे।
दे दो जगह मुझे चरणों में अपनी सेवा में ले लीजे॥
मैं अल्पज्ञ आज तक अपना हित अनहित ही जान न पाया।
जैसे हो कल्याण हमारा देवि दया कर वैसा कीजे॥ दूर..........
चाह मिट गयी सब दुनिया की जिस दिन मेंने तुम्हें निहारा।
तुम्हें देखने की वांछा है, प्यास मिटा अंतस् की दीजे॥ दूर............
तुम्हें देख कर मेरे मन में कितने चित्र बने अरु बिगड़े।
चित्रों में जो सबसे प्यारा क्या है अब उसको सुन लीजे॥ दूर............
मेरे लिए तुम नहीं मानवी लगते हो गोविन्द सरीखे।
संकुल क्षमा करें मेरे अवगुण अवसर सेवा का अब दीजे॥ दूर............

(146)

नहिं भूलत तेरी मोहनी सूरत।
बाल सुलभ तेरी किलकारी मन से नहीं एक पल बिसरत॥
हृदय मचलने मेरा लगता जब आती है याद तुम्हारी।
प्यास मिटत नहिंन अंखियन की ऐसी भव्य तुम्हारी मूरत॥ नहिं...........
जब सुनता हूँ तेरी वाणी मेरा मन मुझसे खो जाता।
प्रिय मुझे मत यूँ तड़पाओ तेरे नेह की मुझे जरूरत॥ नहिं..........
तेरे नेह ने मेरे भाव को सच कहता हूँ पवित्र बनाया।
अगर खोल पाया न बंधन नहीं गिरूँगा यह है निश्चित॥ नहिं...........
तेरे हृदय में मेरे लिए क्या नहीं चाह है थाह लगाना।
बस विश्वास यही संकुल को सत्य पर जमी कभी न परत॥ नहिं...........

(147)

रोशनी तुम मेरे जीवन की।
प्रेम किया है मैंने तुमसे कहता निज मन की॥
तुम्हें देखकर मेरे मन में उमड़े कई विचार।
उर से तुम्हें लगाऊँ कैसे चेतना भी बहकी॥ रोशनी....
देह आकर्षण के ज्वाला में लगी सुलवाने गात।
कृपा कृष्ण की दिशा दे पाया मैंने वासना की॥ रोशनी....
सोचत-सोचत थका मेरा मन बुद्धि विकल भई।
कैसे तुम्हें निकालू दिल से रहा न मेरे बसकी॥ रोशनी....
असमंजस की इस स्थिति में हृदय में किरन जगी।
बेटी तुल्य प्यार किया संकुल जनत प्रभु जनकी॥ रोशनी....

(148)

तुम्हारा जीवन पर उपकार।
मुक्त न मैं तुमसे हो सकता कर लिया सोच विचार॥
जब से तुम जीवन में आये बदल दिया दृष्टिकोण।
अंधकार में एक किरन सी तुम जीवन की सार॥ तुम्हारा...
जीवन की रिक्तता भर गयी पाकर तेरा नेह।
जग के सारे रिश्ते तुममें मन से लिया निहार॥ तुम्हारा....
तुममें खोकर भूल गया मैं जीवन के संताप।
मेरे लिए तुम वंदनीय हो प्राण के हो आधार॥ तुम्हारा....
समय भी तोड़ नहीं सकता है तुमसे मेरा रिश्ता।
संकुल मैं ना रहूँगा तब भी महकेगा संसार॥ तुम्हारा...

(149)

तुम्हारी चरन धूल चंदन।
जाने कब से भटक रहा था करने को दर्शन॥
दिया अधिकार चरन छूने का सुन मन मुदित भयो।
उमड़ पड़ी श्रद्धा हृदय में स्वीकार करो नमन॥ तुम्हारी....
जब से तुम मानस पर छाई मथ डाला चिंतन।
वाणी तेरी हर लेती है जीवन का क्रंदन॥ तुम्हारी...
कभी भूलती नहीं तुम्हारी मन भावन सूरत।
मेरे लिए तुम वंदनीय हो ज्यों देवकीनन्दन॥ तुम्हारी...
बहुत दिनों के बाद मिला है हृदय को संतोष।
संकुल मुक्त नहीं हो सकता तुमसे कभी किरन॥ तुम्हारी...

(150)

दिया मेरे प्यार का जो उपहार।
बना दिया कुछ पल जड़ मुझको लगी जिन्दगी भार॥
खोज हमारी रही अधूरी सुन्दर तन में मन की।
आँखों नहीं देख सकती हैं हृदय का शृंगार॥ दिया.....
मैंने तुमसे प्रेम किया पर माना मानस पुत्री।
नहीं तोड़ूगा इसे जन्म भर आत्मा की झंकार॥ दिया.....
देकर वचन पलट जाना यह तेरे लिए सही है।
पर मेरे लिए असहनीय है करती है जो वार॥ दिया.....
भूल हुई पर पछताऊँगा कभी नहीं हो सकता।
संकुल किरन कृष्ण सम तुम हो मेरे जीवन का सार॥ दिया.........

(151)

तुम सदा मेरे लिए वंदनीय।
जो रिश्ता बन जाता मन से वह हो जाता है पूज्यनीय॥
भाव एवं संवेग से चलती है मानव जीवन की यह गाड़ी।
पर जो हृदय को छू जाये वह होता न परिवर्तनीय॥ तुम.........
ज्यों बालमीक के लिए सिया ऐसे ही हो तुम मेरे लिए।
तम में बन करके एक किरन दिखला देती जो गोपनीय॥ तुम............
सुख दुःख की चिन्ता से मुक्ति तेरे स्नेह से मैं पाया।
अब कुछ भी चाह नहीं बाकी कुछ शेष नहीं है अकथनीय॥ तुम............
यद्यपि कुछ प्रश्न शेष मन में फिर भी तस्वीर दिखाती है।
संकुल कृतज्ञ सदा रहेगा तुम हो मेरे लिए सम्मानीय॥ तुम..........

(152)

तुम सुनती नहीं व्यथा हमारी।
मोह लिया तुमने मन मेरा अब कहती अपनी लाचारी॥
मेरे हृदय में ममता जागी तेरी सुन्दर बातें सुनकर।
भुला नहीं मैं तुमको पाता लगा शक्ति दी अपनी सारी॥ तुम............
तम से युक्त मेरे जीवन को तुमने थी रोशनी दिखाई।
मेरी बात को सुने बिना ही अब तुम न कहना कभी सारी॥ तुम............
बना लिया जो तुम से रिश्ता वक्त भी इसे तोड़ नहीं सकता।
साध्य मूल्य तुम हो जीवन की प्राण से भी हो ज्यादा प्यारी॥ तुम............
झंझावतों में फंस करके जब होता मेरा मन व्याकुल।
संकुल तब मानस में मेरे बन जाती तस्वीर तुम्हारी॥ तुम.........

(153)

तुम जो कहती वह बात सही।
तेरी याद में आँसू बह जाते मैं पाता इनको रोक नहीं॥
जीवन की मेरी बड़ी बात तुमने मेरा सम्मान किया।
जो नहीं कहा कोई आज तलक तुमने पावन वह बात कही॥ तुम............
मेरा तुम पर अधिकार है क्या जो भाषण देने लगता हूँ।
तुम सुन्दर ही नहीं विदुषी हो तुम सा न मिलेगा कोई मही॥ तुम............
मेरे जीवन पर उपकार तेरा मैं भूल न सकता इसे कभी।
तुम मेरे लिए अलौकिक हो तुम सा प्रिय मुझको और नहीं॥ तुम............
ममता के वशीभूत होकर मैं याद तुम्हारी करता हूँ।
संकुल को अब अवलम्बन दो आग्रह हमारी देवि यही॥ तुम...........

(154)

तुम से सुन्दर तस्वीर तेरी।
तम से आच्छादित मानस में जिसने मेरे आलोक भरी॥
यद्यपि यह बोल नहीं सकती पर सदा एक रस रहती है।
सुख-दुःख तज सत् पर चलने की इसने मन में प्रेरणा भरी॥ तुम............
तेरी सुन्दरता से बढ़कर मुझको यह लगती प्यारी है।
तुम मुझे डांट भी देती हो पर यह कहती है सदा खरी॥ तुम...........
हो जाता जब जग से निराश तन मन मेरा थक जाता है।
तब चित्र तुम्हारा लख करके हो जाती है जिन्दगी हरी॥ तुम...........
जब भी मन दुखने लगता है तस्वीर से बातें करता हूँ।
संकुल तुम नहीं मानवी हो सच कहता हूँ मेरे लिए परी॥ तुम...........

(155)

तुम्हें भूल मैं कैसे जाऊँ।
जो छवि बस जाये अंतस् में कैसे उससे ध्यान हटाऊँ॥
बात करो या मौन रहो तुम लगता पावन रूप तुम्हारा।
तुम्हे देख यूँ मन उमगाता धरती से न पैर लगाऊँ॥ तुम्हें.........
तेरे मन में मेरे लिए क्या नहीं मुझे है इसे जानना।
पर मैं बंधा हुआ शब्द से कैसे अपना पैर हटाऊँ॥ तुम्हें........
मेरे मन को मोह लिया है ऐसी भव्य तुम्हारी सूरत।
जब मुस्काती तम छंट जाता जी में आता मन में गाऊँ॥ तुम्हें.........
तुम निर्मम चाहे जो जाओ लेकिन मैंने नेह किया है।
यद्यपि भूल हुई है संकुल पर ऐसी कि न पछताऊँ॥ तुम्हें.........

(156)

बनकर एक किरन तुम आई।
जीवन का मेरा छंटा कुहासा मंजिल पड़ने लगी दिखाई॥
भारत की ज्यों मूर्तिकला हो ऐसी सुन्दर गात तुम्हारी।
अंतरिक्ष में जैसे चन्दा सुघड़ नासिका पड़ी दिखाई॥ बनकर......
तुम मनोज्ञ इतनी लगी पावन भूल गया अपनी कड़ुवाहट।
तेरी मुस्कराहट को लखकर अपनी पीड़ा दिया गंवाई॥ बनकर.......
दिया मेरे सपनों को सम्बल लगा मुझे ज्यों कोई परी हो।
आँचल की तेरी छाया में याद मुझे नानी माँ आई॥ बनकर......
लगी मनोहर सबसे वाणी सुनकर नेत्र बन्द हो जाते।
संकुल मोह हुआ मुझे तुमसे पर समझा तुम्हें कृष्ण कन्हाई॥ बनकर........

(157)

जब-जब थक जाता मेरा मन।
तब याद तुम्हारी हृदय को सहला जाती बन करके पवन॥
दुनिया के सारे रिश्तों में तुम लगी मुझे सबसे अनिंद्य।
दिया मेरी भावना को संबल जी चाह रहा छूने को चरन॥ जब..........
बेंचा जिनके लिए जीवन को वे हृदय में नासूर बने।
इस पीड़ा को सह लेता हूँ तेरे नाम का ही करके सुमिरन॥ जब..........
दूसरों के लिए जिया जीवन अपनी न कभी परवाह करी।
पर दिया मुझे जो अपनो ने लेखनी न कर सकती वर्णन॥ जब..........
जीवन का भार जब सह न गया तब हार के आया कृष्ण शरण।
इस अंधकार में संकुल को दी भेज प्रभु ने एक किरन॥ जब..........

(158)

जगत् में तुम सा प्रिय नहीं और।
सब तजि शरण तुम्हारी आया दो चरणों में ठौर॥
विकल हृदय मन धैर्य धरत न नयन बह रही नीर।
नींद न आवत जर्जर तन भयो उठत न कर से कौर॥ जगत्........
आशा टूटी साँस न टूटत देह बन गयी भार।
मेरे हृदय का तुम जानत हो हे व्रज के सिरमौर॥ जगत्.......
हे कण-कण में बसने वाले राधा के चित्तचोर।
मेरा हृदय भी पावन कर दें करें दास पर गौर॥ जगत्......
मैंने प्रेम किया है तुमसे अवगुण चित्त न धारे।
संकुल का उद्धार कीजिए हुआ कष्ट मय दौर॥ जगत्.....

(159)

जगत् में स्वारथ का व्यवहार।
तात मातृ कोउ बन्धु भ्रात नहीं सब मतलब के यार॥
पशु से बदतर आज हो गयी है मानुष की जात।
कपट झूठ धोखा आधुनिकता उन्नति का आधार॥ जगत्......
कहकर अपनी बात पलटना आम बात हुई आज।
अपने सुख में सिमट गया है मानव का आचार॥ जगत्......
न्याय नियम अरु सत्य अहिंसा हुई व्यर्थ की बात।
भौतिक सुख का संग्रह करना है जीवन का सार॥ जगत्.......
नैतिकता की बदल गयी है सचमुच अब परिभाषा।
संकुल मगर न सत्य बिकेगा दुनिया के बाजार॥ जगत्.....

(160)

जगत् में व्यर्थ खोजना प्यार।
कोई नहीं समझ सकता है आत्मा की पुकार॥
शब्द रूप स्पर्श गंध रस खोज रहे सब प्राणी।
तन के सुख का ही दुनिया में देखा है व्यापार॥ जगत्......
एक रंग ही है दुनिया का केवल अपना स्वार्थ।
प्यार शब्द मतलब की पूर्ति का बना आज हथियार॥ जगत्........
क्षिति जल पावक पाँच तत्व से बनता अधम शरीर।
इनसे इनका मिलन प्यार नहीं है सृष्टि का धार॥ जगत्......
तन की कमी पूर्ति करने में उलझ गया है जीवन।
प्यासा हृदय तपड़ता रह गया मिला न कोई यार॥ जगत्.......
दुनिया में न कोई मिलेगा जो हो प्यार के काबिल।
संकुल जीवन का निष्कर्ष है शास्त्रों का है सार॥ जगत्.......

(161)

आज मन हो गया बहुत उदास।
अब तक मिला न कोई जग में मिटा दे मेरी प्यास॥
नेत्रों के सौन्दर्य में फंस कर रोया मैं कई बार।
प्रेम का उत्तर दिया न कोई सबने किया निराश॥ आज.......
एक बाला को मानकर बेटी किया हृदय से प्यार।
दिया चोट जो उसने उर पर जीवन बन गया लाश॥ आज.........
एक रंग ही दिखा दुनिया का केवल अपना स्वार्थ।
सच कहते हैं संत शास्त्र मुनि व्यर्थ जगत् से आश॥ आज.........
दिया दिशा वासना का मैंने दमन नहीं कर पाया।
संकुल हरि रखना सुखी उसको बना लो मुझको दास॥ आज.........

(162)

प्रीति में होती हार न जीत।
दुनिया का अपमान भी सहकर लिखता रहूँगा गीत॥
रोम-रोम में मेरे बसी हो पृथक नहीं हो सकती।
प्रीति में ख़ुद को खो देने की चलती आई रीति॥ प्रीति.......
हृदय दुखाओ चाहे कितना तुम्हें नहीं कोसूँगा।
रहो सदा सुखी इसी चाह में जीवन है अर्पित॥ प्रीति......
नहीं शिकायत करूँगा तुमसे कितना भी तड़पाओ।
कृष्ण तुल्य माना है तुमको सच कहता हूँ मीत॥ प्रीति......
मानस सुता किरन रखूँगा तुम्हें याद जीवन भर।
संकुल प्रीति किया मैं तुमसे पर छोड़ी न नीति॥ प्रीति......

(163)

तुम्हीं हो सच्चे मेरे मीत।
बस करके मेरे मानस में लिखवाते हो गीत॥
दुनिया के रिश्ते नाते की होती है एक सीमा।
तुम असीम को जो चाहे पाना सीखे करना प्रीति॥ तुम्हीं.......
देह का भान नहीं रह जाता जब तुम चित्त में आती।
झर-झर आँसू नेत्र से बहते भव की मिटती भीति॥ तुम्हीं.......
जग के सारे रिश्ते नाते से तुम सबसे ऊपर।
जीवन के मेरे केन्द्र बिन्दु हो मुझको हुआ प्रतीति॥ तुम्हीं.......
तुममें खोकर मैंने पाया जीवन का उद्देश्य।
संकुल नेह तुम्हारा कर दिया जीवन मेरा पुनीत॥ तुम्हीं......

(164)

तुम से न शिकायत हो सकती।
जीवन के हो आधार मेरे मेरी हर साँसों में रहती॥
संसार में कोई तत्व नहीं जो दे दे हृदय को राहत।
तुम मेरे लिए अलौकिक हो गंगा जैसी उर में बहती॥ तुम..........
जब भक्ति हृदय में आ जाये मूरत में प्रभु दिख जाते हैं।
तुम क्या हो नही जानना है मुझको तो देवी सी लगती॥ तुम..........
धीरे-धीरे मेरे मानस पर तुम बन करके बादल छाई।
हो गये चित्र सारे धूमिल अब केवल तुम मनमें रहती॥ तुम..........
तेरी याद में रोया कई बार पर तुम्हें कृष्ण तुल्य माना है।
संकुल के लिए हो वंदनीय कर देना क्षमा मेरी गलती॥ तुम..........

(165)

चाहे तुम जितना तड़पाओ।
प्यार में सौदा हुआ कभी न दूर रहो या पास में आओ॥
मैंने तुमसे प्यार किया है पर केवल बौद्धिक सुख चाहा।
साध्य मेरे हो तुम जीवन की अब तो पास मेरे आ जाओ॥ चाहे..........
आगे बढ़कर पीछे मुड़ना मैंने कभी न सीखा देवी।
मेरी वांछा यदि पवित्र है तो तुम भी अब पर्दा हटाओ॥ चाहे.........
तेरे ओप की शोभा लखकर प्रमुदित मन मेरा हो जाता।
मेरे लिए तो तुम देवी हो इस प्रकार से मत शर्माओ॥ चाहे.........
नहीं जानता विगत तुम्हारा पर तुममें निश्चित मन सुन्दर।
अब संकुल पर कृपा कीजिए वाणी अपनी मधुर सुनाओ॥ चाहे.........

(166)

लगती तुम प्राणों से प्यारी।
जब-जब मन होता है व्याकुल कर लेता हूँ सुरत तुम्हारी॥
तेरी सुन्दरता को लखकर मेरा मन मुझसे खो जाता।
भूल स्वयं को उस पल जाता दिखती ब्रह्म सृष्टि में न्यारी॥ लगती........
बाल सुलभ सी तेरी अदायें आह्लादित मेरा उर करती।
तेरी वाणी के मिठास में जाती सिमट चेतना सारी॥ लगती......
बसी हृदय में तेरी मूरत निकल नहीं एक पल भी पाती।
दिखी नहीं अब तक दुनिया में तुम जैसी कोई सुकुमारी॥ लगती........
देख तुम्हारी मोहनी मूरत भूल गया अपने दुःख सारे।
करें कृपा संकुल पर देवी बार-बार है विनय हमारी॥ लगती......

(167)

प्राणों से प्रिय मेरे प्रियतम।
स्मृति तुम्हारी दग्ध हृदय की हलचल को कर देती कम॥
तुममें उलझे जिस दिन से प्राण नव आशा का संचार हुआ।
मिल गया विचारों को संबल धीरे-धीरे लगा छटने तम॥ प्राणों.........
आभार तुम्हारा व्यक्त करूं नहीं पास हमारे ऐसे शब्द।
तुम वंदनीय हो मेरे लिए आराध्य मेरे हो गोविन्द सम॥ प्राणों.........
उपकार हमारे जीवन पर धरती पर जैसे ऋतुरानी।
भावों में बहती रहती हो सुरसरि जैसी मुझमें हरदम॥ प्राणों.........
तेरे मोह में आँसू बहुत बहे छंट गयी कलुषता पर मनकी।
संकुल को दिया जो तुम वैभव उस पर ही तो चल रही कलम॥ प्राणों..........

(168)

मेरे जीवन के पतवार हो तुम।
स्मृति तुम्हारी कर देती मेरे जख्मों की पीड़ा कम॥
उपकार तुम्हारा जीते जी मैं कभी भूल नहीं पाऊँगा।
होता न सहारा यदि तेरा इस भीड़ में हो जाते हम गुम॥ मेरे...........
तुम क्या हो यह तो तुम जानों मेरे लिए कृष्ण सरीखे हो।
तुमने जो दिया उसकी कीमत कभी भी न चुका सकते हैं हम॥ मेरे...........
छल छद्म स्वार्थी दुनिया में तुमने मुझको सम्मान दिया।
भगवान् स्वस्थ रखे तुमको दे दे तेरी पीड़ा मुझको गम॥ मेरे...........
मेरा मन मुझसे होकर पृथक कभी-कभी पास तेरे जाता है।
संकुल छू तेरे पग आता हो जाती हैं तब आँखें नम॥ मेरे...........

(169)

कोशिश विफल हुई मेरी सारी।
खाते पीते सोते जगते आती रहती याद तुम्हारी॥
जिस दिन से दृष्टि में आई भूल गया अपने दुःख सारे।
नहीं निकल हृदय से पाती लगी मुझे तुम इतनी न्यारी॥ कोशिश......
बनते और बिगड़ते रहते चित्र चित्त में जाने कितने।
पर जब से तुम चित्त पर छाये लुप्त हुई चेतना हमारी॥ कोशिश......
आत्मा से सम्बन्ध तुम्हारा तभी तो विकल आत्मा होती।
तुममें खो जाने को आतुर नहीं मानती बात हमारी॥ कोशिश.....
मेरे प्राण को हरने वाले अब मत यूं निष्ठुर हो जाओ।
कृष्ण तुम्हीं दो अब अवलम्बन संकुल मान रहा है हारी॥ कोशिश......

(170)

तुम पृथक न मुझसे हो सकती।
बस गई हो मेरे मानस में अब बाहर नहीं निकल सकती॥
जब प्रेम किसी से हो जाता तब अवगुण नहीं दिखता है।
वह जहर पिला दे भी हंसकर तो भी न शिकायत हो सकती॥ तुम...........
कुछ पाना प्यार न मेरे लिए केवल खुद को खो देना है।
जब अपनापन ही खत्म हुआ तब केवल तुम ही तुम दिखती॥ तुम...........
तुम सोच रही हो दुःख दोगी तो भूल तुम्हें मैं जाऊँगा।
तुम जितना मुझे रुलाती हो उतनी ज्यादा अनिंद्य लगती॥ तुम..........
जिस हृदय में वास प्रेम का हो वहाँ अन्धकार नहीं आ सकता।
संकुल वह कितना कष्ट सहे पर करता नहीं कभी गलती॥ तुम..........

(171)

आज आँख मेरी भर आयी।
निर्मोही प्रियतम ने उर का आज बहुत पीड़ा पहुँचाई॥
मेरे उर को दुःख देती हो फिर भी मुझको प्रिय लगती हो।
है अजीब मेरा पागलपन अब भी अक्ल न मुझको आई॥ आज.........
मेरे उर को बार-बार तुम करती रहती केवल घायल।
फिर भी चाह सुन्दर मन की तेरे तन से निकल न पाई॥ आज..........
तेरे सौन्दर्य में डूबा मन भावों में शुचिता भर आई।
नहीं जानता विगत तुम्हारा बस देवी सी पड़ी दिखाई॥ आज.........
करुणाकर अब शरण तुम्हारी मेरे मन को पावन कर दो।
संकुल मन को मिले सांत्वना अब ऐसा दो दृश्य दिखाई॥ आज.........

(172)

तुम इस प्रकार चित्त पर छाये।
कोशिश की बहुत भुलाने की लेकिन हम भूल नहीं पाये॥
तुमसे जो बना मन का नाता वह हर विचार पर हावी है।
कोई भी दिन न गया ऐसा जब आँख में न आँसू आये॥ तुम..........
तुम क्या हो नहीं जानता हूँ पर मेरे लिए गोविन्द तुल्य।
अब कैसे तुमको पृथक करूँ, तुम ही आ करके बतलायें॥ तुम..........
तुमको देखा तो भूल गया मैं क्या हूँ और क्या करता हूँ।
अब कृपा करें मेरे ऊपर नयनों की प्यास को मिटायें॥ तुम.........
संसार के सारे रिश्तों में तुम मेरे लिए सर्वोपरि हो।
संकुल तुम हो आत्मा मेरी इस तरह न मुझको रुलायें॥ तुम..........

(173)

तुम याद मुझे आते हरदम।
संसार के सारे रिश्तों की तस्वीर देख ली तुम में हम॥
तेरे सौन्दर्य ने मन मोहा वाणी अंतस् में समा गई।
गुण दोष का चिन्तन किये बिना हम तुमसे करने लगे प्रेम॥ तुम............
सौन्दर्य में होता सिर्फ प्रभाव जो अमिट कभी नहीं रह सकता।
जीवन में अगर नहीं शुचिता तो गहरा होता केवल गम॥ तुम...........
निश्चित है यह अज्ञान मेरा जो तेरे लिए अश्रु बहता हूँ।
लेकिन यदि ऐसा करूँ न तो घुटन से निकल जायेगा दम॥ तुम...........
अब द्वैत का बोध नहीं मुझको तुम कैसा भी व्यवहार करो।
संकुल तुम समा गई उर में अब प्रेम न मेरा होगा कम॥ तुम...........

(174)

तुमसे सुन्दर कुछ और नहीं।
जिस दिन से मैं देखा तुमको आँखें भटकी फिर नहीं कहीं॥
सुन्दरता क्या है बहुत कठिन निश्चित दूँ इसकी परिभाषा।
सुन्दर वह जो उर को छू ले भावों को दे महकाय वहीं॥ तुमसे.........
तुममें है रूप रंग भी है अंगों में समानुपात भी है।
मुख पर ऐसी शालीनता है देखी जैसी न अलग कहीं॥ तुमसे........
चक्षु अरु श्रवण नासिका कपोल हर अंगों की शोभा अपार।
एकाग्र ध्यान से जाता है मुस्कान अगर आ जाय कहीं॥ तुमसे.........
तेरी सुन्दरता को निहार शीतल हृदय हो जाता है।
संकुल तुममें मेरे प्राण फंसे मैं चाह कर पाता भाग नहीं॥ तुमसे.........

(175)

तेरे लिए हृदय है बेकरार।
एक बार सामने आ जाओ जी भर कर लू तुमको निहार॥
तुम मेरे जीवन में आकर सुध बुध ही मेरी भुला दिया।
आत्मा का लय कर दूं तुममें हर पल रहती यह धुन सवार॥ तेरे............
अब आता कोई स्वप्न नहीं कुछ भी मन को न सुहाता है।
तेरे रंग में रंग गया ऐसे मन दिखता इसको जग नहीं सार॥ तेरे............
ब्रह्माण्ड में तुम सा कुछ भी नहीं अन्दर बाहर जो एक सा हो।
तुम नहीं तो ऐसे लगता है जीवन जैसे हो गया भार॥ तेरे...........
मैं कभी भूल नहीं सकता हूँ जीवन पर जो उपकार तेरा।
संकुल अब हटा दो यह पर्दा आखिरी विनय करो स्वीकार॥ तेरे...........

(176)

तुम्हारा सदा करूँगा ध्यान।
जीवन किया है तुमने सुरभित किया मेरा उत्थान।
आतप से व्याकुल मेरे मन को आज मिला संतोष।
नहीं रक्त का तुमसे रिश्ता तुम हो मेरे प्रान॥ तुम्हारा....
तुमने मुझको दिया जो वैभव कीमत न संसार।
एक शब्द में कह सकता हूँ तुम मेरे लिए महान॥ तुम्हारा....
सत्य से बढ़कर नहीं जगत् में कोई भी है शक्ति।
तेरा नेह इस बात का द्योतक है प्रत्यक्ष प्रमान॥ तुम्हारा....
जग के सारे सम्बन्धों में तुमसे बड़ा न और।
संकुल मुक्त न तुमसे होगा देकर अपनी जान॥ तुम्हारा...

(177)

माँ जैसी है तेरी ममता।
जग में कोई सम्बन्ध नहीं कर दूँ जिससे तेरी समता॥
एहसान तुम्हारा जीते जी मैं कभी चुका नहीं पाऊँगा।
स्थिरता दी मेरे जीवन को जो आँख मिचौली था करता॥ माँ............
तुम मेरे लिए सर्वोपरि हो जीवन के सारे रिश्तों में।
जब हृदय व्यग्र हो जाता है मैं याद तुम्हारी तब करता॥ माँ.............
कृतकृत्य हुआ मेरा जीवन पाकर तेरा पावन स्नेह।
प्राणों की भी देकर आहुति तुमसे न मुक्त मैं हो सकता॥ माँ.............
सम्मान दिया मेरे भावों को मेरे हृदय में ठहर गयी।
संकुल जो मुझको बोध हुआ रहता हूँ मैं उसमें बहता॥ माँ............

(178)

मैं मुक्त न तुमसे हो सकता।
मैंने किया सोच विचार बहुत जो निर्णय है उसको कहता॥
द्वन्द्वों में उलझी हुई बुद्धि सत् का चिन्तन नहीं कर सकती।
पर इतना तो आभास हुआ जग का है काई नियन्ता॥ मैं.............
छा करके मेरे चिन्तन में मंथन विचार का कर डाला।
अन्ततः बना मन तुम जैसा जो अंधकार में था रहता॥ मैं.............
सम्मान किया मेरे भावों का विश्वास किया मेरा कायम।
सच कहता हूँ तेरे ख्यालों में मैं रहता हूँ अक्सर बहता॥ मैं.............
सौन्दर्य परम की एक किरन तुम लगी मुझे इतनी पावन।
हृदय में श्रद्धा उमड़ पड़ी बरबस चरणों में सिर झुकता॥ मैं.............
स्वाती की बनकर एक बूँद तुम आई मेरे जीवन में।
संकुल उसने दे दिया दिशा जीवन जो था अब तक बहता॥ मैं.............

(179)

जब से तुम जीवन में आये।
इस प्रकार मानस पर छाये हम अपने को देख न पाये॥
तुम क्या हो? मैं नहीं जानता पर तुम सा प्रिय और नहीं है।
तुमने मुझको बहुत दिया है शब्दों से उसे कैसे बतायें॥ जब..........
फंसी मेरी द्वन्द्वों में बुद्धि उलझ गयी जिस दिन से तुममें।
कोशिश करके हार गया मैं नहीं पास वह मेरे आये॥ जब..........
दुनिया के रिश्ते नाते से ऊपर है सम्बन्ध हमारा।
शबरी का जैसे है राम से मीरा को ज्यों गिरिधर भाये॥ जब..........
मन तो न पवित्र कर पाया प्रभु क्षमिये अपराध हमारे।
संकुल प्रेम मुक्त कर देता बस केवल उर दीप जलाये॥ जब..........

(180)

मत इतने निर्मम हो जाओ।
मैंने तुमसे प्रेम किया है इस प्रकार से मत तड़पाओ॥
याद तुम्हारी जब आती है आँखों में आँसू आ जाते।
भाव में बहकर तुम्हें पुकारता अब मुझसे यूं दूर न जाओ॥ मत..........
मोह लिया तुमने मेरा मन लगे मुझे तुम इतने सुन्दर।
हृदय लगा था तुम्हें पूजने इष्ट मेरे अब पास में आओ॥ मत..........
जीवन के सर्वोच्च मूल्य तुम प्राणों से भी ज्यादा प्यारे।
अगर भूल भी हुई हो मुझसे क्षमा करो आ गले लगाओ॥ मत..........
समा गये अन्तःकरण में हो निकल न तुम बाहर पाओगे।
संकुल दोष न देगा तुमको चाहे जैसे मुझे नचाओ॥ मत.........

(181)

भूल गया मान और अपमान।
जब से तुमको प्यार किया मैं मिट गयी निज पहिचान॥
तुम जब नहीं तो चित्र तुम्हारा ले करके बतलाता।
धीरज मन में आ जाता जब तुम में लगता ध्यान॥ भूल.........
स्यात् जरूरत तुम्हें न मेरी तभी तो भूल गये हो।
तेरे सिवा मुझे जग नहीं भाता व्यर्थ हो रहा ज्ञान॥ भूल.........
निर्णय पर न कायम रहता विचलित मन हो जाता।
बिना तुम्हारे जीवन मेरा हो गया भार समान॥ भूल.......
तुम सर्वज्ञ समझ सकते हो मेरे उर का हाल।
संकुल का संताप मिटा दो, मन अतिशय परेशान॥ भूल........

(182)

चुरा लिया तुमसे मैं तुमको।
कितना भी प्रयास करो तुम पूर्ण नहीं पाओगी दिलको॥
तोड़ न पाया कोई आज तक अगर बाँध दो प्रेम का बन्धन।
आत्मतत्त्व ईश्वर का अंश है छोड़ न सकता कभी सत्य को॥ चुरा..........
प्रेम का उद्गम प्रथम दृश्य है इसमें फेल पास का भय है।
जो इससे ऊपर उठ जाये नहीं हरा सकता कोई उसको॥ चुरा.........
यहाँ जरूरत नहीं देह की आत्मा-आत्मा में मिल जाती।
देह कहीं हो पर लगता है जैसे देख रहे हैं उनको॥ चुरा.........
मैंने तुमसे प्रेम किया है स्वार्थ आत्म उन्नयन के कारण।
संकुल तुम समझोगी जिस दिन याद करोगी रोकर मुझको॥ चुरा..........

(183)

लगी जेठ की तुम पुरवाई।
कुछ पल के लिए सही पर उर को शीतलता पहुँचाई॥
नहीं जानता विगत तुम्हारा मगर बसी मन में है सूरत।
जब-जब उर घायल होता है तब-तब याद तुम्हारी आई॥ लगी.........
आतप से व्याकुल मेरे मन को दिया धैर्य का तुमने संबल।
तेरे शब्द के अर्थ में डूबा मगर न नाप सका गहराई॥ लगी.........
सदियों का भी घोर तिमिर हो एक किरन पल में हर लेती।
लक्ष्य हीन मेरे जीवन का तुमने आकर राह दिखाई॥ लगी........
नेत्र देखते दृश्य बाहरी कैसे हैं यह बुद्धि बताती।
संकुल मगर आत्मा जैसी अक्सर पड़ता वही दिखाई॥ लगी........

(184)

आज मेरे सपनों में आई।
बहुत दिनों के बाद आज फिर शीतल लगी मुझे पुरवाई॥
अपना ध्यान कभी नहीं रखते इस प्रकार तो थक जाओगे।
मेरे सिर पर हाथ रख दिया घुमा लिया मुँह बोल न पाई॥ आज.........
मैंने कहा बैठिये देवी कहो कुशल परिवार तुम्हारा।
धीरे से कहा सभी कुशल है बस मैं तुमको समझ न पाई॥ आज.........
मुझे मोह तुमसे है निश्चित पर तुम मेरी सरस्वती हो।
जीवन मेरा एक किताब है बात कोई न कभी छिपाई॥ आज.........
अच्छा अब चलती हूँ लेकिन अपना ध्यान सदा तुम रखना।
संकुल तड़प उठा उर मेरा खुली नींद आँखें छलछलाई॥ आज.........

(185)

आज रात भर नींद न आई।
करवट बदलत रैन गुजारी भोर लगी जैसे अलसाई॥
ओ निर्मोही तुम क्या जानों मेरे हृदय की जो पीड़ा।
शब्दों से वह बयां न होती नयनों से बस रहा बहाई॥ आज.........
मेरे मन को तुम उलझाया अपना सुन्दर रूप दिखाकर।
भूल गया जब मैं अपने को तब तुमने लिया हाथ छुड़ाई॥ आज..........
सुनकर मधुर तुम्हारी वाणी मेरा मन मुझसे खो जाता।
तुम सा हितू मिला न जग में सत्य कहा रहा भुजा उठाई॥ आज..........
संकुल आज भयो मन व्याकुल अब करुणाकर होऊ सहाई।
तुम तो जान रहे हो सर्वज्ञ अपनी कमी न कभी छिपाई॥ आज.........

(186)

आज स्वप्न में पड़ी दिखाई।
नींद खुल गई लगा सोचने कोशिश की पर नींद न आई॥
जग में कोई वस्तु नहीं है प्यास मिटा दे जो अंतस् की।
यद्यपि जान रहा हूँ फिर भी मैंने तुमसे प्रीति लगाई॥ आज.........
जीवन की आखिरी चाह थी वह भी मैंने कर ली पूरी।
तेरे प्यार में डूबा तो हूँ पर न नाप सका गहराई॥ आज........
तुम्हें देखकर तड़प उठा उर लेकर तेरा नाम पुकारा।
बिना कहे कुछ मिली भीड़ में नींद खुली आँखें भर आई॥ आज..........
देर सही पर मैंने जाना प्रीति साधना है जीवन की।
संकुल बिना किये तप जग में छू न सका कोई ऊँचाई॥ आज.........

(187)

प्रीति की परिणति है दुःखदाई।
जिसने प्रेम किया दुनिया में चैन की नींद उसे नहीं आई॥
दुःख से रहा मेरा याराना जब से मैंने होश संभाला।
पर यूं कभी बहे न आँसू जैसे रहा हूँ आज बहाई॥ प्रीति.........
तुम्हें देखकर भूल गया मैं जीवन की सारी कड़वाहट।
जब-जब व्यथित हुआ मेरा मन तब-तब याद तुम्हारी आई॥ प्रीति..........
कभी-कभी मेरा मन कहता तेरे आँचल में छुप जाऊँ।
बचपन में माँ बाप न जाना तुममें माँ भी पड़ी दिखाई॥ प्रीति.........
तुमसे मुझको नहीं शिकायत मन का ही तो तुमसे नाता।
कैसा भी व्यवार करो तुम संकुल के हो तुम्हीं कन्हाई॥ प्रीति.........

(188)

तुम्हारा करता मैं इंतजार।
चुरा लिया तुमने चित्त मेरा हो गया तुमसे प्यार॥
अंतरिक्ष में टिम-टिम करते चमक रहे चाँद सितारे।
जो समीप धरती के आता उसका बड़ा आकार॥ तुम्हारा....
उषा आती भोर भी आता रात खत्म हो जाती।
बिना तुम्हारे जीवन मेरा लगता जैसे भार॥ तुम्हारा....
यंत्रवत् तन चलता रहता देता मन नहीं साथ।
तुम सा जग में नहीं दूसरा तुम जीवन के सार॥ तुम्हारा....
है मुझको विश्वास एक दिन निश्चित तुम आओगे।
होगा जन्म सफल संकुल का श्यामल बदन निहार॥ तुम्हारा....

(189)

निकल नहीं हृदय से पाते।
कोशिश करके हार गया मैं दूर नहीं पल भर भी जाते॥
जब याद तुम्हारी आती है तब भावुकता बढ़ जाती है।
हृदय में कचोट होने लगती नेत्रों में आँसू आ जाते॥ निकल.......
बहुत तुम्हारे अवगुण खोजे जिससे तुम चित्त से चले जाओ।
तुमसे क्या सम्बन्ध हमारा कौन देखता मन के नाते॥ निकल.......
तुम्हें भूलकर मुश्किल होगा इस जीवन का भार उठाना।
तुमसा प्रिय न और हो सकता तुम रहते हो मुझे रुलाते॥ निकल........
जिस पर कृपा कृष्ण की होती उसके ही बहते हैं आँसू।
सदा कृतज्ञ रहेगा संकुल तुममें ही अब कृष्ण दिखाते॥ निकल.......

(190)

तुम प्राणों से भी हो प्यारे।
तुम जहाँ रहो खुशहाल रहो हम तुमसे सब प्रकार हारे॥
आकाश में ज्यों विद्युत सदृश तुम मेरे जीवन में आये।
कुछ पल ही सही मगर मन के दुःख मिटा दिया तुमने सारे॥ तुम............
स्मृति तुम्हारी जब आती लगता जैसे हो पास खड़ी।
कानों में गूँज उठी वाणी दुःख में मन में धीरज धारे॥ तुम...........
बिन जान और पहिचान के भी तुम उतर गये मेरे अंतस् में।
दुनिया के सारे रिश्तों में तुम लगे मुझे सबसे न्यारे॥ तुम..........
तुमसे सम्बन्ध अलौकिक है, है हृदय में तेरा निवास।
सत्यनिष्ठ अगर संकुल का प्रेम गोविन्द जगत् से निस्तारे॥ तुम..........

(191)

देखा न कोई तुम सा सुन्दर।
संसार से मुक्त हो जाता हूँ तुम पर जाती जब नजर ठहर॥
घुंघराले काले केशों को छूकर इठलाती हुई पवन।
जब हमको आकर छूती है तन मन की जाती पीड़ा हर॥ देखा..........
उन्नत ललाट भृकुटि विशाल काली आँखों की गहराई।
अस्तित्व पृथक हो जाता है पाटल पंखुड़ी सम देख अधर॥ देखा..........
नासिका मनोहर विवर सुघड़ छवि श्रवणों की अतिशय न्यारी।
कोमल कपोल की अरुणाई हृदय में देती उषा भर॥ देखा........
पतली ग्रीवा उरसिज विशाल नाभि कटि से लेकर नख शिख तक।
हर अंग तेरा संकुल बेजोड़ तुम सा न कोई इस भूतल पर॥ देखा..........

(192)

मुस्कान तेरी मेरा दर्शन।
कोशिश है इसको पढ़ने की जिसमें उलझा हे मेरा मन॥
जिस दिन देखा तुमको उदास लगा था हृदय फट जायेगा।
तुमको सदा सुखी देखने का उद्देश्य गया था उस दिन बन॥ मुस्कान.......
मेरे आराध्य की एक किरन तुममें मुझको दिखलाती है।
इसलिए मान अपमान छोड़ जी चाह रहा छूने को चरन॥ मुस्कान......
अंदर बाहर की सुन्दरता दोनों का तुममें दिखा योग।
शालीनता का ऐसा सौन्दर्य देखा न कभी था मेरा मन॥ मुस्कान......
हर अंग तेरे अनुपम बेजोड़ आकाश में ज्यों लगते तारे।
संकुल मन में आकृति बनी लगती हो जैसे वृन्दावन॥ मुस्कान.....

(193)

तुम्हारे सबसे सुन्दर बोल।
श्रवण द्वार से अन्दर आकर हिय पट देते खोल॥
सौन्दर्य में केवल प्रभाव है अमिट नहीं रह सकता।
मोल न हो सकता वाणी का तुम बोलती हो तौल॥ तुम्हारे......
शिशु सम चेहरे पर सरलता अति पावन तेरा रूप।
मिटा देता मन की मलिनता देता शाँत रस घोल॥ तुम्हारे.....
नयन व्यग्र दर्शन करने को श्रवण सुना चाहें बैन।
बस एक बार सामने आकर सुन लो मेरी कौल॥ तुम्हारे.....
तुम तन से ही नहीं हृदय से भी हो पावन सुन्दर।
संकुल तुमने दिया मुझे जो मेरे लिए अनमोल॥ तुम्हारे....

(194)

तुमसे प्रिय मुझको नहीं प्रान।
तुम्हें देख कर सुख दुःख भूल गया मेरी दृष्टि में तुम महान॥
तन से बढ़कर मुझको लगती तेरे हृदय की सुन्दरता।
चिन्तन के मेरे केन्द्र बिन्दु तुम सा न दिखा कुछ भी जहान॥ तुमसे.........
खद्योत चमक सा तन सौन्दर्य पल-पल में रूप बदलता है।
लेकिन यदि चित्त भी सुन्दर हो तो नहीं कभी भूलेगा जन॥ तुमसे.........
तुम सा सुन्दर ना मेरा मन इसमें कालिख के हैं निशान।
लेकिन प्रण यही हमारा है प्रान जाय मगर रहे स्वाभिमान॥ तुमसे.........
ऋण नहीं चुका सकता तेरा प्राणों की भी आहुति देकर।
संकुल ऋणी सदा तुम्हारा है तुमसे मिला मुझको आत्मज्ञान॥ तुमसे.........

(195)

मिला तुमसे मुझको यह ज्ञान।
विचलित न हों जग हलचल से रहे लक्ष्य का ध्यान॥
तुम सुन्दर ही नहीं लगी थी मुझको अति मासूम।
मोह के वशीभूत हुई बुद्धि तुममें फंस गये प्रान॥ मिला.......
कई दिनों तक चला बुद्धि में देवासुर संग्राम।
विजय अन्ततः साध्य मूल्य की तुम लगी प्रान समान॥ मिला........
जो असीम है निश्चित हो सकती नहीं उसकी सीमा।
तुमसे प्रेम किया जिस दिन से मिटी मेरी पहचान॥ मिला.......
तुम अदृश्य रूप में रहती सदा हमारे साथ।
संकुल मेरे प्रेम का जग में गोविन्द रखना मान॥ मिला......

(196)

वर्षा की आई ज्यों फुहार।
वैसे तुम आकर जीवन में जीवन को दिया मेरे संवार॥
जीवन पर मेरे उपकार तेरा मैं कभी चुका नहीं पाऊँगा।
जीने का दिया तुमने मकसद अब सोचनीय नहीं जीत हार॥ वर्षा...........
तुम लगे मुझे इतने सुन्दर मैं भूल गया अपनी दुनिया।
मैं खेल खेलने तुमसे लगा बचपन हो गया मुझ पर सवार॥ वर्षा...........
सूने मन में भावनाओं के अंकुर अनेक अंकुरित हुए।
मरू भूमि से मेरे जीवन में आ गयी नई फिर से बहार॥ वर्षा..........
पत्थर से प्रेम यदि हो जाये तो वह सजीव हो जाता है।
संकुल मैं करता तुमसे प्रेम तुम ही हो मेरे प्राणाधार॥ वर्षा..........

(197)

तुम्हारी कभी न दूँगा दोष।
चाहे जो व्यवहार करो तुम करूँगा कभी न रोष॥
आ करके मेरे जीवन में दिया बदल दृष्टिकोण।
दे दिया मुझे प्रेम का वैभव रिक्त न हो जो कोश॥ तुम्हारा....
धो गई मन की मेरी मलिनता इतने अश्रु बहे।
ढीले कर दिये कर्म के बंधन देकर मूक उपदेश॥ तुम्हारा....
जीवन की यात्रा में रिश्त केवल एक ठहराव।
मिला न कोई तुम सा सुन्दर निर्मल मन निर्दोष॥ तुम्हारा....
मेरे मानस पर तुम बरसे बन आषाढ़ का मेह।
संकुल सराबोर तन मन है कैसे रहेगा होश॥ तुम्हारा....

(198)

मेरे जीवन की तुम ऋतुरानी।
महत्व तुम्हारा मेरे लिए धरती पर है जैसे पानी॥
कल-कल कर बहते भावों में तुम बार-बार आ जाती हो।
मैं तुम्हें भूल नहीं पाता हूँ अक्सर कर जाता नादानी॥ मेरे..........
जब से तुम जीवन में आयी मिल गया विचारों को सम्बल।
भावों में शुचिता की महिमा यह बात मैंने तुम से जानी॥ मेरे...........
आपाधापी के जीवन से व्याकुल मेरे अन्तःकरण को।
निश्चित तुमने स्थिरता दी कम कर दी मेरी परेशानी॥ मेरे..........
रचना के मेरे सूत्रधार गोविन्द की तुममें दिखी किरन।
संकुल के हृदय में सदा रहो त्रुटि क्षमा करो मैं अज्ञानी॥ मेरे..........

(199)

बिन हलचल के चित्र न बनता।
तुम उर में स्पंदन करते तुम सा प्रिय फिर क्या हो सकता॥
दुःख का कारण रही कामना, जिससे मुक्त नहीं हो पाया।
स्यात् इसलिए यदा-कदा मैं तुमको भी रहा गलत समझता॥ बिन..........
पाने खोने के चक्कर से जब जीवन बाहर हो जाता।
तब प्रियतम की स्मृति करके केवल आँखों से जल बहता॥ बिन..........
विरह वेदना की पीड़ा से जब हृदय जलने लगता है।
उत्पन्न होता तब प्रकाश है अंधकार फिर कहाँ ठहरता॥ बिन.........
जिसने प्रेम किया जीवन में वही मर्म जीवन का पाता।
संकुल व्यर्थ न जीवन होता राम नाम का अर्थ समझता॥ बिन.........

(200)

अब तक न तुमको पहिचाना।
स्वप्न दिखाकर तुमने मुझको अपना बना लिया दीवाना॥
मूरत कभी समझ नहीं सकती मेरे हृदय का स्पंदन।
यद्यपि जान रहा हूँ फिर भी नहीं चाहता तुम्हें भुलाना॥ अब.........
नेत्र बन्द कर तुम्हें खोजने लगता हूँ मैं मन के अन्दर।
तुम चाहे निष्ठुर हो जाओ मैंने प्राण तुल्य है माना॥ अब.........
चित्र तुम्हारी स्मृतियों का मेरे हृदय में टंगा रहेगा।
बदले दुनिया तुम भी बदलो पर बदलेगा ना परवाना॥ अब.........
अंधकार में एक किरन सी मेरे जीवन में तुम आई।
संकुल फेर लिया मुख जब से भूल गया मैं भी मुस्काना॥ अब..........

(201)

बिन बरसे फिर उड़ गये बादल।
उगी आश थी प्यास बुझेगी ऐसा भाव दिखाये बादल॥
निशा अंधेरी और हो गई सन्नाटा अतिशय गहराया।
भूल गया पथ लगा सोचने व्यर्थ जगत् में प्रीति है बादल॥ बिन...........
चमक दमक रव सुना दिखाकर नेत्रों से ओझल हुए बादल।
स्वच्छ गगन में चन्द्र भी व्याकुल लगा भटकने मानों पागल॥ बिन...........
ले करके शीतल पुरवाई उमड़ घुमड़े आये थे बादल।
तन मन मेरा सिहर उठा था नहीं पता तुम असली बादल॥ बिन...........
प्रीति की है यह रीति पुरानी दूर देख नहीं पाती बादल।
संकुल टीस उठी उर व्याकुल बहे अश्रु घंटों आज बादल॥ बिन..........

(202)

हँसोगी सुन मेरा अज्ञान।
जब तुम मुझसे बात न करती विकल हो जाते प्रान॥
प्रेम का अर्थ बिना समझे ही तुमसे नेह किया।
स्यात् इसलिए व्यग्र हृदय है विचलित हो रहा ज्ञान॥ हँसोगी......
राग-द्वेष में फँसा हुआ उर प्रेम नहीं कर सकता।
जब तक दोष दिखे प्रियतम में नहीं होगा कल्यान॥ हँसोगी......
ध्यान केन्द्रित नहीं हो सकता जब तक विषय विकार।
तुम चाहो तो हो सकता है जीवन का उत्थान॥ हँसोगी....
सच कहता हूँ इस प्रकार से तुम चित्त पर छाई।
संकुल जैसे रवि के सम्मुख कुछ ना तेज जहान॥ हँसोगी....

(203)

देना तो पड़ेगा ही उत्तर।
यह मौन तुम्हारा इस प्रकार करता विचार मेरे जर्जर॥
हृदय से करता तुम्हें प्रेम करनी द्वारा दिखलाऊँगा।
तुम कैसा भी व्यवहार करो मैं प्रेम करूँगा जीवन भर॥ देना..........
संसार में सब कुछ बिकता है केवल बिकता सिद्धान्त नहीं।
मैं कभी सोच नहीं सकता हूँ मेरे कारण झुक जाय तेरा सर॥ देना...........
प्रेम में होता है स्व प्रकाश फिर भ्रम संशय का कारण क्या।
तुम अपना कर्तव्य पूर्ण करो कभी-कभी ध्यान कर लो भी इधर॥ देना...........
मोहताज प्रेम न रिश्तों का पत्थर में प्रभु दिख जाते हैं।
संकुल यदि प्रेम मेरा सच्चा तो पिघलेगा निश्चित तेरा उर॥ देना...........

(204)

तेरा नाम लेकर गुजारा करेंगे।
करेंगे न स्वीकार कोई भी बंधन कण-कण में तुमको निहारा करेंगे॥
तुम आराध्य मेरे हो प्राणों से प्यारे मैं जीता हूँ जीवन तुम्हारे सहारे।
जहाँ भी रहो मुस्कुराती रहो तुम हम तुमसे न कोई शिकायत करेंगे॥ तेरा...
तेरी याद में आत्मा जब सुलगती तो आँखों से आँसू की बरसात होती।
हृदय भीग जाता तब संतोष आता तुम्हें अश्रु अर्पित यूँ करते रहेंगे॥ तेरा...
तुम्हारे लिए जब हृदय ए मचलता किसी द्रुम पद को गले से लगाता।
उसी तरु में तब तुम मुझे हो दिखाती उसी से अब अपनी कहानी कहेंगे॥ तेरा...
किया प्रेम तो अब न पीछे हटेंगे तम्हें अपने उर से लगाये रहेंगे।
न संकुल कभी तुम पृथक मुझसे होंगी सगुण अब नहीं भक्त निर्गुण बनेंगे॥तेरा...

(205)

अब पीछे न कदम हटेंगे।
मैंने तुमसे प्रेम किया है जीवन भर यूं करते रहेंगे॥
साध्य मूल्य हो तुम जीवन के तुमसे बढ़कर क्या हो सकता।
तुम चाहे जैसे भी रखो हर स्थित में जीते रहेंगे॥ अब.........
तुमने मुझको बहुत दिया है जाता मुझसे नहीं संभाला।
याद तुम्हारी नहीं मिटेगी जब तक तन में प्राण रहेंगे॥ अब..........
इतने गये हृदय के अन्दर जहाँ तक मेरी पैठ नहीं है।
अब तुम चाहे जितना रुलाओ नाम तेरा ही जपते रहेंगे॥ अब...........
स्वप्न दिखाकर तुमने मुझको अपना बना लिया दीवाना।
संकुल दीप प्रज्वलित हो गया अब तो ऐसे जलते रहेंगे॥ अब..........

(206)

चिंतन के केन्द्र बिन्दु हो तुम।
करके विचार हम देख लिया तुमसे न मुक्त हो सकते हम॥
आकाश में तारों का सौन्दर्य तब तक है जब तक चाँद नहीं।
तुम अगर सामने आ जाओ दुनिया को भूल जायेंगे हम॥ चिंतन........
स्वारथ की सारी दुनिया है कोई करता किसी से प्यार नहीं।
इन्द्रिय ज्ञान की सीमा है मेरी दृष्टि में तुम हो असीम॥ चिंतन........
आस्था करती पत्थर सजीव प्रेम करता है जीवन को पूर्ण।
यदि प्रेम किसी से हो जाये तो मूल्य न उसका होता कम॥ चिंतन........
तुममें मेरे फंस गये प्राण तुम लगी मुझे इतनी सुन्दर।
संकुल तुमसे मुझे बोध हुआ सुख दुःख से ऊपर सदा प्रेम॥ चिंतन........

(207)

तुम्हारा अति सुन्दर आचार।
बरबस नत मस्तक हो जाता आता उमड़ हृदय में प्यार॥
वाणी कर्मों की घनिष्टता बरबस चित्त हर लेती।
शीलयुक्त तेरे अन्तःकरण में डूबा मन कई बार॥ तुम्हारा....
जीवन के शाश्वत मूल्यों की करती तुम रखवारी।
दिया मुझे जीने का मकसद कर दिया शुद्ध विचार॥ तुम्हारा.....
तेरे सौन्दर्य के प्रभाव ने किया मेरा चित्त निर्मल।
मधुर सरस करके मेरा जीवन दिया जगत् का सार॥ तुम्हारा.....
शालीनता भद्रता की मूरत गम्भीरता का निवास।
संकुल ऐसी मादकता है कर दे जड़ बेकरार॥ तुम्हारा...

(208)

तेरी याद में जीवन जीता हूँ।
तुम पृथक नहीं होगी मुझसे विश्वास हृदय में रखता हूँ॥
तम से आच्छादित जीवन में तुम बनकर आई एक किरन।
संसार ताप को सहने की शक्ति मैं तुमसे पाता हूँ॥ तेरी.........
तुम मेरे लिए अलौकिक हो हर साँस में जपता तेरा नाम।
अपमान ग्लानि का भरा चषक तेरा ध्यान करके पी लेता हूँ॥ तेरी...........
तेरे प्रेम ने शुद्ध किया बुद्धि अब मेरे लिए तुम सीता हो।
शब्द से सम्बन्ध अर्थ का ज्यों वैसे मैं तुमसे रखता हूँ॥ तेरी..........
तुममें जिस दिन से उलझे प्राण निश्चित है आँसू बहुत बहे।
घुल गयी कलुषता संकुल की अब प्रेम का अर्थ समझता हूँ॥ तेरी...........

(209)

हृदय में है तेरा निवास।
मैं व्यर्थ खोजता तुम्हें रहा तुम तो हो मेरे सदा पास॥
अब मन होता अधीर नहीं जब घात हृदय में लगती है।
तुम करोगी निश्चित समाधान दृढ़ है मेरा तुम पर विश्वास॥ हृदय में......
अन्तरिक्ष में पूनों का मयंक जैसे तुम चिंतन पर छाई।
अब लक्ष्य यही है जीवन का तुम हो न कभी मुझसे निराश॥ हृदय..........
जीवन की जेठ दुपहरी में बन करके तुम आये बादल।
तुम हृदय में तब तक धड़कन है मेरे है अब कुछ नहीं पास॥ हृदय..........
सम्बन्ध चिरांतर है तुमसे समझा तुमको मैंने गोपाल।
संकुल को दिया जो तुमने नेह तम का कर देगा सर्वनाश॥ हृदय..........

(210)

तुम लगी मुझे इतनी सुन्दर।
नेत्रों से ओझल होते ही जाती हैं मेरी आँखें भर॥
तुम पर जाती जब दृष्टि ठहर चेतना शून्य हो जाती है।
कामना शेष एक रह जाती तुम्हें रहूँ देखता जीवन भर॥ तुम लगी...
ब्रह्माण्ड में ऐसा कुछ भी नहीं जिससे तेरी उपमा दे दूँ।
तुम अपने आप अकेली हो दरस मात्र से लेती पीड़ा हर॥ तुम लगी...
मुख की आभा से बिखर कान्ति जब चक्षु द्वार से उर आती।
तब टूट मेरी तंद्रा जाती मन में उठने लगती हैं लहर॥ तुम लगी...
तेरे सौन्दर्य में उलझा मन मुँह मोड़ न आदर्श से सकता।
संकुल इसलिए तुम्हें कान्हा समझा मैंने मन के अन्दर॥ तुम लगी...

(211)

भाव संवेग से ऊपर प्यार।
नहीं शिकायत करूँगा तुमसे करो कैसा व्यवहार॥
तुम समझो अथवा न समझो मेरे उर की पीड़ा।
पृथक शब्द से अर्थ न होगा जीत मिले या हार॥ भाव........
यद्यपि प्रथम कामना कुछ थी पर अब शेष नहीं।
रहो जहाँ तुम सदा सुखी रहो जीवन के मेरे सार॥ भाव........
दग्ध हृदय मैं भटक रहा था खोज रहा था छांव।
मृदु वचनों से सींच कर उर को कर दिया हल्का भार॥ भाव..........
इतने आँसू बहे तेरे लिए आत्मा धवल भई।
संकुल तुम में परम सौन्दर्य की ली किरन निहार॥ भाव........

(212)

मेरे हृदय में वास तुम्हारा।
तुम चाहे जैसे भी रखो तुमसे और नहीं कुछ प्यारा॥
प्राणों की भी देकर आहुति तुमसे मुक्त नहीं हो सकता।
तुमने दी है मुझे रोशनी मिट गया अंधकार अब सारा॥ मेरे...........
चक्रवात में फंसा हुआ मन कृपा तुम्हारी से हुआ बाहर।
तेरे नेह ने दिशा बता दी अब मुझसे नहीं दूर किनारा॥ मेरे............
जब-जब मन मेरा घबड़ाता तब-तब पास तुम्हारे जाता।
तुमसे ज्ञान हुआ जीवन में आंचल सबसे बड़ा सहारा॥ मेरे............
जन्म सार्थक निश्चित होगा दृढ़ तुम पर विश्वास हमारा।
संकुल प्रेम कभी न बंधन कर देता भव से छुटकारा॥ मेरे..........

(213)

इतना प्यार किया है तुमको।
टूट गये संसार के बंधन अब मैं भूल गया हूँ खुदको॥
ऐसा कुछ भी नहीं जगत् में मूल्य न जिसका आंका जाये।
मेरे लिए जो मूल्य तुम्हारा वाणी कह सकती नहीं उसको॥ इतना.........
नेत्र बंद यदि भी कर लूं तो दिखती है तस्वीर तुम्हारी।
एक पल नहीं बिसरती सूरत इतना तुम भाती हो मनको॥ इतना.........
प्यास हृदय की पूर्ण हो गयी जिस दिन मैंने तुम्हें निहारा।
अब कोई कामना नहीं है बस तुम पृथक न करना मुझको॥ इतना.........
नहीं मेरा तुमसे वह रिश्ता जो बुद्धि से परखा जाये।
संकुल ने कर दिया समर्पण अब निस्तार करो इस जनको॥ इतना.........

***

Blank Page